विक्रम संवत् 2083 ▪ श्रावण/ भाद्रपद (06) ▪ 01 अगस्त 2026 ▪ मूल्य: 23 रु.

चरैवेति

स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

इच्छाशक्ति ने ऊर्जा संकट से उभारा

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69,डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26,पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इंडोनेशिया की संसद को संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत-ऑस्ट्रेलिया CEO फोरम के दौरान ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री श्री एंथनी अल्बनीज से मुलाकात की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का न्यूजीलैंड में भारतीय समुदाय ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इंडोनेशिया में प्रेबानन मंदिर का दौरा किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्काईरूट इवेंट को देखा।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी का जम्मू एयरपोर्ट, पर भव्य स्वागत किया गया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद के मॉनसून सत्र के पहले दिन मीडिया को संबोधित किया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए ''विकसित वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम 2026'' के प्रतिभागियों से बातचीत की।

अनुक्रमणिका

वर्ष-58, अंक : 06, भोपाल, अगस्त 2026

» **संपादकीय ▪ संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ तिरंगा ऊँचा रहे हमारा

» **कवर स्टोरी ▪** 05

▪ इच्छाशक्ति ने ऊर्जा संकट से उभारा

▪ **भाजपा विधायक दल की बैठक** 07

» विकास हेतु राशि की कमी नहीं - डॉ. मोहन यादव

» यूसीसी में महिलाओं के हितों की सुरक्षा - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **समान नागरिक संहिता** 08

» म. प्र. ने रचा इतिहास - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **हाइड्रोजन ट्रेन** 09

» हाइड्रोजन ट्रेन - शानदार सफलता

» हाइड्रोजन ट्रेन - 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण सफलता

▪ **किसान समृद्धि संकल्प समेलन** 11

» कृषि और कृषक कल्याण है सर्वोच्च प्राथमिकता - डॉ.यादव

▪ **डिजिटल इंडिया** 11

» डिजिटल इंडिया से जीवन हुआ है सरल और सुगम -डॉ.यादव

▪ **नागरिक देवो भव** 12

» 'नागरिक देवो भव' भारत की गवर्नेंस का मूल मंत्र

▪ **बलराम कृषि महोत्सव** 14

» प्राकृतिक खेती अपनाऐं -डॉ. मोहन यादव

▪ **समरसता संकल्प अभियान** 15

» प्रदेश में दीपोत्सव - "समरसता संकल्प अभियान"

▪ **डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जन्म जयंती** 16

» डॉ. मुखर्जी का जीवन एकता और प्रगति के लिए समर्पित - नरेंद्र मोदी

» डॉ. मुखर्जी जी प्रेरणा के स्त्रोत हैं -नितिन नवीन

» डॉ. मुखर्जी के बताये मार्ग पर बढ़ रहे हैं - जे. पी. नड्डा

» भारत की विश्व में विशेष पहचान - डॉ. मोहन यादव

» देश आगे बढ़ रहा है - हेमंत खण्डेलवाल

» अखंडता के लिए बलिदान - शिवप्रकाश

» डॉ. मुखर्जी के विचार प्रेरणास्रोत - डॉ. महेन्द्र सिंह

▪ **कविता** 20

» झुक नहीं सकते

▪ **अंतर्राष्ट्रीय सम्मान** 23

» मोदी जी को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान मिला - डॉ. मोहन यादव

▪ **विरोध मार्च** 28

» कांग्रेस प्रायोजित अराजकता की राजनीति कर रही है - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **एक पेड़ मां के नाम** 29

» जल संरक्षण का अभियान चलाया - डॉ. मोहन यादव

» पौधारोपण एवं जल संचयन ऐतिहासिक पहल - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **मन की बात** 30

» आत्मनिर्भर भारत का संकल्प

» जल संरक्षण की सराहना - डॉ. मोहन यादव

» नवाचारों से सशक्त भारत - हेमंत खण्डेलवाल

» आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ रहा भारत-डॉ. महेंद्र सिंह

▪ **पुण्यतिथि** 36

» नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या

» विलक्षण कानूनविद लोकमान्य तिलक

▪ **शहीद दिवस** 38

» क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा

» खुदीराम बोस

▪ **जयंती** 40

» वीरांगना रानी अवंती बाई

▪ **विचार प्रवाह** 41

» कांग्रेस बनाम जनसंघ

09

18

• मुख्य व्रत-त्यौहार

2. गणेश चतुर्थी व्रत, 3. मौना पंचमी, श्रावण सोम. व्रत, 4. मंगला गौरी व्रत, 5. शीतला सप्तमी, 9. कामिका ग्यारस व्रत 10. प्रदोष व्रत, श्रावण सोम. व्रत, 11. शिव चतुर्दशी, मंगला गौरी व्रत, 12. स्ना. दा. श्रा., हरियाली अमावस, 14. चन्द्रदर्शन, सिंधारा दोज, 15. हरियाली, मधुश्रवा तीज व्रत, 16. दूर्वा, विनायकी चतुर्थी व्रत, 17. नागपंचमी, श्रावण सोम. व्रत, 18. मंगला गौरी व्रत, 23. पुत्रदा/ पवित्रा एकादशी व्रत, 24. श्रावण सोमवार व्रत, 25. प्रदोष व्रत, मंगला गौरी व्रत, 27. नारियल, व्रत पूर्णिमा, 28. रक्षाबंधन, स्नानदान पूर्णिमा, 29. कजलियाँ, 31. कजरी/ सतवा तीज, बहुला, गणेश चतुर्थी व्रत

• मुख्य जयंती-दिवस

1 से 7 शिशु स्तनपान सप्ताह, 2. प्राणनाथ परमधाम वास दिवस, 3. डॉ. मैथिली शरण गुप्त जयंती, 9. अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन दिवस, 11. खुदीराम बोस शहीद दिवस, 12. स्वामी अखंडानंद सरस्वती जयंती, अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस, 14. विभाजन विभीषिका, सिंधु स्मृति दिवस, 15. योगी अरविंद ज., पारसी नववर्ष, 16. पं. अटल बिहारी वाजपेयी पु. ति., 17. चरक जयंती, चौरसिया दिवस, मदनलाल ढींगरा शहीद दिवस

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

जीवन में विविधता और बहुलता है, लेकिन हमेशा उनके पीछे एकता की खोज करने का प्रयास करना चाहिए।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

•

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक

संजय गोविंद खोचे*

•

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

•

व्यवस्थापक

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,

ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

e-mail:charevetibpl@gmail.com

web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

तिरंगा ऊँचा रहे हमारा

15 अगस्त 1947 को स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भारत के संविधान निर्माताओं ने भारत के मतदाताओं को भारत का असली मालिक बनने का हक प्रदान किया। इसी हक से, भारतीय मतदाताओं को प्राप्त इसी स्वतंत्रता के परिणाम स्वरुप भारतीय मतदाता सरकार बनाने या सरकार को उखाड़ फेंकने की ताकत का उपयोग समय-समय पर करता आया है। अर्थात् सत्ता की चाबी भारतीय मतदाताओं के पास सदैव-सदैव के लिए सुरक्षित है। भारतीय मतदाताओं को बेहतर से बेहतर व्यवस्था चुनने का अधिकार देने का ही परिणाम था कि, 2014 में मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा को स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनाने का जनादेश प्राप्त हुआ। इसी एक-एक मत की ही ताकत का परिणाम है भारत की धरती से आतंकवाद गायब हो गया। सीमाएं सुरक्षित हो गईं। नक्सलवाद गायब हो गया। माताओं-बहनों के सम्मान की रक्षा हो पाई। माताओं-बहनों-बेटियों के सिंदूर की क्या कीमत होती है, पूरे विश्व ने देख लिया। घुसपैठ रोकने व घुसपैठियों को बाहर करना इसी एक-एक मत की मजबूत ताकत का ही परिणाम है। घुसपैठ समर्थक सरकार की जड़ें भी उखड़ गईं। इसी एक-एक मत की ही शक्ति थी कि 70 सालों से चली आ रही धारा 370 लुप्त हो गई। तीन तलाक इतिहास बन गया। इसी एक-एक मत की शक्ति के कारण दिल्ली से चला एक रुपया हितग्राहियों के खाते में तुरंत एक ही रुपया पहुंचता है। डिजिटल लेनदेन में भारत विश्व का लीडर बन गया। करोना जैसे संकट में भारत नें न केवल खुद को संभाला बल्कि 100 से अधिक देशों की सहायता करने वाला देश बना। इसी एक-एक वोट की ताकत से रूस-यूक्रेन युद्ध के संकट के बावजूद एक-एक भारतीय नागरिक की सुरक्षित स्वदेश वापसी सुनिश्चित की गई। ना केवल भारतीय नागरिकों की स्वदेश सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की गई, बल्कि अन्य देशों के नागरिकों के लिए भी भारत सहायक बना। इसी एक वोट की ताकत का ही परिणाम है कि 550 वर्षो से चल रहा राम जन्मभूमि का विवाद, न्यायालय के माध्यम से शांतिपूर्ण हल खोजने में सफलता मिली। हाल ही में अमेरिका-इजरायल-ईरान युद्ध की आपदा ने जहां बड़े-बड़े देशों की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा व्यवस्था लड़खड़ा रही थी, कोटा सिस्टम चालू हो गया था, पर भारत के प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता, मेहनत व तैयारी के ऊपर वैश्विक आपदा भी छोटी पड़ गई। ना तो घरेलू सिलेंडर की कमी पड़ी। ना डीजल की कमी आई। ना ही एक भी दिन पेट्रोल के आपूर्ति बाधित हुई। भारत के मतदाताओं को स्वाधीन भारत के संविधान निर्माताओं के द्वारा दी गई निर्णय क्षमता के कारण ही आज भारत आपदाओं का सामना सक्षमता से करने में सफल हो पा रहा है। बल्कि आपदाओं में विश्व के अनेक देशों को सहारा भी देने में सक्षम हो गया है। आज भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था से विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था बनने के लिए तेजी से अग्रसर है। स्वतंत्रता की उपलब्धियां का जब भी विश्लेषण किया जाएगा तो संविधान निर्माता के द्वारा प्रदत्त मतदाताओं के मत की ताकत की दूरदर्शिता की सदैव सराहना की जावेगी।

आज का भारत, विकसित भारत@2047, 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य, भारत जब हासिल करेगा तो इस सफलता की मजबूत आधारशिला मतदाताओं का निर्णय ही होगा।

मध्य प्रदेश भाजपा सरकार ने समान नागरिक संहिता को विधानसभा से पारित करवा कर नया इतिहास रच दिया है। अब मध्य प्रदेश के सभी नागरिकों के लिए समान अवसर और एक समान अधिकार संभव हो जाएंगे। जनजातीय समाज को समान नागरिक संहिता के दायरे से बाहर रखा गया है। इस प्रावधान में जनजातीय समुदाय की संस्कृति से कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है। समान अधिकारों को बल मिलेगा। अब संविधान की भावना के अनुरूप संचालन संभव हो पाएगा। इससे न्याय पूर्ण व प्रगतिशील राज्य बनाने में सहायता मिलेगी।

मध्य प्रदेश सरकार किसानों के हितों, संसाधनों के विकास, किसानों की आय बढ़ाने के लिए लगातार प्रयत्नशील है। इसी का परिणाम है कि मध्य प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़कर 55 लाख हेक्टेयर तक पहुंच गया है। पार्वती- काली सिंध- चंबल परियोजना से सिंचाई का रकबा और बढ़ेगा। शीघ्र ही किसानों को दिन में भी सिंचाई के लिए विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

प्रदेश के युवाओं को रोजगार की तलाश में दूसरे प्रदेशों की तरफ अब जाना नहीं होगा। मध्य प्रदेश में भारी निवेश के साथ युवाओं को अवसरों की उपलब्धता निश्चित की जा रही है। अब स्थानीय स्तर पर भी रोजगार उपलब्ध कराने में सफलता मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में डिजिटल इंडिया ने देश में क्रांतिकारी परिवर्तन करने में सफलता हासिल कर ली है। आज डिजिटल इंडिया के कारण 81 प्रतिशत से अधिक भुगतान डिजिटल माध्यम से संभव हो पा रहा है।

आधुनिक भारत में ऐसे नेता विरले ही होते हैं जिनके व्यक्तित्व में विद्वता,जन सेवा, उच्च नैतिक मूल्यों के साथ-साथ राष्ट्रवाद, संस्कृति की रक्षा तथा दूरदर्शिता का समागम हो। डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही राष्ट्रभक्त नेता थे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने धारा 370 समाप्त कर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है। आज के भारत की कल्पना डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी 76 वर्ष पूर्व कर चुके थे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बताएं मार्ग पर तेजी से अग्रसर है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जुलाई 2026 माह के ''मन की बात'' कार्यक्रम में मध्य प्रदेश में किये जा रहे जल संरक्षण के प्रयासों को प्रोत्साहित किया है। मध्य प्रदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रोत्साहन से जल संरक्षण के प्रयासों को और तेज गति मिलेगी। ■

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

इच्छाशक्ति ने ऊर्जा संकट से उभारा

- **नए भारत की इच्छाशक्ति ने 21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट से निपटने में मदद की।**
- **चुनौती चाहे कितनी भी बड़ी और अप्रत्याशित क्यों न हो, 'नया भारत' न तो अपने संकल्पों से पीछे हटता है और न ही अपनी गति धीमी करता है।**
- **21वीं सदी के 'नए भारत' के संकल्प और प्रयासों ने 21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट पर जीत हासिल की है।**
- **भारत ने हर स्तर पर सही निर्णय लेकर खुद को ऊर्जा संकट से उबारा।**
- **हमारे 140 करोड़ नागरिकों के विश्वास के बल पर ही देश आगे बढ़ पाया है।**

भाजपा सरकारें परियोजनाओं को सिर्फ शिलान्यास करके नहीं छोड़ती है, बल्कि हम उन परियोजनाओं को पूरा करने के लिए भी दिन रात एक कर देते हैं। चुनौती चाहे कितनी भी बड़ी और अप्रत्याशित क्यों न हो, नया भारत अपने संकल्पों से न पीछे हटता है, और न ही अपनी रफ्तार कम करता है।

पश्चिमी एशिया में युद्ध की वजह से पूरी दुनिया में हाहाकार मचा है, हर देश त्रस्त है। इस युद्ध ने 21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट को जन्म दिया है। बड़े-बड़े देश आज ईंधन की किल्लत से जूझ रहे हैं।

लेकिन 21वीं सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट पर, 21वीं सदी के नए भारत की इच्छा-शक्ति और भारत के प्रयास इन संकटों पर भारी पड़े हैं। भारत ने हर स्तर पर सही फैसले लिए, संकट का समय रहते सटीक आंकलन किया, प्रभावी रणनीति बनाई, भारत के संसाधनों का संतुलित प्रयोग किया। भारत की diplomatic पावर का सकारात्मक इस्तेमाल किया और तब जाकर भारत संकट से उबर पाया है।

जब सार्वजनिक तौर पर कुछ ताकतें अफवाह और आशंका फैलाने में व्यस्त थीं, तब किस स्केल पर दिन-रात काम हो रहा था, किस तरह स्थिति को संभाला जा रहा था, वो मेहनत, वो प्रयास, वो धैर्य, नीतिगत स्तर पर, कूटनीति स्तर पर उठाए गए एक-एक संवेदनशील कदम, कभी न कभी इतिहास लिखेगा, ये सब अभूतपूर्व हैं। हमारी जरूरतों की करीब 60 प्रतिशत LPG अन्य देशों से आयात की जाती थी, और इसमें से भी 90 प्रतिशत LPG गल्फ देशों से आ रही थी, होर्मुज से होकर के आ रही थी। और अचानक से युद्ध के हालातों ने उस सप्लाई को लगभग बंद कर दिया। आप अंदाजा लगा सकते हैं, हमारे देश में कितना बड़ा हाहाकार मचने जा रहा था। और इसलिए हमने संकट शुरू होते ही रिफाइनरीज के सामर्थ्य पर फोकस किया। औद्योगिक काम के लिए जो गैस बनती थी, उसकी जगह रिफाइनरीज को रसोई गैस-LPG बनाने के लिए कहा गया। और, 7 दिनों के भीतर-भीतर LPG के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई, पहले जो 35 हजार मीट्रिक टन LPG का उत्पादन देश में होता था, संकट के दौरान वो 54 हजार मीट्रिक टन तक बढ़ गया। जिन रिफाइनरीज ने पहले कभी LPG नहीं बनाया था, उन्हें भी इसके लिए configure किया गया।

रसोई गैस की डिमांड का पूरा लोड LPG पर न पड़े, सरकार ने इसका भी ध्यान रखा। PNG कनेक्शन, यानी पाइप से रसोई गैस के कनेक्शन बढ़ाने का अभियान चलाया गया, बहुत ही कम समय में भारत ने करीब 11 लाख से ज्यादा घरों को गैस के पीएनजी कनेक्शन से जोड़ दिया।

हमने एक ओर सप्लाई को सुनिश्चित किया। दूसरी ओर, घरेलू उपभोक्ताओं पर बहुत बोझ भी नहीं पड़ने दिया। जो हालात थे, उनमें घरेलू गैस सिलिंडर की कीमत दो हजार रुपए तक जा सकती थी ! बड़े-बड़े मार्केट एक्सपर्ट्स यही आकलन कर रहे थे। लेकिन, हमारे यहाँ अभी भी घरेलू LPG सिलिंडर साढ़े नौ सौ रुपए से भी कम में दिया जा रहा है। गरीबों को तो उज्ज्वला सिलिंडर ₹650 के भी भीतर पड़ रहा है! ये दिखाता है कि सरकार कितनी संवेदनशीलता से काम कर रही है।

युद्ध की वजह से डीजल पेट्रोल पर आया संकट भी बहुत बड़ा था। हमारे देश में तेल के बड़े-बड़े कुएं नहीं हैं। जब ये संकट बढ़ा, तो क्रूड ऑयल की कीमतें 70 डॉलर प्रति बैरल से 120 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच गई थीं। आयात के रास्ते भी बंद थे। दुनिया के कई देशों में डीजल पेट्रोल की कीमतों में 40 से 50 प्रतिशत का इजाफा हो गया। कई देशों में तो डीजल पेट्रोल कोटे के आधार पर मिलने लगा था। लेकिन, भारत में एक दिन भी ऐसे हालात नहीं आए। अफवाएं बहुत फैलाई गई, लोगों को डराया गया, भड़काया गया, राजनीति के खेल खेले गए, लेकिन जिनके इरादे गलत थे वो सफल नहीं हो पाए। दूर-सुदूर इलाकों में भी, छोटी-मोटी अड़चनों के अलावा सप्लाई की कोई बड़ी चुनौती नहीं आई। अप्रैल से जून के बीच ही, अकेले डीजल पेट्रोल में 75 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा का घाटा कंपनियों को उठाना पड़ा। यानी एक नई रिफाइनरी बन जाए, इतना घाटा सहना पड़ा। और इस घाटे को पूरा करने की जिम्मेदारी सरकारी खजाने से उठाई गई। हमने प्रति लीटर 10 रुपए की एक्साइज ड्यूटी भी कम की। और, बहुत ज्यादा बोझ जनता पर नहीं पड़ने दिया।

युद्ध के इसी समय में भारत की दूसरे देशों के साथ जो दोस्ती है ना, वो दोस्ती भी बहुत काम आई। जब ये संकट शुरू हुआ था, उससे पहले भारत 25-26 देशों से ही ईंधन का, ऊर्जा का आयात करता था। लेकिन संकट के समय भारत की डिप्लोमेसी का जलवा दिखा, दूसरे देशों के साथ हमारे अच्छे संबंध इस संकट की घड़ी में बहुत काम आए। युद्ध के दौरान ही भारत 40 से ज्यादा देशों से ईंधन मंगाने लगा। भारत ने दुनिया को स्पष्ट संदेश दिया कि हमारे लिए राष्ट्रहित, और राष्ट्र के नागरिकों का हित सर्वोपरि है। ''नागरिक देवो भवः'' ये हमारा मंत्र है।

इतनी अप्रत्याशित चुनौती से देश ऐसे ही नहीं उबरा, इसके पीछे हमारी एक दशक से चल रही दूरदर्शी नीतियों की सफलता भी हैं। राजस्थान रिफाइनरी का 2017 में MoU साइन किया था। लेकिन, 2018 से 2023 तक, राजस्थान में काँग्रेस सरकार रही। काँग्रेस के असहयोग के कारण, काम लगभग ठप्प ही रह गया। लेकिन, जैसे ही डबल इंजन सरकार आई, इसका काम तेजी से आगे बढ़ा, अब इसका लोकार्पण भी हो गया। जिसका शिलान्यास हम करते हैं, उसका लोकार्पण भी हम ही करते हैं। इसी तरह, भारत ने अपनी रिफाइनरी क्षमता को लगातार बढ़ाया है। अमेरिका में पिछले 50 वर्षों में एक भी नई रिफाइनरी नहीं बनी है। यूरोप की रिफाइनरी क्षमता लगातार कम होती गई है। वहीं, भारत आज विश्व की चौथी सबसे बड़ी रिफाइनरी क्षमता वाला देश बन चुका है। और हम यहां रूकने वाले नहीं हैं, आने वाले वर्षों में ये क्षमता और भी बढ़ने वाली है। इन्हीं प्रयासों के कारण भारत सदी के सबसे बड़े ऊर्जा संकट से लड़कर उबरा है।

दुनिया में युद्ध और अशांति से हमारे किसानों के लिए भी चुनौतियाँ पैदा होती हैं। अभी वेस्ट एशिया क्राइसिस, खाड़ी के देशों का संकट और इसके पहले यूक्रेन युद्ध के कारण दुनिया में खाद का बड़ा संकट भी पैदा हुआ, फर्टिलाइजर के लिए समस्या पैदा हो गई। यूक्रेन युद्ध के बाद एक समय एक यूरिया बोरी की कीमत 3 हजार रुपए से भी ऊपर पहुँच गई थी। लेकिन, हम अपने किसानों को जो दुनिया के बाजार में 3 हजार की बोरी थी, हम मेरे देश के किसानों को सिर्फ 3 सौ रुपए में यूरिया देते रहे। और इसके लिए खजाने से लाखों करोड़ रुपए खर्च करने पड़े, सब्सिडी दी गई। आपूर्ति के लिए जो सप्लाई चेन्स प्रभावित हुई थीं, भारत ने उसके भी समाधान निकाले। सरकार ने वैकल्पिक रास्ते तलाशे। हमने कई देशों में हमारे दूतावासों को विशेष जिम्मेदारी सौंपी। दूसरे देशों से उर्वरक खरीदने की, खाद खरीदने की पहल की। आयात के साथ-साथ हमने घरेलू उत्पादन भी बढ़ाया, उस पर ध्यान केंद्रित किया। और इतना ही नहीं, हमने प्राकृतिक खेती जैसे विकल्पों को भी बढ़ावा दिया और जमाखोरी और कालाबाजारी के खिलाफ भी सख्ती की।

इसी तरह, हमने हमारे उद्योगों का, MSMEs का भी ध्यान रखा। MSMEs को बढ़ती लागत का सामना करना पड़ रहा था। इसलिए हम Emergency Credit Line Guarantee Scheme का एक नया चरण लेकर आए। इस स्कीम के तहत, बैंकों ने MSMEs को 20 परसेंट तक का अतिरिक्त लोन दिया, और सरकार ने MSMEs के इन सभी लोन के लिए 100 परसेंट गारंटी, और ये मोदी की गारंटी है। इसका बहुत लाभ लघु उद्योगों को मिला, कुटीर उद्योगों को मिला। ऐसे ही अनेक फैसलों का नतीजा है कि आज हमारे छोटे-बड़े उद्योग खुद को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं।

सरकार ने निरंतर निर्णय लिए, क्योंकि, हमें भारत के सामर्थ्य पर भरोसा था। हमें हमारे देशवासियों की क्षमताओं पर, उनकी सूझबूझ पर हमारा शत प्रतिशत भरोसा था। 140 करोड़ देशवासी इस मुश्किल समय में देश के साथ मजबूती से खड़े रहे, जिस तरह, देशवासियों ने अफवाह, डर और भ्रम फैलाने वालों का सामना किया, देश में अस्थिरता फैलाने की साजिशों को नाकाम किया, देश उसी विश्वास के भरोसे आगे बढ़ पाया है। जो लोग भारत को असफल होते देखना चाह रहे थे, इसके लिए भविष्यवाणी भी करने लग गए थे, वो जरूर आज निराशा की गर्त में पड़े होंगे।

हमें प्रगति की नई ऊंचाइयों को भी छूना है। और, हमारे पर्यावरण का संरक्षण भी करना है। इसी सोच के साथ, सरकार ऊर्जा के दूसरे स्रोतों पर भी काम कर रही है। इसलिए, राजस्थान में विश्व-स्तरीय सोलर पार्क बनाने का काम चल रहा है। पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के तहत भी, घरों को सोलर से जोड़ा जा चुका है। पीएम कुसुम योजना के तहत भी किसानों को सोलर पंप भी दिए गए हैं।

कठिन से कठिन लगने वाले संकल्प भी सिद्ध हो जाते हैं, अगर उनके पीछे की नियत साफ हो। यही, बीजेपी और काँग्रेस में एक बहुत बड़ा अंतर है।

बीजेपी क्षेत्रवाद और बंटबारे की सियासत नहीं करती। बीजेपी राष्ट्र प्रथम की भावना पर चलती है। हमने जब गुजरात में पानी पहुंचाने की योजनाओं पर काम किया था, और राजस्थान को पानी देने की बात आई थी, मुझे बराबर याद है, हिन्दुस्तान के हर कोने में, एक राज्य दूसरे राज्य से पानी के लिए लंबे अर्से से लड़ाईयां चल रही हैं। राजस्थान के लोगों को भी लगता था कि पता नहीं गुजरात नर्मदा का पानी देगा की नहीं देगा। लेकिन हमारा सौभाग्य था कि राजस्थान में भी बीजेपी सरकार, गुजरात में भी बीजेपी सरकार, उस समय मैं गुजरात में मुख्यमंत्री था, यहां बहन वसुंधरा जी मुख्यमंत्री थी, और हम दोनों ने मिलकर बिना कोई संघर्ष, बिना कोई वाद-विवाद, बिना कोई आंदोलन, बिना कोई लड़ाई, गुजरात से नर्मदा का पानी राजस्थान के साथ साझा किया और आज राजस्थान के कई गांवों तक माँ नर्मदा का पानी पहुँच रहा है।

अब जब राजस्थान और हरियाणा, दोनों राज्यों में भाजपा सरकार है, तो, पहली बार आपसी सहमति से समाधान निकाले गए हैं। अब राजस्थान और हरियाणा सरकार मिलकर शेखावटी तक पानी पहुंचाएंगे। हाल ही में दोनों राज्यों के बीच समझौते पर मुहर भी लग चुकी है। इस समझौते के तहत हथिनीकुंड बैराज से पानी राजस्थान लाया जाएगा। इसके लिए अंडर-ग्राउंड पाइप-लाइन बिछाई जाएगी। इसका लाभ सीकर, चूरू, झुंझुनूं और आसपास के पूरे शेखावटी क्षेत्र के लाखों लोगों को इसका लाभ मिलने वाला है। इस परियोजना पर लगभग 34 हजार करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।

आने वाले समय में अपर यमुना बेसिन में रेणुका, लखवाड़ और किशाऊ बांधों का निर्माण पूरा होने पर राजस्थान को पानी का और लाभ होगा। गांवों में नल से जल पहुंचाने का काम भी तेजी से आगे बढ़ा है। रामजल सेतु परियोजना भी इसी सोच का परिणाम है। साथ ही, राजस्थान में जल संरक्षण के लिए 'जल संचय, जन भागीदारी' भी बड़ी भूमिका निभा रही है। देश में इस अभियान के तहत जल संरक्षण के लिए करीब- करीब 25 लाख सोक पिट्स बने हैं। राजस्थान में भी सवा लाख से ज्यादा सोक पिट्स बनाए गए हैं। इनसे पानी संरक्षित हो रहा है, ग्राउंड-वॉटर का स्तर सुधर रहा है। आने वाले समय में हमें विकास के और भी नए आयाम छूने हैं। ■

विकास हेतु राशि की कमी नहीं - डॉ. मोहन यादव

- **महिला-पुरुष को संपत्ति में समान अधिकार देकर आधी आबादी के हितों का संरक्षण होगा।**
- **विधायक अपने विधानसभा क्षेत्र को मॉडल बनाने के लिए कार्य करें।**
- **निवेश के लिए नियमों का सरलीकरण कर मध्यप्रदेश नीति आयोग में प्रथम स्थान पर आया।**

यूसीसी लागू होना बड़ी उपलब्धि, इस कानून के फायदों को जनता तक पहुंचाएं।

विधायक सरकार की उपलब्धियां जनता तक और जनता का फीडबैक सरकार तक पहुंचाएं।

यूसीसी समानता, न्याय और सशक्त समाज की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। यूसीसी लागू होने पर मध्यप्रदेश में प्रत्येक नागरिक के लिए समान अधिकार एवं समान अवसर मिलने की परिकल्पना साकार होगी। यह बात जनता तक पहुंचाने का कार्य सभी विधायकों को करना है। हमने धार्मिक परंपराओं और आस्था को अलग रखा है तथा जनजातीय समुदाय को भी यूसीसी से अलग रखा गया है। इस तथ्य को भी हमें जनता तक पहुंचाना है। मध्यप्रदेश कृषि प्रधान प्रदेश है। इसलिए सरकार वर्ष 2026 को किसान कल्याण वर्ष के रूप में मना रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र और मध्यप्रदेश की डबल इंजन सरकार किसानों के हितों के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। देश की सबसे बड़ी टनल के माध्यम से सिंचाई का पानी विंध्य तक पहुंचाने की महत्वाकांक्षी परियोजना से जबलपुर, कटनी, पन्ना, सतना, मैहर एवं रीवा जिले की 2.45 लाख हेक्टेयर भूमि सिंचित होगी। विधायकगण डबल इंजन सरकार की उपलब्धियों और जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाने की जिम्मेदारी निभाएं। साथ ही अपने विधानसभा क्षेत्र को मॉडल विधानसभा के रूप में विकसित करने के लिए विकास कार्यों को गांव-गांव तक पहुंचाएं। सरकार के पास विकास कार्यों और जनकल्याण के लिए धनराशि की कोई कमी नहीं है। समान नागरिक संहिता का मूल उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को समान कानूनी व्यवस्था उपलब्ध कराना है, ताकि नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य पंथ या व्यक्तिगत परंपराओं के आधार पर अलग-अलग न होकर संविधान की भावना के अनुरूप सभी पर समान रूप से लागू हों। यह निर्णय सामाजिक समरसता, न्यायिक समानता तथा महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। इन तथ्यों को जनता तक पहुंचाते हुए विपक्ष के तथ्यहीन आरोपों का तथ्यों एवं प्रमाणों के साथ जवाब देना है। यूसीसी लागू होने पर सबसे अधिक लाभ हमारी मुस्लिम बहनों को मिलेगा। विपक्ष भ्रम फैलाने का प्रयास करेगा, लेकिन उसके भ्रामक प्रचार का हमें तथ्यों के साथ जवाब देकर यूसीसी के लाभ आमजन तक पहुंचाने हैं।

सरकार जनता के समग्र कल्याण के लिए कार्य कर रही है। निवेशकों को सभी सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराने के लिए ईज ऑफ डूइंग बिजनेस की अवधारणा पर सचिवालय बनाया जा रहा है। निवेशकों को आकर्षित करने और सुविधाएं प्रदान करने के लिए अनेक विभागों की नीतियों में सुधार तथा नियमों का सरलीकरण किया गया है। नीति आयोग ने भी निवेशकों के अनुकूल नियमों के सरलीकरण के मामले में मध्यप्रदेश को देश में प्रथम स्थान दिया है। ▪

यूसीसी में महिलाओं के हितों की सुरक्षा - हेमंत खण्डेलवाल

- **विधायकगण सरकार के साथ संगठन की गतिविधियों को जनता तक पहुंचाएं।**
- **यूसीसी लागू कर मध्यप्रदेश प्रधानमंत्री जी के संकल्प को पूरा करने जा रहा है।**
- **यूसीसी को लेकर कांग्रेस और विपक्षी दल भ्रम फैलाएंगे, तथ्यों व साक्ष्यों के साथ जवाब देना है।**
- **जनप्रतिनिधि अपने-अपने क्षेत्र में यूसीसी के प्रावधानों से जनता को अवगत कराएं।**

यूसीसी लागू होने पर मध्यप्रदेश में प्रत्येक नागरिक के लिए समान अधिकार एवं समान अवसर मिलने की परिकल्पना साकार होगी। यूसीसी में धार्मिक आस्था एवं परंपराओं का सम्मान करते हुए उन्हें यथावत रखा गया है।

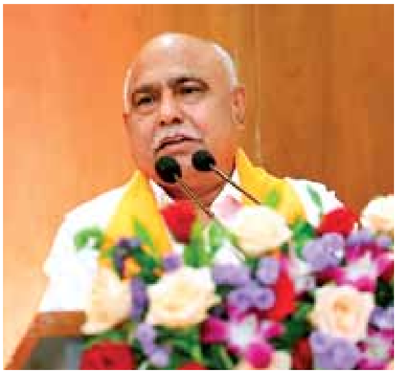

साथ ही महिलाओं को अधिक अधिकार-संपन्न बनाते हुए उनके हितों की बेहतर सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। इन बातों को हमें जनता तक पहुंचाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आव्हान पर चलाए जा रहे 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत व्यापक पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देना है। साथ ही प्रधानमंत्री जी के 'मन की बात' कार्यक्रम में आमजन की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए अपने-अपने क्षेत्र के शत-प्रतिशत बूथों पर कार्यक्रम का श्रवण कराया जाए। हम सभी कार्यकर्ताओं को सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए पर्यावरण, जल और प्रकृति के संरक्षण के लिए कार्य करना है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार ने जनजातीय समाज की परंपराओं को संरक्षित रखने के लिए उन्हें यूसीसी के दायरे से बाहर रखने का सराहनीय निर्णय लिया है। भाजपा सरकार का यह निर्णय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के ''विकास भी, विरासत भी'' के संकल्प तथा ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' की भावना को साकार करने वाला है। सभी विधायकगण यूसीसी के लाभों एवं उससे मिलने वाले अधिकारों की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के साथ-साथ संगठन की गतिविधियों को भी प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचाकर संगठन को और अधिक सशक्त बनाने का कार्य करें। ■

म. प्र. ने रचा इतिहास - हेमंत खण्डेलवाल

मध्यप्रदेश विधानसभा द्वारा यूसीसी विधेयक पारित कर समान न्याय, समान अधिकारों की भावना को साकार किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के समान न्याय और समान अधिकारों की भावना को साकार करने की दिशा में मध्यप्रदेश ने महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। लिव-इन रिलेशनशिप का 1 महीने में रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य होगा। नियमों का उल्लंघन करना दण्डनीय अपराध है। सरकार ने जनजातीय समाज को यूसीसी कानून के दायरे से पूरी तरह बाहर रखा है। जनजातीय समुदाय की संस्कृति से कोई छेड़छाड़ नहीं की गई है। मध्यप्रदेश में अब एक ही कानून चलेगा। महिलाओं के अधिकारों की रक्षा, सामाजिक समरसता तथा पारदर्शी कानूनी व्यवस्था स्थापित करने की दिशा में यह एक दूरगामी और प्रभावी निर्णय सिद्ध होगा।

समान नागरिक संहिता विधेयक का विधानसभा से पारित होना संविधान के नीति-निर्देशक तत्वों में निहित उस भावना को साकार करने वाला कदम है, जिसमें सभी नागरिकों के लिए समान नागरिक कानून की परिकल्पना की गई है। समान नागरिक संहिता समाज के सभी वर्गों के लिए समान कानूनी व्यवस्था सुनिश्चित करेगी, जिससे नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य किसी पंथ अथवा व्यक्तिगत परंपराओं के आधार पर अलग-अलग न होकर संविधान की भावना के अनुरूप समान रूप से लागू होंगे। यह निर्णय न्यायिक समानता, सामाजिक समरसता और सुशासन को नई मजबूती प्रदान करेगा। लंबे समय से विभिन्न व्यक्तिगत कानूनों के कारण विशेषकर महिलाओं को न्याय प्राप्त करने में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। समान नागरिक संहिता इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए महिलाओं को अधिक अधिकार-संपन्न बनाने तथा उनके हितों की प्रभावी सुरक्षा सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त करेगी। समान नागरिक संहिता मध्यप्रदेश को अधिक समरस, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील राज्य बनाने में मील का पत्थर सिद्ध होगी। ■

हाइड्रोजन ट्रेन - शानदार सफलता

- जींद और हरियाणा ने इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करा लिया है, यहीं से देश को अपनी पहली हाइड्रोजन ट्रेन का उपहार मिला है।
- भारत की हाइड्रोजन ट्रेन पूर्णतया प्रदूषण मुक्त होने के साथ ही "मेक इन इंडिया" की एक उल्लेखनीय सफलता का प्रमाण है।
- रेल हो या सड़क मार्ग, संपर्क साधन में ऐसी प्रगति सुविधा बढ़ाने के साथ ही विकास की गति कई गुना बढ़ाती है।
- सरकार ने नई राष्ट्रीय खेल नीति, "खेलो भारत" तैयार की है। "खेलो इंडिया" अभियान से लेकर "टॉप्स" योजना तक, आज खिलाड़ियों को अभूतपूर्व सुविधाएं मुहैया कराई जा रही हैं।

स्वच्छ परिवहन, कनेक्टिविटी, स्वास्थ्य सेवा और सांस्कृतिक विरासत सुदृढ़ करने वाली सभी परियोजनाएं "जीवन की सुगमता" बढ़ाकर विकास को गति देंगी।

भारत में पहली ट्रेन बॉम्बे से ठाणे के बीच चली थी। वैसे ही भविष्य में जब भी हाइड्रोजन ट्रेन का जिक्र आएगा, तो जींद का, सोनीपत का, हरियाणा का नाम भी आएगा ही आएगा।

अगर हम रेलवे के इतिहास पर नजर डालें, तो पाते हैं कि उन्नीसवीं सदी के रेलवे की पहचान स्टीम इंजन थे। बीसवीं सदी की पहचान, डीजल और बिजली से चलने वाली रेल बनी, और अब इक्कीसवीं सदी की रेल हाइड्रोजन से चलने वाली है। भारतीय रेल ने भी, इक्कीसवीं सदी की इस टेक्नोलॉजी में एक बड़ा स्टेप लिया है। जींद से सोनीपत के बीच, हाइड्रोजन ट्रेन चली है। अभी ये सफर 90 किलोमीटर का है, लेकिन भविष्य में इसका विस्तार होने की बहुत संभावनाएं हैं। हम इस पर रिसर्च करते रहेंगे, लागत कम कैसे हो, इसका तरीका ढूंढते रहेंगे, efficiency कैसे बढ़े, इस पर काम करते रहेंगे, और बड़ी जांच पड़ताल करते-करते एक के बाद एक कदम उठाते जाएंगे। दुनिया में हाइड्रोजन ट्रेन अभी-अभी आई है, करीब 7-8 साल पहले ही अस्तित्व में आई है। अभी दुनिया के 3 या 4 देश ही हैं, जिनके पास हाइड्रोजन ट्रेन चलाने का सामर्थ्य है। और जिन देशों में अभी ऐसी हाइड्रोजन ट्रेन चल भी रही है, वहां बहुत शुरुआती दौर में है। लेकिन भारत की जो ये हाइड्रोजन ट्रेन है, उसके सामर्थ्य के बारे में सुनकर आपको भी गर्व होगा, एक-एक हिन्दुस्तानी को गर्व होगा।

जींद से सोनीपत को चलने वाली हाइड्रोजन ट्रेन दुनिया की, सबसे ताकतवर हाइड्रोजन ट्रेन है। ये हाइड्रोजन ट्रेन, बत्तीस सौ हॉर्स पावर की है और सबसे ताकतवर ही नहीं, भारत की हाइड्रोजन ट्रेन, सबसे लंबी भी है। दुनिया में जहां हाइड्रोजन ट्रेन चल रही है, वो तीन या चार कोच वाली हैं। और भारत ने पहली बार में सीधे 10 कोच वाली हाइड्रोजन ट्रेन चलाकर, दुनिया में अपना झंडा गाड़ दिया है।

भारत की ये हाइड्रोजन ट्रेन, धुआं रहित तो है ही, ये मेक इन इंडिया का भी एक बहुत सफल उदाहरण है। इस हाइड्रोजन ट्रेन को भारत के ही इंजीनियर्स ने डिजायन किया है, भारत की ही कंपनी ने इसको बनाया है।

ये हाइड्रोजन ट्रेन, बाकी ट्रेनों से बिल्कुल अलग है। इसके लिए पूरा सिस्टम अलग चाहिए, पूरा इंफ्रास्ट्रक्चर अलग चाहिए, आने वाले समय में हाइड्रोजन ट्रेन से जुड़ा और भी इंफ्रास्ट्रक्चर बनेगा, नई-नई फैक्ट्रियां लगेंगी, जो हाइड्रोजन ट्रेन नेटवर्क की जरूरतों को पूरा करेंगी। यानी इस ट्रेन से, नौजवानों के लिए रोजगार के अनेक नए अवसर बनने तय हैं।

पिछले 12 वर्षों में भारतीय रेल में जो बड़े बदलाव हुए, इससे भारत को एक और फायदा हुआ है। पिछले कई महीनों से पश्चिमी एशिया में, होर्मुज के पूरे क्षेत्र में, ईरान और गल्फ में युद्ध चल रहा है, और जिस समुद्री रास्ते से होर्मुज से भारत, बहुत बड़ी मात्रा में पेट्रोल-डीजल-एलपीजी गैस, किसानों के लिए खाद, उसी रास्ते से आता है, उसी समुद्री मार्ग से आता है। लेकिन पिछले 3-4 महीनों से ये रास्ता, निरंतर युद्ध का मैदान बन चुका है, संकटों से घिरा हुआ है।

अगर 2014 से पहले अगर ये स्थिति आती, तो आज हिन्दुस्तान का रेलवे का काम पूरा का पूरा ठप पड़ा गया होता। क्योंकि उस समय 2014 में, देश का बहुत बड़ा हिस्सा ऐसा था, जहां हमारी ट्रेनें सिर्फ और सिर्फ डीजल से चलती थीं। अब आप सोचिए, अगर डीजल आना बंद हो गया होता, आज

डीजल से चलने वाली ट्रेनें कैसे चलती? देश कितने बड़े संकट में आ जाता।

2014 की स्थिति नहीं है ये, ये मोदी है। बहुत पहले सोचता भी है और समस्या के समाधान के रास्ते भी जमीन पर उतारता है। आप सोचिये, भारतीय रेल के बिजलीकरण की शुरुआत, ये सुनकर भी चौंक जाएंगे आप लोग, बिजलीकरण की शुरूआत 1925 में हुई थी। यानी करीब 100 साल पहले। 1925 से लेकर साल 2014 तक, यानी करीब 90 साल में पूरे देश का जो रेल नेटवर्क था, उसका सिर्फ 30 प्रतिशत, एक तिहाई से भी कम रेल नेटवर्क का बिजलीकरण हो पाया था। 70 पर्सेंट क्षेत्र डीजल से चलता था। और जिस गति से 90 साल में 30 प्रतिशत काम हुआ, तो 100 प्रतिशत होते होते 200 -300 साल लग जाते,और लगते। भारतीय रेलवे का बिजलीकरण शायद नहीं हो पाता। डीजल से ही रेल चलती। लेकिन बीते 12 वर्षों में, भारत के करीब 99 प्रतिशत रेल नेटवर्क का बिजलीकरण हो चुका है। इस वजह से लड़ाई होने के बावजूद भी, तेल का संकट पैदा होने के बावजूद भी, भारत की रेल रूकी नहीं है। भारत की विकास की गाड़ी अटकी नहीं है, ट्रेनें निरंतर चलती रहीं।

रेल हो, रोड हो, कनेक्टिविटी का ऐसा काम, सुविधा भी देता है, और विकास की गति भी कई गुना बढ़ा देता

इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के साथ भारत ने अनेक तरह के समझौते किए, जिनकी बहुत चर्चा हुई है। लेकिन एक विषय ऐसा है, जिस पर उतनी बात नहीं हुई। ये विषय है- खेलकूद, स्पोर्ट्स।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में, वहां की सरकारों से, स्पोर्ट्स को लेकर व्यापक चर्चा हुई है। इन दोनों देशों के साथ मिलकर, आने वाले समय में हम स्पोर्ट्स इंडस्ट्री, खिलाड़ियों की ट्रेनिंग, ऐसे अनेक मामलों में बहुत सारा काम साथ मिलकर करने वाले हैं। इससे युवाओं को बहुत लाभ होगा।

आज भारत में स्पोर्ट्स को फिटनेस और रोजगार का बड़ा माध्यम बनाया जा रहा है। सरकार ने नई नेशनल स्पोर्ट्स पॉलिसी, खेलो भारत नीति भी बनाई है। खेलो इंडिया अभियान से लेकर TOPS स्कीम तक, आज खिलाड़ियों को अभूतपूर्व सुविधाएं मिल रही हैं, उन्हें हजारों रुपए की आर्थिक मदद दी जा रही है।

साल 2030 में, भारत कॉमनवेल्थ गेम्स को होस्ट करने वाला है, 2036 में ओलंपिक गेम्स भारत में हों, इसके लिए भी हम पूरी तैयारी कर रहे हैं। इसलिए, हर खिलाड़ी को जोरदार तैयारी करनी है, पूरा दमखम लगाना है। और जो 36 के ओलंपिक को देखना चाहते हैं, आज जो 5 से 12-15 की उमर के बच्चें हैं, हमें उस पर ध्यान केंद्रित करना होगा।

हमारा देश, संस्कारों और संस्कृति का देश है। आस्था और आध्यात्म की यही विरासत है, जिसे आज का भारत, सहेजता भी है और अब अगली पीढ़ी तक पूरे मान के साथ पहुंचाता भी है। इसी भाव के साथ, कुरुक्षेत्र में एक सिख म्यूजियम की आधारशिला रखी गई है। नया संग्रहालय, भारत की महान गुरु परंपरा को, अगली पीढ़ियों तक पहुंचाएगा। ▪

हाइड्रोजन ट्रेन - 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण सफलता

सीए अखिलेश जैन

कोयला इंजन से प्रारंभ भारतीय रेल का सफर महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच गया है। भारत ने सफलतापूर्वक हाइड्रोजन ट्रेन का व्यवसायिक परिचालन प्रारंभ कर 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक व अविश्वसनीय उपलब्धि हासिल कर ली है। इस उपलब्धि को केवल वैकल्पिक ईंधन के प्रयोग तक सीमित नहीं रखा जा सकता। इस वैकल्पिक ईंधन में मोदी जी की दूरदृष्टि छुपी हुई है। आज देश के 99 प्रतिशत रेलवे के मार्गों का विद्युतीकरण किया जा चुका है, शेष बचे मार्ग जहां विद्युतीकरण चुनौती पूर्ण कार्य है, वहां आवागमन के लिए भारत ने आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है। कार्बन न्यूट्रल करके प्रदूषण मुक्त आवागमन संभव हो गया है। इलेक्ट्रिक ट्रेन आपदा में विद्युत की आपूर्ति बाधित होते ही रुक जावेगी। डीजल इंजन ट्रेन डीजल के आपूर्ति बाधित होते ही रुक जावेगी, पर हाइड्रोजन ट्रेन का ईंधन तो हाइड्रोजन है, जो भारत में ही निर्मित है, ट्रेन भी भारत में ही निर्मित है, जिसके लिए किसी भी प्रकार की विदेशी सहायता की आवश्यकता ही नहीं है, अर्थात मोदी जी ने कितने भी बड़े वैश्विक संकट के बाद भी आवागमन जारी रखने का रास्ता खोल दिया है। आवागमन, संकट के बावजूद बाधित न होने का सीधा-सीधा अर्थ अर्थव्यवस्था को संकट से बचाना होता है। मोदी जी कोरोना, अमेरिका- ईरान युद्ध के समय अर्थव्यवस्था की गति को बचाने में सफल हो चुके हैं। अर्थव्यवस्था की गति पर नियंत्रण से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था का रास्ता अपने आप निकलता है। इस उपलब्धि का दूसरा पक्ष भी 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के लिए आधार तैयार करता हुआ दिखाई देता है। आवागमन जितना आसान, सुचारू व विपरीत परिस्थितियों में भी जारी रहने वाला होगा, उतना ही व्यापार-व्यवसाय संभव हो सकता है और जितना व्यापार-व्यवसाय संभव होगा, उतना ही रोजगार निर्मित होगा, उतना ही सरकारी करों का कलेक्शन संभव होगा, और जितना सरकारी करों का कलेक्शन बढ़ेगा, विकास को उतनी ही गति मिलेगी, विकास को मिली गति से फिर व्यापार-व्यवसाय व रोजगार के रास्ते खुलेंगे। किसी भी तरीके से देखें तो मोदी जी की दूरदृष्टि 5 ट्रिलियन डॉलर के अर्थव्यवस्था हासिल कर, अर्थव्यवस्था की गति को बनाए रखने की प्रतीत होती है और हाइड्रोजन ट्रेन 5 ट्रिलियन डॉलर के अर्थव्यवस्था के लिए आधार का एक महत्वपूर्ण शिला साबित होगा।

(लेखक भाजपा म. प्र. के प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं)

कृषि और कृषक कल्याण है सर्वोच्च प्राथमिकता - डॉ.यादव

- **किसानों को सिंचाई के लिए दिन में ही मिलने लगेगी पर्याप्त बिजली।**
- **सरकार सड़क, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और अधोसंरचनात्मक विकास के लिए है प्रतिबद्ध।**
- **शाजापुर जिले के प्रत्येक गांव तक पहुंचेगा नर्मदा जल।**
- **कालापीपल क्षेत्र 04 लाख पौधे रोपित करने का बना रहा नया रिकॉर्ड।**

प्रदेश सरकार किसानों की आय बढ़ाने, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार, महिला सशक्तिकरण, रोजगार सृजन और आधारभूत विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। प्रदेश में 'कृषि और कृषक' सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता हैं। किसान कल्याण वर्ष में किसानों के हित में कई महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए हैं। प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़कर 55 लाख हैक्टेयर से अधिक पहुंच गया है, जिससे कृषि उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है।

पर्यावरण संरक्षण एवं आने वाली पीढ़ियों के सुरक्षित भविष्य के लिए जनभागीदारी से पौध-रोपण अत्यंत आवश्यक है। कालापीपल क्षेत्र 04 लाख पौधे रोपित करने के लक्ष्य का यह वृक्ष गंगा अभियान का नया रिकॉर्ड बना रहा हैं। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन राशि देने तथा दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए गौपालकों को विशेष सहायता प्रदान की जाएगी।

लाड़ली बहना योजना अन्तर्गत अब तक लगभग 60 हजार करोड़ रुपये की राशि प्रदेश की बहनों के खातों में अंतरित की जा चुकी है। इससे महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिला है।

प्रदेश में सिंचाई सुविधाओं का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पार्वती-कालीसिंध-चंबल (पीकेसी) परियोजना सहित विभिन्न नदी जोड़ो योजनाओं से लाखों हैक्टेयर भूमि सिंचित होगी। इससे शाजापुर सहित अनेक जिलों के किसानों को दीर्घकालीन लाभ मिलेगा। शाजापुर जिले के प्रत्येक गांव तक नर्मदा का पानी पहुंचाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। सरकार इस दिशा में तेजी से कार्य कर रही है। किसानों को अब सिंचाई के लिए रात में खेतों पर नहीं जाना पड़ेगा। सरकार चरणबद्ध तरीके से किसानों को दिन के समय ही सिंचाई के लिये विद्युत उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित कर रही है।

प्रदेश में किसानों को अब खरीफ और रबी फसल के लिए अलग-अलग ऋण लेने की आवश्यकता नहीं होगी। उन्हें पूरे वर्ष के लिए एक ही फसल ऋण उपलब्ध कराया जाएगा, जिससे किसानों को आर्थिक सुविधा मिलेगी। सरकार कृषि लागत कम करने, उत्पादन बढ़ाने तथा किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

प्रदेश में रोजगार के नए अवसर सृजित किए जा रहे हैं। उद्योगों में बड़े निवेश के साथ युवाओं को सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रदेश में औद्योगिक निवेश तेजी से बढ़ा है, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर विकसित हो रहे हैं।

प्रदेश सरकार सड़क, सिंचाई, शिक्षा, स्वास्थ्य और अधोसंरचनात्मक के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार किसान, महिला, युवा और गरीब सहित समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। ■

डिजिटल इंडिया से जीवन हुआ है सरल और सुगम -डॉ.यादव

- **प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में डिजिटल इंडिया की 11 वर्षों में हुई प्रगति।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'डिजिटल इंडिया' की 11 वर्षों की अविस्मरणीय यात्रा का पूर्ण होना गर्व का विषय है। 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य की ओर बढ़ते डिजिटल कदमों से देशवासियों का जीवन सरल व सुगम हुआ है। साथ ही देश में समृद्धि के नए द्वार भी खुले है।

पिछले 11 वर्षों में डिजिटल क्रांति ने यूपीआई से 81 प्रतिशत डिजिटल भुगतान सुनिश्चित किया, 2.18 लाख ग्राम पंचायतें भारत नेट से जुड़ीं, 45 हजार से अधिक जीपीयू से ए.आई. मिशन को गति मिली और 2.23 लाख स्टार्ट-अप्स ने 23.36 लाख रोजगार सृजित किए। ■

'नागरिक देवो भव' भारत की गवर्नेंस का मूल मंत्र

21वीं सदी का भारत आज विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। एक सपना पूरा होता है, तो नया सपना जन्म ले लेता है। पहले कहते थे, एक दीप से जले दूसरा, जलते दीप हजार। आज, एक सपने से जन्मे दूसरा, सपने जन्मे हजार। एक लक्ष्य पूरा होता है तो उससे भी बड़ा संकल्प सामने आता है।

ये वो भारत है, जो कहता है- Grow More Achieve More.

हम 140 करोड़ Aspirations से भरे राष्ट्र हैं, हम अधीर हैं, बेसब्र हैं, हम दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती इकॉनॉमी हैं, लेकिन हम जल्द से जल्द दुनिया की टॉप थ्री इकॉनॉमी बनना चाहते हैं। क्योंकि हमारी प्रेरणा है- Grow More Achieve More.

भारत ने मून के साउथ पोल पर चंद्रयान लैंड कराया। दुनिया में कोई और देश ऐसा नहीं कर सका। लेकिन भारत इतने भर से संतुष्ट नहीं हुआ क्योंकि भारत कहता है Grow More Achieve More.

इसलिए, भारत अब स्पेस में अपना गगनयान भेजने की तैयारी कर रहा है, भारत अब अपना स्पेस स्टेशन बनाने के लक्ष्य पर चल रहा है।

कुछ साल पहले तक, 5G टेक्नॉलॉजी को लेकर बड़े सवाल देश के सामने थे? कब लॉन्च होगी, कैसे रोलआउट होगी, कितना समय लग जाएगा? हमने 2022 के अंत में 5G रोलआउट करना शुरु किया, और आज भारत के Ninety nine percent district इससे कवर्ड हो चुके हैं। और भारत 5G का Fastest rollout करने वाले देशों में से एक है।

आज भारत, दुनिया का दूसरा बड़ा 5G मार्केट बन चुका है। और इतना ही नहीं, भारत आज मेड इन इंडिया 6G टेक्नॉलॉजी पर भी तेजी से काम कर रहा है। वो इसलिए, क्योंकि भारतीय कहते हैं -Grow More Achieve More.

पिछले 12 वर्षों में, भारत के दो दर्जन से अधिक शहरों में मेट्रो नेटवर्क पहुंच चुका है। आज भारत में हर दिन सवा करोड़ से अधिक लोग मेट्रो में सफर करते हैं। भारत, दुनिया का तीसरा बड़ा मेट्रो नेटवर्क वाला देश है। लेकिन हम भारतीय इससे भी संतुष्ट नहीं है, हम कहते हैं- Grow More Achieve More.

इसलिए हम भारत में नमो भारत रैपिड रेल, और वंदे भारत जैसे सेमी हाईस्पीड नेटवर्क को तेजी से बढ़ा रहे हैं।

एक और उदाहरण मेक इन इंडिया का है। बीते 12 वर्षों में, मेक इन इंडिया ग्लोबल ब्रांड बना। हमारे मोबाइल फोन, हमारे इलेक्ट्रॉनिक्स, दुनिया भर में पहुंचे। हमारे ऑटोमोबील, हमारे फार्मा प्रोडक्ट्स का ग्लोबली और विस्तार हुआ। भारत के डिफेंस प्लेटफॉर्म की कैपेबिलिटी और क्रेडबिलिटी, दुनिया देख रही है।

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान धमाके, आतंकियों के अड्डों पर हो रहे थे, और गूंज, पूरी दुनिया में सुनाई दे रही थी।

भारत इतने पर ही रुकना नहीं चाहता, भारत कह रहा है Grow More Achieve More. इसलिए, आज चिप से लेकर शिप तक, मैन्युफेक्चरिंग का भारत में एक नया इकोसिस्टम डव्लप किया जा रहा है।

भारत के बड़े सपनों, बड़ी एस्पिरेशन्स की नींव है- भारत का नागरिक, We the people और इन सपनों को एनर्जी दे रहा है- People first, यानि ''नागरिक देवो भव'' का मंत्र। ये आज के भारत की गवर्नेंस का मूल मंत्र बन गया है।

मैं आपको अटेस्टेशन का उदाहरण देता हूं। अटेस्टेशन की मजबूरी, कुछ साल पहले तक बहुत कॉमन हुआ करती था। यानि कुछ भी करना हो, कहीं भी अप्लाई करना हो, अपने डॉक्यूमेंट किसी अधिकारी से अटेस्ट कराने पड़ते थे।

कतार में खड़ा रहना पड़ता था सुबह सुबह। ये बताने के लिए कि, हां तुम वही हो। हमारे लिए तो नागरिक देवो भव। अब ये स्थिति नहीं है। अब ज्यादातर काम सेल्फ अटेस्टेशन से ही चल जाता है।

वहां से जो यात्रा शुरू हुई, वो भारत में डिजी-लॉकर तक पहुंच गई है। एक ऐसी डिजिटल व्यवस्था, जिसमें भारतीय, अपने डॉक्यूमेंट्स Digi फॉर्मेट में रख सकते हैं। इसमें एक क्लिक में डॉक्यूमेंट Share होता है। Verify होता है। Accept होता है।

व्यवस्था बनाना एक चीज है, उसे स्केल और सिक्योर फीचर के साथ बनाना, बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। आज भारत में डिजीलॉकर के कितने यूजर हैं? यह आंकड़ा याद रखना थोड़ा कठिन है। इस वक्त तक, 70 करोड़ यानि 700 मिलियन से ज्यादा डिजिलॉकर यूजर हैं। और इनमें, 850 करोड़ से अधिक डॉक्युमेंट्स स्टोर हैं।

''नागरिक देवो भव'' का एक उदाहरण, हमारा हेल्थकेयर सिस्टम है। आज करोड़ों भारतीयों के पास, एक सिक्योर डिजिटल हेल्थ आईडी है। इसमें हेल्थ रिकॉर्ड्स की पूरी हिस्ट्री डिजिटली स्टोर होती है। इससे भारत में, डाइअग्नोसिस और बेहतर हो रहा है। और इससे इलाज की व्यवस्था और सुधर रही है।

यही नहीं टेलिकंसल्टेशन का चलन भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। सरकार का एक ई-संजीवनी प्लेटफॉर्म है, इससे अभी तक 48 करोड़ यानि 480 मिलियन टेली-कंसलटेशन्स हो चुकी हैं। इस प्लेटफॉर्म से सवा दो लाख से अधिक हेल्थकेयर प्रोवाइडर जुड़े हैं।

एक जमाने में कितने हफ्ते लगते थे पासपोर्ट बनने में? लेकिन आज पासपोर्ट औसतन कुछ ही दिनों में मिल जाता है। यही सिटिजन फर्स्ट गवर्नेंस है। यही नागरिक देवो भव के मंत्र की सफलता है।

मैं अक्सर एक बात कहता हूं, भारत का सामर्थ्य जितना बढ़ता है, उसका फायदा, पूरी मानवता को होता है। हमारे संस्कार हैं- सर्वे भवन्तु सुखिनः यानि सब सुखी रहें। यही शाश्वत संस्कार आज भी भारत की पॉलिसीज और एक्शन्स को प्रेरित करते हैं।

वेनजुएला में भूकंप की इतनी बड़ी त्रासदी आई। कितना बड़ा विनाश हुआ। सैकड़ों लोगों की जान गई। हमने दूरी कितनी है देखा नहीं। हमने वेनज़ुएला की उस पीड़ा को अपनी पीड़ा समझा। भारत ने रिलीफ और rescue के लिए ऑपरेशन चलाया।

हमने जितनी तेजी से संभव हो सकता था, मदद भेजी, अपने एक्सपर्ट्स भेजे, हमारी मेडिकल टीम्स ने तेजी से काम शुरु किया। मुझे बहुत संतोष है, कि इससे अनेक जिंदगियां बच पाई।

ऐसे ही तुर्किए और सीरिया में जब भूकंप आया, तब भी भारत ने बहुत तेजी से राहत और बचाव के लिए मदद भेजी। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, पिछले साल हमने म्यांमार में ऑपरेशन ब्रह्मा चलाया। श्रीलंका में साइक्लोन की तबाही हुई, तो वहां ऑपरेशन सागर बंधु चलाया।

कोरोनाकाल की यादें भी आज तक हमारे मन में ताजा हैं। हमने दुनियाभर से भारत के ही नहीं, अन्य देशों के नागरिकों को भी अपने-अपने घर पहुंचाया। रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया। जरूरतमंदों तक दवाएं पहुंचाई, 100 से अधिक देशों को वैक्सीन्स भेजीं। युद्धक्षेत्रों में भी भारत ने, संकट में फंसे व्यक्तियों को बाहर निकालने का प्रयास किया।

भारत जब मदद करता है, तो पासपोर्ट नहीं देखता, भारत जब मदद भेजता है, पासपोर्ट का रंग नहीं देखता। इसलिए, दुनिया भी भारत पर इतना विश्वास करती है।

आपने खेलो इंडिया मिशन का नाम सुना होगा। ये सिर्फ एक स्पोर्ट्स पॉलिसी नहीं है, ये अभियान स्कूल लेवल से ही हजारों खिलाड़ियों का एक पूल तैयार कर रहा है। भारत में स्कूल, यूनिवर्सिटी और नेशनल लेवल पर खेलो इंडिया गेम्स होते हैं, इनमें लाखों एथलीट्स पार्टिसिपेट करते हैं।

इस मिशन के तहत, भारत के रिमोट एरियाज में भी स्पोर्ट्स इंफ्रा तैयार किया जा रहा है। इससे ज्यादा से ज्यादा एथलीट्स को खासतौर पर हमारी बेटियों को ज्यादा अवसर मिल रहे हैं। और ये सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं है सांसद खेल महाकुंभ जैसे आयोजनों से गांव-गांव में स्पोर्ट्स को, फिटनेस से जोड़ा जा रहा है, करियर ऑपॉर्चुनिटीज से कनेक्ट किया जा रहा है।

और ये जो कुछ भी हो रहा है, इसका इंपैक्ट फील्ड में दिख रहा है। भारत के एथलीट्स, भारत की टीम्स, Better से बेस्ट होती जा रही हैं।

यही कॉन्फिडेंस, भारत को स्पोर्टिंग लीग के नेक्स्ट लेवल पर ले जा रहा है। 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स, भारत होस्ट कर रहा है। भारत 2036 ओलंपिक्स को होस्ट करने का भी दावेदार है।

आपने शेर सुना होगा -

मैं अकेला ही चला था जानिब-ए-मंजिल लोग साथ आते गए और कारवाँ बनता गया।

आज ये कारवां दुनिया के लगभग 40 देशों के साथ ट्रेड एग्रीमेंट्स तक पहुंच चुका है।

हम केवल, ट्रेडिंग नेशन नहीं हैं, हम इनोवेशन को, साइंस एंड टेक्नॉलॉजी को महत्व देते हैं।

भारत, अपने साइंस, टेक और इनोवेशन इकोसिस्टम को ट्रांसफॉर्म कर रहा है। आज भारत के 10 हजार स्कूलों में अटल टिंकरिंग लैब्स चल रही हैं। ये स्कूल लेवल पर ही, इनोवेशन का माइंटसेट तैयार कर रही हैं।

बीते 12 वर्षों में भारत दुनिया का तीसरा बड़ा स्टार्ट अप इकोसिस्टम बन गया है।

आज भारत में 2 लाख से अधिक रजिस्टर्ड स्टार्ट अप्स हैं। भारत में हर महीने 4 हजार से ज्यादा नए स्टार्ट अप रजिस्टर हो रहे हैं। और डिफेंस और स्पेस जैसे सेक्टर्स में भी सैकड़ों स्टार्ट अप्स काम कर रहे हैं। ये सारे सेक्टर पहले भारत में बंद थे। कुछ साल पहले ही इनको प्राइवेट आंत्रप्रन्योरशिप के लिए खोला गया है। और भारत का एक स्पेस स्टार्ट-अप बहुत जल्द, अपने रॉकेट में, पहली बार सैटेलाइट्स लॉन्च करने जा रहा है। ■

प्राकृतिक खेती अपनाऐं -डॉ. मोहन यादव

- **किसानों को वैज्ञानिक खेती और समृद्ध भविष्य से जोड़ने का जरिया है बलराम कृषि महोत्सव।**
- **मुख्यमंत्री ने जैविक, हाईटेक खेती और खाद्य प्रसंस्करण के लिए किसानों को किया सम्मानित।**
- **मेधावी विद्यार्थियों और सोशल मीडिया एन्फ्लुएंसर्स को दिए प्रशस्ति-पत्र।**

मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में 82.70 लाख से अधिक किसानों को 3308 करोड़ रूपए अंतरित।

प्रत्येक हितग्राही किसान के खाते में पहुंचे एक मुश्त चार हजार रूपए।

खंडवा जिला मुख्यालय में हुये बलराम कृषि महोत्सव में प्रदेश के 82 लाख 70 हजार से अधिक किसानों के खातों में मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना अंतर्गत 3308 करोड़ रुपए सिंगल क्लिक से अंतरित किये गये।

मध्यप्रदेश सरकार किसानों की आय बढ़ाने, खेती-किसानी को लाभदायी बनाने और कृषि को आधुनिक स्वरूप देने के लिए लगातार काम कर रही है। बलराम कृषि महोत्सव केवल एक आयोजन न होकर किसानों को नई तकनीक, वैज्ञानिक खेती और समृद्ध भविष्य से जोड़ने का व्यापक अभियान है।

परम्परागत खेती अब गुजरे जमाने की बात हो गई है। अब आधुनिक और उन्नत खेती का दौर है। किसान बंधु अपने खेत की मिट्टी की जांच करायें। मिट्टी की उत्पादकता के अनुसार ही फसल लें। बहुत अधिक रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करने से बचें, जितनी जल्दी हो सके, प्राकृतिक और जैविक खेती की ओर बढ़ें। फसल विविधीकरण अपनाएं। एक ही किस्म की फसल के स्थान पर एक ही समय में खेत में एकाधिक फसल लें। इससे किसानों के खेतों में नई फसल किस्मों की हरियाली आयेगी, साथ ही आमदनी भी बढ़ेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश सरकार लगातार किसान कल्याण के लिए महत्वपूर्ण निर्णय ले रही है। किसान अपनी मेहनत और पसीने से धरती से अन्न उगाते हैं और भूखों को अनाज उपलब्ध कराते हैं। किसानों के प्रति हमारी सरकार के मन में अगाध श्रद्धा और सम्मान है। किसान भाइयों को एक साथ 4000 रुपए सम्मान निधि के रूप में उनके बैंक खातों में भेजे गए हैं।

पूरी दुनिया भारत की क्षमताओं को पहचानती है। भारत वह देश है, जो अपनी परम्पराओं में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव रखते हुए संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानता है। हमारी संस्कृति ''जियो और जीने दो'' पर विश्वास करती है। भगवान बलराम कृषि क्षेत्र के पहले देवता हैं। किसानों की आय दोगुना करने के लिए वर्ष 2026 को 'कृषक कल्याण वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। इसमें प्रदेश के विभिन्न अंचलों में बलराम कृषि महोत्सव मनाये जा रहे हैं।

किसानों के प्रति हमारी संकल्प शक्ति का ही परिणाम है कि प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़कर 65 लाख हैक्टेयर हो गया है, जो कि वर्ष 2002-03 से पहले मात्र साढ़े 7 लाख हैक्टेयर था। पिछले ढाई साल में सिंचाई का रकबा 10 लाख हैक्टेयर से अधिक बढ़ चुका है। राज्य सरकार ने कृषि क्षेत्र में सर्वांगीण विकास के लिए किसानों को बिजली, पानी, बेहतर सड़कें, प्राकृतिक खेती और आधुनिक खेती से जोड़ा है। किसान भाई अब ड्रोन से

खेतों में खाद-बीज का छिड़काव कर रहे हैं। वर्षाकाल के बाद किसानों को रात के साथ दिन में भी सिंचाई के लिए बिजली दी जाएगी। किसानों की आय बढ़ाने के लिए राज्य सरकार दूध उत्पादन को प्रोत्साहित कर रही है। दूध उत्पादन को वर्तमान 9 प्रतिशत से बढ़ाकर हमने 20 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा है।

प्रदेश में अब एक देश, एक निशान, एक विधान, एक प्रधान का संकल्प पूरा हो रहा है। 'सब समान-सबको सम्मान' ही भाव है। सरकार ने समान नागरिक संहिता विधेयक विधानसभा से पास करवाया है। अब प्रदेश में एक समान कानून चलेगा। यूसीसी के संबंधित सर्वे में साढ़े 3 करोड़ से अधिक लोगों को एसएमएस भेजे गए। इसके लिए 10 लाख से अधिक सुझाव मिले। सर्वे में 76 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम बहनों ने यूसीसी लागू करने का समर्थन किया। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में बहनों को तीन तलाक से मुक्ति मिल चुकी है। सभी समुदायों की महिलाएं हमारी बहनें हैं।

लाड़ली बहनों को हर माह 1500 रुपए की सौगात मिल रही है। हर महीने रक्षाबंधन मनता है। अगले महीने से प्रदेश के नागरिकों को सरकारी रोडवेज बसों की सौगात मिलेगी। यह गरीब, किसानों के कल्याण का समय है। प्रदेश में गरीब-जरूरतमंदों को इलाज के लिए एयर एंबुलेंस उपलब्ध कराई जा रही है। भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण से जुड़े सभी धार्मिक स्थानों को तीर्थ के रूप में विकसित किया जा रहा है। सिंहस्थ-2028 के आयोजन की तैयारियों के साथ ही ओंकारेश्वर धाम में भी 3 हजार करोड़ की लागत से विकास कार्य किए जा रहे हैं।

खंडवा के दादाजी धूनीवाले के धाम और समाधि स्थल पर विकास के कार्य तेजी से जारी हैं। सभी को साथ लेकर आगे बढ़ते हुए प्रदेश को बेहतर राज्य बनाना है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश के 80 करोड़ से अधिक गरीबों को निःशुल्क अनाज वितरित किया जा रहा है, जिससे अन्न के अभाव में कोई भी भूखा न सोये। गरीबों को ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में निःशुल्क पीएम आवास उपलब्ध कराए गए हैं।

मध्यप्रदेश नदियों का मायका है और खंडवा और निमाड़ क्षेत्र को मां नर्मदा का विशेष आशीर्वाद मिला हुआ है। निमाड़ के किसानों को सिंचाई के लिए मां नर्मदा का जल मिल रहा है। गुरु पूर्णिमा पर प्रदेश को नए सांदीपनि विद्यालयों की सौगात मिली। प्रदेश में पहले चरण में 275 सांदीपनि विद्यालय स्वीकृत किए गए हैं। इनमें से 136 बनकर तैयार हो चुके हैं और 105 विद्यालयों का लोकार्पण भी हो चुका है। दूसरे चरण में 200 नये सांदीपनि विद्यालय बनायेंगे। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों को संस्कारों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदाय की जा रही है। प्रदेश में युवाओं के लिए सर्वसुविधायुक्त नए मेडिकल कॉलेज और विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। भारत के युवा खेलों में भी देश का मान बढ़ा रहे हैं। हाल ही में कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में भारत की बेटी सुश्री मीराबाई चानू ने स्वर्ण पदक और श्री राजा मुथुपांडी ने रजत पदक अपने नाम किया है। क्रिकेट में नौजवान खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी ने विरोधी टीम के छक्के छुड़ाये।

15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस से पहले हर घर तिरंगा अभियान चलेगा और सभी लोग इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लें। अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, मदनलाल ढींगरा जैसे सभी वीरों के बलिदान का स्मरण करें। ▪

प्रदेश में दीपोत्सव - "समरसता संकल्प अभियान"

भारतीय जनता पार्टी द्वारा संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के उपलक्ष्य में 29 जुलाई गुरु पूर्णिमा से 20 फरवरी 2027 तक देशव्यापी 'समरसता संकल्प अभियान' के तहत भाजपा प्रदेश कार्यालय में दीपोत्सव आयोजित किया गया। इस दौरान पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने दीप प्रज्जवलित किए। प्रदेश कार्यालय सहित पूरे मध्यप्रदेश के 62 संगठनात्मक जिलों, 1313 मंडलों के लगभग 21 हजार स्थानों पर एक साथ दीप प्रज्ज्वलित कर संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज को नमन किया गया।

अभियान के अंतर्गत जिन स्थानों पर संत गुरु रविदास महाराज के मंदिर हैं, वहां विशेष रूप से दीप प्रज्ज्वलन किए गए। वहीं, जिन क्षेत्रों में मंदिर उपलब्ध नहीं हैं, वहां सार्वजनिक स्थलों पर संत रविदास महाराज के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर समरसता, समानता एवं सामाजिक सदभाव का संदेश दिया। पार्टी पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ताओं ने आमजन के साथ कार्यक्रमों में सहभागिता कर समाज में एकता और सामाजिक समरसता को मजबूत करने का संकल्प लिया। ▪

डॉ. मुखर्जी का जीवन एकता और प्रगति के लिए समर्पित - नरेंद्र मोदी

6 जुलाई का दिन राष्ट्रवाद और निस्वार्थ सेवा के आदर्शों में विश्वास रखने वाले करोड़ों देशवासियों के लिए बहुत ही विशेष है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का जीवन साहस और मां भारती के प्रति अटूट समर्पण का प्रेरणादायक उदाहरण है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व में विद्वता, जनसेवा और उच्च नैतिक मूल्यों का अद्भुत संगम था। आधुनिक भारत के कुछ ही नेताओं में इतने सारे गुण एक साथ देखने को मिलते हैं।

श्यामा प्रसाद जी का जन्म ऐसे परिवार में हुआ था, जहां उन्हें सुख-सुविधाओं से भरपूर जीवन आसानी से मिल सकता था। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी की गिनती अपने समय के महान शिक्षाविदों में होती थी। लेकिन तमाम सुविधाओं के बावजूद श्यामा प्रसाद जी ने त्याग और राष्ट्रसेवा का मार्ग चुना। उनका दृढ़ विश्वास था कि चाहे अंग्रेजी शासन का विरोध हो, सांप्रदायिकता से लड़ाई हो या मानवीय संकटों का सामना, वे अपने समय की इन चुनौतियों के सामने मूकदर्शक बनकर नहीं रह सकते। इस सफर में उन्हें कई गहरे व्यक्तिगत दुख भी झेलने पड़े। पहले उन्होंने अपने छोटे बच्चे को खोया और बाद में पत्नी का भी निधन हो गया। लेकिन इन दुखद परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने हौसले को कमजोर नहीं पड़ने दिया। उनका संकल्प और सशक्त हुआ, राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण और गहरा होता गया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का सबसे बड़ा उद्देश्य भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना था। देश के विभाजन के समय उन्होंने पश्चिम बंगाल को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ वर्षों बाद इसी उद्देश्य से उन्होंने जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर भी संघर्ष किया। जेल और नजरबंदी भी उन्हें रास्ते से डिगा नहीं सकी। जब नजरबंदी के दौरान उनका निधन हुआ, तब वे उन अनगिनत लोगों से बहुत दूर थे, जिनके लिए वे जीवन भर संघर्ष करते रहे। इतिहास में कुछ ऐसे पल आते हैं, जब किसी व्यक्ति का सर्वोच्च बलिदान राजनीति से ऊपर उठकर देश की स्मृति का हिस्सा बन जाता है। डॉ. मुखर्जी का बलिदान भी ऐसा ही था। आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि डॉ. मुखर्जी ने उस उद्देश्य के लिए अपना बलिदान दिया, जिस पर उन्हें पूरा विश्वास था। दशकों बाद, साल 2019 में आर्टिकल 370 और 35(A) को हटाया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि थी।

डॉ. मुखर्जी ने हमेशा राष्ट्रहित और भारतीय मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इसके लिए उन्होंने मजबूत संस्थानों का निर्माण किया और ऐसी व्यवस्थाएं बनाईं, जो उस समय की सोच से काफी आगे थीं। वे कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने। उन्होंने शिक्षा व्यवस्था में ऐसे बदलाव किए, जो राष्ट्रहित और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप थे। शिक्षाविदों के एक सम्मेलन में डॉ. मुखर्जी ने कहा था, ''शिक्षण संस्थानों को केवल बाबू या कम वेतन वाले कर्मचारी तैयार करने की फैक्ट्री समझना गलत है। हमें विद्यार्थियों को ऐसे तैयार करना होगा ताकि वे नेतृत्व की भूमिका निभा सकें। हमारी स्वशासी संस्थाओं जैसे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन्स, प्रांतीय और केंद्रीय विधायिकाओं में बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए तैयार हो सकें। इसके साथ ही वे वित्त, व्यापार और उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी अपनी प्रतिभा दिखा सकें।''

कलकत्ता विश्वविद्यालय में अपने नेतृत्व में उन्होंने कई महत्वपूर्ण कार्य किए। इनमें लाइब्रेरी की सुविधाओं में सुधार, विज्ञान में रिसर्च को बढ़ावा देना, ऐतिहासिक वस्तुओं के अध्ययन को प्रोत्साहित करना और कृषि से जुड़े पाठ्यक्रम शुरू करना शामिल था। उन्होंने खेलकूद, टीचर्स ट्रेनिंग और स्टूडेंट वेलफेयर जैसे क्षेत्रों पर भी विशेष ध्यान दिया। विद्यार्थियों में अपनी यूनिवर्सिटी के प्रति गर्व की भावना विकसित हो, इसके लिए उन्होंने 24 जनवरी को विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस मनाने की परंपरा शुरू की। उन्होंने गुरुदेव टैगोर से विश्वविद्यालय के लिए एक गीत लिखने का अनुरोध भी किया था।

उनके जीवन के बाद के वर्षों में इस भावना का एक और उदाहरण तब देखने को मिला, जब उन्होंने भारतीय जनसंघ बनाने का निर्णय लिया। उस समय देश में हर तरफ कांग्रेस पार्टी का ही बोलबाला था। ऐसे में उन्होंने महसूस किया कि देश को एक ऐसे नए विकल्प की बहुत जरूरत है, जो भारत की प्रगति की बात भी करे और हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा रहे। शायद इसी को ध्यान में रखते हुए पार्टी का चुनाव चिह्न ''दीपक'' यानि मिट्टी का दीया रखा गया। एक अकेला दीया देखने में भले ही छोटा लगे, लेकिन उसमें अपने आस-पास के गहरे से गहरे अंधकार को मिटाने की अद्भुत शक्ति होती है। जनसंघ ने अपने सक्रिय काल में और उसके बाद भी बिल्कुल यही किया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का भारत के पहले उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री के रूप में कार्यकाल बेहद अहम रहा। उन्हें एक ऐसे राजनेता के रूप में याद किया जाता है, जिनका विजन बहुत विराट था। वे उद्योग को नए-नए आजाद हुए भारत के लोगों में सम्मान, अवसर और आत्मविश्वास का संचार करने का सशक्त माध्यम मानते थे। वे वेल्थ और वैल्यू क्रिएशन के महत्व को भली-भांति समझते थे। उन्होंने दामोदर वैली कॉरपोरेशन, सिंदरी उर्वरक संयंत्र और मजबूत औद्योगिक नीति जैसी ऐतिहासिक पहल की। इसके माध्यम से आधुनिक औद्योगिक भारत की नींव रखी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि भारत के पारंपरिक सामर्थ्य की कभी उपेक्षा न हो। वे हथकरघा, कुटीर उद्योग, कारीगरों और कपड़ा उद्योग से जुड़े श्रमिकों के हितों के भी प्रबल समर्थक थे।

आत्मनिर्भर भारत के स्पष्ट विजन के साथ जिस सिंदरी संयंत्र की स्थापना के लिए डॉ. मुखर्जी ने अथक प्रयास किए थे, उसकी कई दशकों तक सत्ता में रहने वाले लोगों ने घोर उपेक्षा की। हमारी सरकार को उसके पुनरुद्धार का सौभाग्य मिला। उस कार्यक्रम में उपस्थित होना मेरे सार्वजनिक जीवन के सबसे विशेष और अविस्मरणीय क्षणों में से एक बन गया।

भारत की प्राचीन परंपरा सदियों से संवाद और विचार-विमर्श का सम्मान करती आई है। डॉ. मुखर्जी इस लोकतांत्रिक भावना के सशक्त प्रतीक थे। उन्होंने पंडित नेहरू के मंत्रिमंडल में शामिल होना इसलिए स्वीकार किया, क्योंकि वे मानते थे कि देश की आजादी के शुरुआती वर्षों में राष्ट्र निर्माण का दायित्व राजनीतिक मतभेदों से कहीं ऊपर है। उन्होंने पूरी निष्ठा और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ अपनी जिम्मेदारियों को निभाया। लेकिन जब उन्हें लगा कि राष्ट्रीय महत्व के कुछ प्रश्नों पर देशहित में अलग मार्ग अपनाना आवश्यक है, तो उन्होंने पूरी गरिमा के साथ अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन उस राजनीतिक लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पित कर दिया, जिसे वे राष्ट्र के लिए आवश्यक मानते थे।

75 वर्ष पहले पंडित नेहरू पहला संविधान संशोधन लेकर आए। इसे अभिव्यक्ति की आजादी पर सीधा प्रहार माना गया। तब डॉ. मुखर्जी इसके सबसे मुखर आलोचक रहे थे। वे भली-भांति समझ चुके थे कि कांग्रेस किस हद तक जा सकती है। समय के साथ उनकी यह आशंका सही साबित हुई। जो पार्टी 75 वर्ष पहले पहला संविधान संशोधन लेकर आई थी, उसी ने 1975 में देश पर आपातकाल थोपा। इतना ही नहीं, 50 वर्ष पहले 42वां संविधान संशोधन अधिनियम लाकर एक बार फिर लोकतांत्रिक मूल्यों की बुनियाद पर कुठाराघात किया।

डॉ. मुखर्जी अपनी मानवीय संवेदनाओं और सेवाभाव के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं। वर्ष 1943 में जब बंगाल भीषण अकाल की त्रासदी से जूझ रहा था, तब उन्होंने पीड़ितों की सेवा में स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया था। उन्होंने यह भी सुनिश्चित किया कि लोगों को भोजन मिल सके, जिसके लिए कई कैंटीन और रिलीफ सेंटर शुरू किए गए। एक ओर वे लोगों की पीड़ा से बहुत व्यथित थे, वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश हुकूमत की असंवेदनशीलता से अत्यंत आक्रोशित भी थे। उन्होंने अपनी पीड़ा को व्यक्त करने के लिए पंचाशेर मन्वंतर नाम की एक किताब भी लिखी। 1942 में जब मेदिनीपुर में भीषण चक्रवात आया, तब उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में राहत कार्यों का नेतृत्व किया।

कोलकाता के एक कॉलेज में युवाओं को संबोधित करते हुए डॉ. मुखर्जी ने उनसे आग्रह किया था, ''आप जो भी कार्य करें, उसे पूरी गंभीरता, लगन और ईमानदारी से करें। किसी भी काम को कभी अधूरा न छोड़ें। तब तक स्वयं को संतुष्ट न मानें, जब तक आपने उसमें अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान न दे दिया हो।'' आज हमारा देश विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है। ऐसे में उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम प्रतिदिन उस भारत के निर्माण की दिशा में निरंतर प्रयास करें, जिसकी उन्होंने परिकल्पना की थी। एक ऐसा भारत जो सशक्त हो, एकजुट हो, आत्मविश्वास से भरपूर और संवेदनशील हो। देश के युवाओं पर मुझे पूरा विश्वास है कि वे इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए बढ़-चढ़कर भागीदारी करेंगे और इस संकल्प को साकार करने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ जुट जाएंगे। ■

डॉ. मुखर्जी जी प्रेरणा के स्त्रोत हैं -नितिन नवीन

- कांग्रेस के दौर में जम्मू-कश्मीर का युवा पत्थरबाज कहलाता था, आज वही युवा रणजी ट्रॉफी विजेता बन कर नए भारत की पहचान बन रहा है।
- ऑपरेशन सिंदूर से नए भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि माताओं-बहनों के सम्मान, राष्ट्र की सुरक्षा और जम्मू-कश्मीर की अखंडता पर हमला करने वालों को करारा जवाब दिया जाएगा।
- कांग्रेस ने जम्मू-कश्मीर को तुष्टिकरण, अलगाववाद और पत्थरबाजी की राजनीति में धकेला, जबकि भाजपा ने सुरक्षा, विकास, पर्यटन और रोजगार का नया दौर शुरू किया।

आज यदि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है तो उसके पीछे श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का त्याग और बलिदान है।

मोदी जी ने धारा 370 और 35ए हटाकर ''एक देश, एक विधान, एक प्रधान, एक निशान'' के संकल्प को साकार किया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी जनसंघ से लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में नहीं, बल्कि सभी के पथप्रदर्शक के रूप में प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता, चाहे वह सबसे निचले पायदान पर बैठा हो या मंच पर, समान रूप से महत्वपूर्ण होता है। भाजपा को ताकत उन कार्यकर्ताओं से मिलती है, जो अंतिम बूथ पर और अंतिम पायदान पर रहकर भी भाजपा के कमल को खिलाने के संकल्प को पूरा करने का कार्य करते हैं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जम्मू-कश्मीर के लिए संघर्ष करते हुए अपने जीवन का बलिदान दिया। जम्मू-कश्मीर के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जो सपना देखा था, उसे साकार करने का कार्य यदि किसी ने किया है, तो वह भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने किया है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने 'एक विधान, एक प्रधान और एक निशान' का सपना देखा था, उसे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने साकार किया।

1953 में श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने बलिदान दिया था, 70 वर्ष पहले जिस व्यक्ति ने जो संकल्प लिया था और जो सपना देखा था, उसकी वास्तविक स्थिति क्या थी?

वर्ष 2014 में जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश के प्रधानमंत्री बने, तो वही कश्मीर का लाल चौक तिरंगे से लहराता हुआ दिखाई देने लगा। यही जम्मू-कश्मीर के बदले हुए माहौल का प्रमाण है।

वर्ष 2019 में जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अनुच्छेद 370 और अनुच्छेद 35ए को समाप्त किया, तब जम्मू-कश्मीर के लोगों को वास्तविक आजादी मिली। श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का जो सपना था, उसे पूरा करने का कार्य यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। यह भारतीय जनता पार्टी के प्रत्येक कार्यकर्ता के संकल्प की पूर्ति का क्षण था।

पश्चिम बंगाल में भी जिस प्रकार संघर्ष हुआ और जिस प्रकार लोगों ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी बाहर की पार्टी है, उसके बावजूद जिस भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य का जन्म स्थान कोलकाता था, वहां भी भाजपा का भगवा स्थापित हुआ। आज भाजपा का कमल का निशान वहां पूरी मजबूती के साथ आगे बढ़ रहा है और विकास के पैमाने को आगे बढ़ा रहा है।

यदि दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की

सरकार नहीं होती, तो आज भी जम्मू-कश्मीर का युवा स्टोन पेल्टर के रूप में जाना जाता, न कि रणजी विजेता के रूप में। आज पूरे देश में भारत के युवाओं की चर्चा होती है और पूरे विश्व में भी भारत के युवाओं का गौरव बढ़ रहा है। 2014 से पहले कश्मीर के युवाओं को स्टोन पेल्टर कहा जाता था। अब क्रिकेट के मैदान में जम्मू-कश्मीर के युवाओं ने अपना दमखम दिखाया और रणजी विजेता के रूप में पूरे जम्मू-कश्मीर का सम्मान बढ़ाया। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सपना है, जिन्होंने खेलों को बढ़ावा देने के साथ-साथ खेल के माध्यम से शांति और सौहार्द को भी आगे बढ़ाया।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी मात्र 33 वर्ष की आयु में कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बने थे। वर्ष 1937 में जब गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने पहली बार कोलकाता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के स्थान पर बंगाली भाषा में संबोधन किया, तो यह संभव इसलिए हो पाया क्योंकि उस समय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी थे। अपनी मातृभाषा और मातृभूमि का सम्मान करने का कार्य डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने प्रारंभ से ही अपने संकल्प का हिस्सा बनाया था। जब देश में पहली सरकार बनी और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को देश के प्रथम उद्योग मंत्री के रूप में दायित्व मिला, तब उन्होंने देश को औद्योगिक विकास की नई दिशा देने का कार्य किया। चित्तरंजन लोकोमोटिव कारखाना, सिंदरी का खाद कारखाना तथा हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट फैक्ट्री जैसे उद्योगों की स्थापना में सबसे पहले पहल करने का कार्य भी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने किया। 1950 के दशक में भी उनकी सोच यह थी कि देश में औद्योगिक विकास के साथ-साथ अपनी विरासत और संस्कृति को भी सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लगातार युवाओं के लिए 'मेक इन इंडिया' की बात करते हैं और उसे आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। 'मेक इन इंडिया' जैसी सोच की परिकल्पना भी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने वर्ष 1948 में अपने वक्तव्य में की थी।

देश को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी जैसे महान विचारक मिले, जिन्होंने एक भारत और श्रेष्ठ भारत की कल्पना की। यदि किसी ने पश्चिम बंगाल को बचाने का कार्य किया, तो वह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने किया।

अन्यथा कांग्रेस के लोगों ने उस समय पश्चिम बंगाल को बांग्लादेश के साथ जोड़ने का काम किया होता। एक ओर जहां सभी उनके संघर्ष और बलिदान को याद कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर सभी को उससे प्रेरणा लेकर यह संकल्प भी लेना चाहिए कि आने वाले समय में जम्मू-कश्मीर को किस दिशा में आगे बढ़ाना है। हमें मालूम है कि जम्मू में भारतीय जनता पार्टी को लगातार समर्थन और लोगों का आशीर्वाद मिलता रहा है, लेकिन यह भी सत्य है कि जम्मू-कश्मीर में अभी भी संघर्ष और संकल्प का दौर बाकी है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जिस प्रकार पूरा देश विकास के नए पैमाने स्थापित कर रहा है, उसी का परिणाम है कि आज देश के 25 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर लाया जा सका है, जिसमें जम्मू-कश्मीर के अनेक परिवार भी शामिल हैं।

अनुच्छेद 370 के कारण ऐसी व्यवस्था बना दी गई थी, जिससे यहां के लोगों का भला नहीं हो रहा था और उन्हें विकास का लाभ नहीं मिल पा रहा था। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकास के अनेक नए पैमाने स्थापित किए और अब जम्मू-कश्मीर भी विकास के मानकों पर अग्रणी राज्यों की भूमिका में आगे बढ़ रहा है। भाजपा चाहती है कि जम्मू-कश्मीर की माताएं और बहनें सुरक्षित तथा व्यवस्थित जीवन जीते हुए आगे बढ़ें। पार्टी चाहती है कि जम्मू-कश्मीर का युवा केवल रोजगार लेने वाला ही नहीं, बल्कि रोजगार देने वाला भी बने। युवा सभी मिलकर जम्मू-कश्मीर की मिट्टी की रक्षा करें और उस सपने को साकार करें, जिसे श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने देखा था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान और उनके जीवन-संघर्ष से प्रत्येक युवा को सीख लेने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने जीवनकाल में जिस प्रकार राष्ट्रहित के लिए संघर्ष किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर को भी विकास के पैमानों से जोड़ा, जिसका सबसे बड़ा लाभ यहां के गरीब परिवारों को मिला।

दिल्ली में बैठी सरकार जम्मू-कश्मीर के विकास के प्रति पूरी तरह संकल्पित है। यहां की सरकार की नीतियां आज भी दोहरे मानदंडों पर आधारित हैं और जम्मू तथा कश्मीर के प्रति उसकी सोच अलग-अलग रहती है। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की प्रेरणा से कार्य करता है। कश्मीर की वादियों में भी आज नहीं तो कल भाजपा का कमल अवश्य खिलेगा और जम्मू तथा कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी और अधिक मजबूत होगी। संघर्ष अभी भी जारी है, लेकिन भाजपा ने कभी विकास को धर्म के आधार पर नहीं देखा। पार्टी ने हमेशा यह माना कि जो भी गरीब है, वह भारत का नागरिक है और उसके विकास की चिंता करना सरकार की जिम्मेदारी

झुक नहीं सकते

अटल बिहारी वाजपेयी

टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

सत्य का संघर्ष सत्ता से,
न्याय लड़ता निरंकुशता से,
अँधेरे ने दी चुनौती है,
किरण अन्तिम अस्त होती है।

दीप निष्ठा का लिये निष्कम्प,
वज्र टूटे या उठे भूकम्प,
यह बराबर का नहीं है युद्ध,
हम निहत्थे, शत्रु है सन्नद्ध,
हर तरह के शस्त्र से है सज्ज,
और पशुबल हो उठा निर्लज्ज।

किन्तु फिर भी जूझने का प्रण,
पुनः अंगद ने बढ़ाया चरण,
प्राण-पण से करेंगे प्रतिकार,
समर्पण की माँग अस्वीकार।

दाँव पर सब कुछ लगा है,
रुक नहीं सकते।
टूट सकते हैं मगर हम झुक नहीं सकते।

है। विकास के पैमाने पर प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ने का कार्य किया गया है। यदि तीन तलाक की प्रथा को समाप्त किया गया, तो उसका उद्देश्य मुस्लिम बहनों को स्वावलंबी और सुरक्षित जीवन प्रदान करना था। देश के सामने अभी भी कई बड़े लक्ष्य शेष हैं। वर्तमान में जिस प्रकार की परिस्थितियां पैदा की जा रही हैं और जिस प्रकार की व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जा रहा है, उसे देखते हुए हमारा मानना है कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए आने वाले 20 वर्ष भी संघर्ष के वर्ष होंगे। यदि वर्ष 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करना है और विकसित भारत का निर्माण देखना है, तो भाजपा को भी उसी प्रकार मजबूती के साथ खड़ा करना होगा।

भाजपा के पूर्व वरिष्ठ नेताओं ने अपने संघर्ष, बलिदान और परिश्रम के बल पर भारतीय जनता पार्टी को इतना व्यापक विस्तार दिया है। अब वर्तमान पीढ़ी को भी अपने समय का संघर्ष करना होगा। भारतीय जनता पार्टी को और अधिक मजबूत बनाने के लिए कार्यकर्ताओं को जनता के साथ सीधे संवाद स्थापित करना होगा। तभी वर्ष 2047 तक भारतीय जनता पार्टी को और अधिक मजबूती के साथ खड़ा किया जा सकेगा और विकसित भारत के संकल्प को साकार किया जा सकेगा। भारतीय जनता पार्टी ने देश की जनता के दिलों में उतरकर और उनसे जुड़कर कार्य किया है। इसी का परिणाम है कि देश के विभिन्न राज्यों में पार्टी को लगातार सफलता मिल रही है। भाजपा के सभी कार्यकर्ता अपना संघर्ष जारी रखें, जनता के साथ संवाद बनाए रखें और केंद्र सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प निरंतर निभाते रहें। वह दिन दूर नहीं, जब जम्मू-कश्मीर में भारतीय जनता पार्टी की अपनी सरकार बनेगी। हमने वह समय भी देखा है, जब लोग जम्मू-कश्मीर आने से डरते थे। लेकिन आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जब-जब अवसर मिला, उन्होंने जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा के प्रति अपनी पहली जिम्मेदारी निभाई। कुछ समय पहले आतंकवादियों ने हमारी माताओं और बहनों का सिंदूर उजाड़ने का प्रयास किया था। इस पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्पष्ट किया कि यह पुराना भारत नहीं है। यह वह नया भारत है, जो अपनी माताओं और बहनों के सम्मान पर आघात करने वालों को मुंहतोड़ जवाब देता है। ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से भारत ने पाकिस्तान को उसकी औकात का एहसास कराया और उसे करारा जवाब दिया।

प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है। जब-जब इस देश के विरुद्ध नापाक इरादों से कार्य करने का प्रयास किया गया, तब-तब दिल्ली में बैठी यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने उसका करारा जवाब दिया। जनसंघ के काल में श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जो दीप जलाया था, वह विकास, विश्वास और सभी को साथ लेकर चलने का दीप था। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी उसी मूल मंत्र पर कार्य कर रहे हैं, जिसमें 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' शामिल है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी जम्मू-कश्मीर की सुरक्षा, विकास और उसकी विरासत को आगे बढ़ाने के प्रति पूरी तरह संकल्पित है। भारतीय जनता पार्टी जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग मानती है और अब इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। कुछ दिन पहले कांग्रेस के कुछ नेताओं ने इस विषय पर बयान दिए थे। कांग्रेस के वे दिन अब लौटने वाले नहीं हैं। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 हमेशा के लिए समाप्त हो चुका है और अब कोई भी उसे दोबारा जीवित करने का प्रयास सफल नहीं कर सकता। केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने भी स्पष्ट शब्दों में कहा है कि जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है और उसकी रक्षा के लिए यदि खून की एक-एक बूंद भी बहानी पड़े, तो हम उससे पीछे नहीं हटेंगे।

भाजपा के सभी कार्यकर्ता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की जयंती पर यह संकल्प लें कि जिस विश्वास के साथ उन्होंने जनसंघ की स्थापना की थी, उसी विश्वास को हम आगे बढ़ाएंगे। पार्टी के नेता एक भारत-श्रेष्ठ भारत की कल्पना को आगे बढ़ा रहे हैं, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के अंत्योदय के सपने को साकार कर रहे हैं और श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी के सुशासन के मॉडल को आगे बढ़ा रहे हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एक भारत-श्रेष्ठ भारत, अंत्योदय और सुशासन के इन तीनों मूल मंत्रों को आत्मसात करते हुए वर्ष 2047 तक विकसित भारत के सपने की दिशा में देश को आगे ले जा रहे हैं। यह सपना श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के सपनों को साकार करने वाला होगा। ▪

डॉ. मुखर्जी के बताये मार्ग पर बढ़ रहे हैं - जे. पी. नड्डा

- **डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने पद से अधिक राष्ट्रहित और सिद्धांतों को महत्व दिया। उन्होंने अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया और आवश्यकता पड़ने पर मंत्री पद तक त्याग दिया।**
- **जनसंघ से लेकर आज भाजपा के विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने तक का सफर कार्यकर्ताओं और राष्ट्रवादी विचारधारा की शक्ति का प्रमाण है।**
- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अनुच्छेद 370 को हटाकर, सीएए लागू कर, नई शिक्षा नीति तथा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के माध्यम से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपनों को साकार किया।**

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का कर्तृत्व केवल इतिहास नहीं है, बल्कि वह जीवन की एक दृष्टि है। उन्होंने 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के संकल्प के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित किया। हम जिस पार्टी के सदस्य हैं, उसके संस्थापक अध्यक्ष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ही थे। उन्होंने ही 21 अक्टूबर, 1951 को इस विचारधारा के साथ भारतीय जनसंघ की स्थापना की। जिस पौधे की जड़ों को उन्होंने सींचा और उसे विकसित किया, वही आज आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है। आज भारतीय जनता पार्टी और एनडीए देश की लगभग 78 प्रतिशत जनसंख्या पर शासन कर रहे हैं। साथ ही, देश के लगभग 72 प्रतिशत भू-भाग पर एनडीए और भारतीय जनता पार्टी का कमल खिला हुआ है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी एक विचार हैं, उसका आशय यह है कि वे सांस्कृतिक विरासत, आत्मनिर्भर भारत तथा भारत की एकता और अखंडता के लिए समर्पित विचार के साथ आगे बढ़ने वाले व्यक्तित्व थे। हम सभी को इस बात का गौरव होना चाहिए कि जिस पार्टी के हम सदस्य और कार्यकर्ता हैं, उसके प्रथम अध्यक्ष और संस्थापक, जिन्होंने इस पार्टी की स्थापना की, उनका परिवार और उनका स्वयं का कर्तृत्व कितना महान था। उनके संस्कार आज भी हमारी पार्टी में रचे-बसे हैं। यह जानकर सभी को आश्चर्य, प्रसन्नता और गौरव का अनुभव होगा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी किसी साधारण परिवार में जन्मे नहीं थे। वे डॉ. आशुतोष मुखर्जी के सुपुत्र थे। डॉ. आशुतोष मुखर्जी अपने जीवनकाल में कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश भी रहे और कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। कुलपति के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के सामने यह स्पष्ट कहा था कि अंग्रेज और भारतीय प्रोफेसरों के वेतन तथा सुविधाओं में कोई अंतर नहीं रहेगा। उन्होंने उसी समय भारतीयता का बीज बोया था। उन्होंने कुलपति रहते हुए यह भी कहा था कि कलकत्ता विश्वविद्यालय में भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उन्हें आगे बढ़ाया जाना चाहिए। जिस पिता ने अंग्रेजों के शासनकाल में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्य किया, उसी विश्वविद्यालय में उनके सुपुत्र डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी 33 वर्ष की आयु में कुलपति बने और सबसे कम उम्र के कुलपति बने।

वर्ष 1934 में उन्होंने पहली बार दीक्षांत समारोह में भाषण देने के लिए रवीन्द्रनाथ टैगोर जी को आमंत्रित किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने पहली बार कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में अपनी मातृभाषा बंगाली में भाषण दिया और इस प्रकार एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की शुरुआत की। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी तीन बार विधानसभा के सदस्य रहे और पश्चिम बंगाल के वित्त मंत्री भी रहे। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बारे में एक बात हमें सदैव ध्यान रखनी चाहिए कि उन्होंने कभी पद को महत्व नहीं दिया, बल्कि विचार को सर्वोपरि रखा। जब-जब विचार और पद के बीच चुनने की स्थिति आई, तब-तब उन्होंने पद का त्याग किया और अपने विचारों के साथ दृढ़ता से खड़े रहे। हुसैन सुहरावर्दी की सरकार ने उस समय, जब पश्चिम और पूर्व बंगाल एक साथ थे, यह योजना बना ली थी कि विभाजन के समय पूरा बंगाल पाकिस्तान के साथ जाएगा। उस समय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जन

आंदोलन चलाया और स्पष्ट कहा कि वे ऐसा कभी नहीं होने देंगे। आज का पश्चिम बंगाल डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की ही देन है। यदि ऐसा न हुआ होता, तो कांग्रेस ने यह मान लिया था कि पूरा बंगाल पूर्वी पाकिस्तान के साथ चला जाएगा। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने कहा था कि 'जब बंगाल के 45 प्रतिशत हिंदुओं को मुस्लिम लीग का गुलाम बनाने की तैयारी की जा रही है, तब यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने लिए ऐसी भूमि की मांग करें, जहाँ हम सम्मान के साथ रह सकें। मैं कांग्रेस और विशेष रूप से नेहरू से पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने मुस्लिम लीग को खुश करने के लिए बंबई और सिंध के विभाजन को स्वीकार नहीं किया था?'

क्या आपने मुस्लिम लीग के तुष्टिकरण और उसे खुश करने के लिए मुंबई और सिंध का विभाजन स्वीकार नहीं किया था? ऐसे में यदि आज हम बंगाल की बात कर रहे हैं, तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। आज जिस बंगाल को पश्चिम बंगाल कहा जाता है, वह इसलिए है क्योंकि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने स्पष्ट कहा था कि बंगाल का पश्चिमी भाग, जहाँ हिंदुओं की बहुसंख्या है, भारत का हिस्सा रहना चाहिए। इसी कारण पश्चिम बंगाल का निर्माण हुआ। आज का पश्चिम बंगाल उनकी ही देन है। यह भी खुशी की बात है कि उनकी 125वीं जन्म जयंती के अवसर पर उसी पश्चिम बंगाल में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में कमल खिला है। इससे बड़ी श्रद्धांजलि शायद कोई और नहीं हो सकती थी कि पश्चिम बंगाल की जनता ने वहाँ भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाई। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की औद्योगिक नीति दूरदर्शी थी और वे एक कुशल प्रशासक थे। वे एक महान शिक्षाविद् भी थे। वे कुलपति बने और उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे विधायक बने, मंत्री बने, लेकिन अपने विचारों से कभी समझौता नहीं किया और आवश्यकता पड़ने पर पद भी छोड़ दिया। वर्ष 1947 में जब पंडित नेहरू ने उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किया और मंत्री बनाया, तब उन्होंने एक वर्ष के भीतर ही देश के लिए औद्योगिक नीति प्रस्तुत कर दी। आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जिस आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के लिए दिन-रात कार्य कर रहे हैं, उसकी नींव डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने वर्ष 1948 में ही रख दी थी।

मात्र दो-तीन वर्षों के भीतर, वर्ष 1950 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने इस्तीफा भी दे दिया। आजादी के केवल तीन वर्षों के भीतर ही चित्तरंजन लोकोमोटिव, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, बेंगलुरु, सिंदरी फर्टिलाइजर, दामोदर वैली कॉर्पोरेशन, हीराकुंड डैम और भिलाई स्टील प्लांट जैसी महत्वपूर्ण परियोजनाओं की नींव डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने रख दी थी। यह उनकी दूरदृष्टि थी और वे एक कुशल प्रशासक थे। वर्ष 1950-51 में जब लियाकत अली और जवाहरलाल नेहरू के बीच समझौता हुआ, तब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने स्पष्ट कहा था, 'तुम गलत कर रहे हो।' उन्होंने संसद में यह भी कहा था, 'यह लोकतंत्र नहीं, बल्कि तानाशाही है। तुम गलत कर रहे हो, यह हम नहीं होने देंगे।' उस समय नेहरू-लियाकत समझौते के अनुसार यह तय हुआ था कि तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू भाइयों को सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार मिलेगा, लेकिन लियाकत अली के समय में ही पूर्वी पाकिस्तान में इस समझौते की धज्जियां उड़ गईं। इससे नाराज होकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जवाहरलाल नेहरू की मंत्रिपरिषद से इस्तीफा दे दिया। इसी प्रकार धारा 370 के मुद्दे पर भी, जब जवाहरलाल नेहरू इसे लागू करना चाहते थे, तब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने इसका विरोध करते हुए कहा था, ''यह तुम्हारी तुष्टिकरण की नीति है, इससे देश मजबूत नहीं होगा, मैं तुम्हारे कैबिनेट से इस्तीफा देता हूँ।'' इसके बाद उन्होंने मंत्रिपरिषद से इस्तीफा दे दिया। कांग्रेस पार्टी के विरुद्ध एक सशक्त विपक्ष की आवश्यकता थी और इसी उद्देश्य से डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की। वर्ष 1952 के चुनाव में भारतीय जनसंघ के केवल तीन सांसद निर्वाचित होकर आए, जिनमें स्वयं डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी दक्षिण कलकत्ता से निर्वाचित हुए थे। मात्र तीन सांसद होने के बावजूद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने 33 सांसदों को साथ लेकर नेशनल डेमोक्रेटिक पार्टी का गठन किया और विपक्ष के इन 33 सांसदों को एकजुट कर अपने कार्य की शुरुआत की।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने ''एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान नहीं चलेंगे'' का आह्वान किया था। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने जम्मू में जाकर कहा था, ''जम्मू वालों, तुमको मैं विश्वास दिलाता हूँ कि तुमको एक संविधान दूँगा और अगर नहीं दूँगा तो अपना बलिदान दूँगा।'' इस प्रकार डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने इस उद्देश्य के लिए अपनी यात्रा प्रारंभ की। वर्ष 1951 से लेकर 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान के बाद लगातार यह नारा लगाया जाता रहा, ''जहाँ बलिदान हुए मुखर्जी, वो कश्मीर हमारा है और वो कश्मीर सारे का सारा है।'' चार पीढ़ियाँ बीत गईं और लगातार यह नारा गूंजता रहा कि ''एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो संविधान नहीं चलेगा।'' 5 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की इच्छाशक्ति ने धारा 370 को धाराशायी कर दिया। इसके बाद जम्मू-कश्मीर में एक निशान, एक विधान, एक संविधान और एक प्रधान की व्यवस्था लागू हो गई।

जिन उद्देश्यों के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने अपना बलिदान दिया था, उन्हें अक्षरशः पूरा करने का कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का मानना था कि पूर्वी पाकिस्तान में धार्मिक उत्पीड़न नहीं होना चाहिए, लेकिन उस समय कांग्रेस मौन रही और तुष्टिकरण की नीति अपनाती रही। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) लेकर आए। इसके तहत बांग्लादेश, पाकिस्तान और अफगानिस्तान से धार्मिक उत्पीड़न के कारण भारत आए लोगों को नागरिकता देने का अधिकार प्रदान किया गया और इस प्रकार डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के सपने को पूरा किया गया। इसी प्रकार आत्मनिर्भर भारत की जिस नींव को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने रखा था, उसे साकार करने का कार्य 'मेक इन इंडिया', पीएलआई योजना, रक्षा विनिर्माण तथा सेमीकंडक्टर निर्माण जैसी पहलों के माध्यम से किया गया है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड की स्थापना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने की थी और आज वहीं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में रक्षा क्षेत्र के विमान बनाए जा रहे हैं। इस प्रकार भारत निरंतर बदलते हुए आगे बढ़ रहा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का स्पष्ट मत था कि शिक्षा भारतीय भाषाओं में होनी चाहिए। आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मातृभाषा में शिक्षा की व्यवस्था लागू की है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी का मानना था कि शिक्षा सभी के लिए उपलब्ध (Available), वहनीय

(Affordable), सुलभ (Accessible) और लचीली (Flexible) होनी चाहिए। इन सभी उद्देश्यों को भी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नई शिक्षा नीति के माध्यम से पूरा किया है। एक नजर से देखो सबको, किसी के साथ भेदभाव नहीं करो। कांग्रेस पार्टी जवाहरलाल नेहरू के टाइम से लेकर और इंदिरा गांधी के टाइम तक और मनमोहन सिंह के टाइम तक हमेशा तुष्टिकरण पर चलती रही। जो गलतियाँ वक्फ बोर्ड में हो रहा था, उस वक्फ बोर्ड को भी नियम बदल करके उसको भी कानून को सबके लिए बराबर करने का काम मोदी सरकार ने किया।

जब हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को याद करते हैं, तो दो बातों का संतोष होता है। पहली, जिन उद्देश्यों के लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया, उन सभी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अक्षरशः लागू किया है। दूसरी, उनसे जो प्रेरणा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की मिली है, उसे भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता साकार करने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हुए विकसित भारत के संकल्प को आगे बढ़ा रहा है। यह संकल्प आज पूरा होता हुआ दिखाई दे रहा है।

जब हम डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को स्मरण करते हैं, तो हमें इस बात का गौरव होना चाहिए कि वे हमारे संस्थापक थे, जिन्होंने देश को एक दिशा दी और पार्टी को भी एक स्पष्ट दिशा प्रदान की। यह भी हमारे लिए गर्व का विषय है कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में न केवल पार्टी, बल्कि पूरा देश उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की 125वीं जन्म जयंती पर उन्हें यही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है और उसी दिशा में प्रयास किया गया है। आज का दिन यह संकल्प लेने का है कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी ने देशवासियों से जिस कार्य की अपेक्षा की थी और जिसके लिए उन्होंने अपना बलिदान दिया, उसे हम समर्पित भाव से अपने जीवन का संकल्प बनाएँ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आह्वान पर आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के निर्माण में कोई कसर न छोड़ी जाए तथा अपना एक-एक पल, एक-एक दिन और एक-एक क्षण समर्पित किया जाए। यही डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

मोदी जी को अंतर्राष्ट्रीय समान मिला - डॉ. मोहन यादव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को इंडोनेशिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''बिंटांग आदिपूर्णा ऑफ द रिपब्लिक ऑफ इंडोनेशिया'' से सम्मानित किया जाना प्रत्येक भारतीय के लिए गौरवमयी क्षण है। यह प्रतिष्ठित सम्मान प्रधानमंत्री श्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व, भारत की बढ़ती वैश्विक प्रतिष्ठा और भारत-इंडोनेशिया के सुदृढ़ सामरिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों का सशक्त प्रमाण है। प्रधानमंत्री श्री मोदी द्वारा इंडोनेशियाई संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित किया जाना भारत के लिए गर्व का विषय है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में बीते कु छ समय में भारत और इंडोनेशिया के संबंधों में एक नई ऊर्जा, नया विश्वास और नई गहराई आई है। हम विकास, सुरक्षा, तकनीक, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम बढ़ा रहे हैं।

पिछले वर्ष जब कश्मीर के पहलगाम में जघन्य आतंकवादी हमला हुआ था तब इंडोनेशिया भारत के साथ मजबूती से खड़ा रहा। ■

भारत की विश्व में विशेष पहचान - डॉ. मोहन यादव

- **डॉ. मुखर्जी का राष्ट्रवादी चिंतन आज भी देश को दिशा दे रहा है।**
- **प्रदेश की भाजपा सरकार समान नागरिक संहिता लागू करने की दिशा में अग्रसर।**
- **डॉ. मुखर्जी के एक देश, एक विधान, एक निशान, एक प्रधान के संकल्प को साकार कर रहे।**
- **हर क्षेत्र में तेजी से विकास करते हुए आगे बढ़ रहा है मध्यप्रदेश।**
- **मध्यप्रदेश की धरती पर बनेंगे, रक्षा क्षेत्र के उपकरण, मिसाइल और हथियार।**
- **नेहरू द्वारा जम्मू-कश्मीर में धारा 370 लगाने का दंश देश ने वर्षों तक सहा।**
- **युग निर्माता डॉ. मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर की स्वायत्ता के लिए अपना बलिदान दे दिया।**
- **प्रधानमंत्री जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर डॉ. मुखर्जी का सपना पूरा किया।**
- **प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत 90 देशों को रक्षा उत्पाद निर्यात कर रहा है।**

देश के आजाद होने के बाद पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जम्मू-कश्मीर को विशेष सुविधाएं दीं, वह देश के लिए बहुत घातक सिद्ध हुई हैं। पंडित नेहरू द्वारा जम्मू-कश्मीर में धारा-370 लगाने का दंश देश ने वर्षों तक सहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाकर देश के मुकुटमणि पर लगा कलंक मिटाने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश तेजी से आर्थिक संपन्नता की ओर बढ़ रहा है। वर्ष 2014 के बाद देश में ऐतिहासिक बदलाव देखने को मिल रहे हैं। पहले जहां-तहां धमाके होते रहते थे, अब भारत दुश्मन को उसके घर में घुसकर मारता है, चाहे सर्जिकल स्ट्राइक हो या ऑपरेशन सिंदूर, सभी में भारत ने अपनी शक्ति का एहसास दुनिया को कराया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश आज 90 से अधिक देशों को रक्षा उत्पाद निर्यात कर रहा है। मध्यप्रदेश भी करवट ले रहा है, हमारे प्रदेश के शिवपुरी में रक्षा उत्पादन की बड़ी इकाई लगाई जा रही है। कई देशों की बड़ी कंपनियों ने मध्यप्रदेश में निवेश किया है और कई निवेश करने की प्रक्रिया में हैं। इस वर्ष एक जनवरी से 30 जून तक मध्यप्रदेश को 86 हजार करोड़ के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में भी देश की राजधानी दिल्ली के भारत मंडपम की तर्ज पर ऐतिहासिक कन्वेंशन सेंटर का भूमिपूजन होने जा रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत आज वैश्विक मंच पर नई पहचान बना रहा है। वर्तमान समय भारत के लिए स्वर्णिम काल है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश विकास, सुशासन और आत्मनिर्भरता की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। आज देश के अधिकांश राज्यों में भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की सरकारें जनसेवा और विकास के संकल्प के साथ कार्य कर रही हैं। कार्यकर्ता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के राष्ट्रवादी विचारों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाकर राष्ट्र निर्माण के इस अभियान को और अधिक सशक्त बनाएं।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी दूरदर्शी राष्ट्रनायक थे, जिन्होंने देश के भविष्य की चुनौतियों को समय रहते पहचाना और राष्ट्र की एकता, अखंडता एवं सांस्कृतिक अस्मिता के पक्ष में निर्भीकता से आवाज बुलंद की। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी मात्र 33 वर्ष की आयु में कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे कम उम्र के कुलपति बने। उन्होंने ब्रिटिश शासन की विभाजनकारी नीतियों का विरोध किया तथा बंगाल के विभाजन सहित राष्ट्रविरोधी षड्यंत्रों के खिलाफ निर्णायक संघर्ष किया। स्वतंत्रता के बाद उन्होंने केंद्र सरकार में उद्योग, आपूर्ति एवं अन्य महत्वपूर्ण दायित्व निभाए, लेकिन राष्ट्रहित के मुद्दों पर कभी समझौता नहीं किया। देश की रियासतों के विलय के समय डॉ. मुखर्जी ने स्पष्ट कहा था कि एक देश में दो विधान, दो निशान और दो प्रधान नहीं चल सकते। जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा दिए जाने का उन्होंने खुलकर विरोध किया और इसी मुद्दे पर

देश आगे बढ़ रहा है - हेमंत खण्डेलवाल

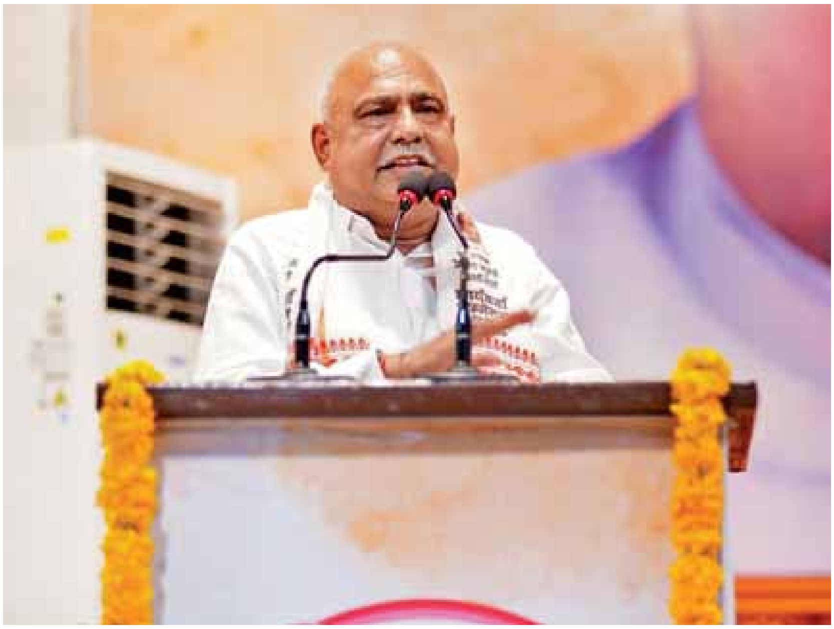

- **प्रधानमंत्री श्री मोदी जी डॉ. मुखर्जी के 'एक देश, एक विधान' की भावना को कर रहे साकार।**
- **भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता डॉ. मुखर्जी के सपनों को साकार करने के लिए समर्पित है।**
- **देश की एकता और अखंडता को मजबूत बनाने में डॉ. मुखर्जी का अहम योगदान है।**
- **डॉ. मुखर्जी के विचारों ने राष्ट्रवादी राजनीति की मजबूत नींव रखी।**
- **डॉ. मुखर्जी के बताए मार्ग पर चलकर भाजपा विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल बना।**
- **भाजपा के लिए बूथ केवल मतदान केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की इकाई है।**

भारतीय जनता पार्टी विचारधारा और कार्यकर्ता आधारित, अनुशासित संगठन है। भाजपा की सबसे बड़ी ताकत उसके संस्कार, विचार, कार्यपद्धति और समर्पित कार्यकर्ता हैं। मध्यप्रदेश के सभी 62 जिलों में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती के अवसर पर कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किए गए हैं, जिनके माध्यम से उनके राष्ट्रवादी विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

भाजपा के लिए बूथ केवल मतदान केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की इकाई है। पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता राष्ट्रहित, विचारधारा और संगठन को सर्वोपरि मानकर कार्य करता है। भाजपा की सबसे बड़ी पूंजी उसका समर्पित कार्यकर्ता है, जिसने अपने अथक परिश्रम और निष्ठा से पार्टी को विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन बनाया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति तक विकास की योजनाओं का लाभ पहुंचाया है। गरीबों को पक्के मकान, बिजली, बैंक खाते,

केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर भारतीय जनसंघ की स्थापना की। उनका संघर्ष भारत की अखंडता और संविधान की समानता के सिद्धांत के लिए था। डॉ. मुखर्जी का बलिदान देश की एकता और अखंडता के इतिहास में सदैव प्रेरणास्रोत रहेगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में धारा-370 और 35ए को समाप्त कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संकल्प को साकार किया गया। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर पूर्ण रूप से भारत की संवैधानिक व्यवस्था से जुड़ा और राष्ट्र की एकता को नई मजबूती मिली।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मार्गदर्शन में भारत ने सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति करते हुए विश्व में विशेष पहचान बनाई है। डॉ. मुखर्जी ने देश और समाज के सर्वांगीण विकास की कल्पना की। राज्य सरकार ने डॉ. मुखर्जी की जयंती के अवसर पर 15 दिवसीय जनकल्याण पखवाड़े की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत प्रदेश के सभी गरीब, जरूरतमंद और पात्र हितग्राहियों को योजनाओं का लाभ सुनिश्चित किया जा रहा है। राज्य सरकार युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए औद्योगिक विकास पर विशेष ध्यान दे रही है। इस दिशा में रोजगार के अवसर सृजित होने से हर वर्ग का कल्याण सुनिश्चित हो पा रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निर्देशानुसार दिल्ली में बना भारत मंडपम हमारे लिए एक आदर्श उदाहरण है। डॉ. मुखर्जी की जयंती पर भोपाल के सतगढ़ी में मध्यप्रदेश के सबसे बडे कन्वेंशन सेंटर और सतगढ़ी स्मार्ट इंडस्ट्रियल पार्क की आधारशिला रखी है। राज्य सरकार कुशाभाऊ ठाकरे सभागार के पास एक आधुनिक कन्वेंशन सेंटर तैयार कर रही है, जिसकी क्षमता 5 हजार सीट्स की रहेगी। सतगढ़ी में बनने वाले नए विशाल कन्वेंशन सेंटर में 10 हजार से अधिक व्यक्तियों की व्यवस्था है। भोपाल सबसे समृद्ध और सशक्त राजधानी बनने जा रहा है।

मध्यप्रदेश ने रक्षा क्षेत्र में नया इतिहास रचा है। अब रक्षा क्षेत्र के कई उपकरण, मिसाइल और हथियार मध्यप्रदेश की धरती पर बनेंगे। चंबल की धरती सालों से मां भारती की सेवा करने वाले वीर सैनिकों की भूमि रही है। अब यहां आधुनिक हथियार भी तैयार किए जाएंगे। यह मिसाइल एक हजार किलोमीटर तक दुश्मन के ठिकानों को ध्वस्त करने की क्षमता वाली होंगी। ■

आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधा सहित अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ मिला है। यही अंत्योदय का विचार भाजपा की कार्यशैली की पहचान है। कार्यकर्ता अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र सर्वोपरि, विचारधारा सर्वोपरि और संगठन सर्वोपरि के मूल मंत्र को आत्मसात करते हुए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने का कार्य करें।

एक देश, एक विधान की भावना को सबसे पहले डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने रखा था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के उस संकल्प को साकार किया जा रहा, जिसका सपना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश की एकता और अखंडता के लिए देखा था। आज पूरा देश उनकी राष्ट्रवादी सोच को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहा है। डॉ. मुखर्जी ने जिस संगठनात्मक आधार, कार्यपद्धति और राष्ट्रवादी विचारधारा की नींव रखी थी, आज भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता उसी विचारधारा के अनुरूप कार्य कर रहा है। हम सभी का दायित्व है कि उनके सपनों को साकार करने के लिए समर्पित भाव से कार्य करें। सरदार वल्लभभाई पटेल और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस अखंड और सशक्त भारत का सपना देखा था, उसे साकार करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। राष्ट्र की एकता, अखंडता और विकास की जिम्मेदारी हम सभी की है। जनसंघ की स्थापना के समय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने ऐसे राजनीतिक दल की कल्पना की थी, जो केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि राष्ट्रवाद, संगठन, संस्कार और विचारधारा पर आधारित हो। उनके द्वारा बोया गया राष्ट्रवाद का बीज आगे चलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेयी, कुशाभाऊ ठाकरे सहित अनेक नेताओं ने वटवृक्ष के रूप में विकसित किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर से धारा-370 और 35ए को समाप्त कर डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सपने को साकार किया गया। ■

अखंडता के लिए बलिदान

- शिवप्रकाश

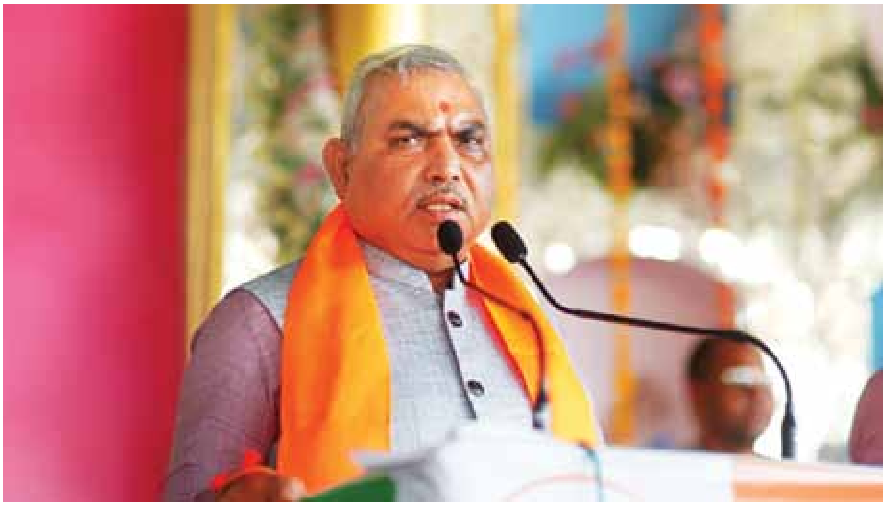

- **डॉ. मुखर्जी की दूरदृष्टि के कारण पश्चिम बंगाल भारत में है, पाकिस्तान दो टुकड़ों में बंटा रहा।**
- **डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जीवन हम सभी के लिए स्मरणीय व प्रेरणादायी है।**
- **डॉ. मुखर्जी के बलिदान के कारण जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बना।**
- **डॉ. मुखर्जी की बनाई उद्योग नीति का अवलोकन कर भारत आज विकसित राष्ट्र बन रहा।**

आजाद भारत में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली सर्वदलीय सरकार में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी उद्योग मंत्री बनाए गए थे। भारत आज जिस उद्योग नीति का अवलोकन कर विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है, वह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की बनाई उद्योग नीति है। डॉ. मुखर्जी ने छोटे उद्योगों, लघु उद्योगों और बड़े उद्योगों के विकास के लिए एक संस्था की स्थापना की थी, वह संस्था है उद्योग विकास निगम। देश को स्वावलंबी बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कार्य कर रहे हैं, वह कार्य डॉ. मुखर्जी ने ही शुरू किया था। डॉ. मुखर्जी ने भारत को स्वावलंबी बनाने के लिए हाथकरघा, व लघु उद्योगों की स्थापना का वृहद अभियान चलाया था। देश के आजाद होने के बाद भारत की शिक्षा प्रणाली को देश की भाषा में और रोजगारपरक बनाने के लिए भी डॉ. मुखर्जी ने कार्य किया, लेकिन जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए उनका बलिदान हो गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जो नेशनल एजुकेशन पॉलिसी लागू की गई है, उसे सबसे पहले डॉ. मुखर्जी ने ही लागू करने की योजना बनाई थी। वह अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे, 33 वर्ष की आयु में बंगाल के कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बन गए थे। पहले दीक्षांत समारोह अंग्रेजी में हुआ करते थे। डॉ. मुखर्जी ने रबीन्द्रनाथ ठाकुर टैगोर को कोलकाता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह का मुख्य अतिथि बनाकर बांग्ला भाषा में दीक्षांत समारोह आयोजित कराया। बांग्ला भाषा में रिसर्च की पुस्तकें प्रकाशित कराने के साथ भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने का कार्य भी उन्होंने आजादी के बाद देश में शुरू किया।

देश के आजाद होने के लिए लाखों की संख्या में लोगों ने बलिदान दिए, लेकिन देश के आजाद होने के बाद उसकी अखंडता को बनाए रखने के लिए पहला बलिदान देने वाले महापुरूष

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी थे। डॉ. मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाने के लिए अपना बलिदान दे दिया। पंडित जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिपरिषद से डॉ. मुखर्जी ने इस्तीफा देने के कई कारण हैं, उनमें सबसे बड़ा और पहला कारण था कि नेहरू सरकार बहुसंख्यक वर्ग की सुरक्षा और सम्मान के लिए कोई ठोस कार्य नहीं कर रही थी। डॉ. मुखर्जी ने अपने इस्तीफे में इस बात का उल्लेख किया है कि देश के बंटवारे के दौरान नेहरू-लियाकत समझौता जिसे दिल्ली पैक्ट भी कहा जाता है, उसका भारत तो पालन कर रहा था, लेकिन पाकिस्तान पालन नहीं कर रहा था। डॉ. मुखर्जी इस बात से नाराज थे कि पंडित नेहरू बहुसंख्यक समाज की सुरक्षा और सम्मान के लिए कोई कार्य नहीं कर रहे थे, सिर्फ अल्पसंख्यकों के हितों के कार्यों में लगे थे। नेहरू द्वारा जम्मू-कश्मीर में धारा 370 लगाना इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। देश के आजाद होने के बाद अंग्रेजों ने जो चालें चली थीं और देश में मुस्लिम लीग की बढ़ती ताकत के कारण आज के पश्चिम बंगाल को भी देश के बाहर ले जाने का बड़ा षड्यंत्र रचा जा रहा था। बंगाल के संप्रदाय विशेष के एक नेता ने कहा कि हम तो न पश्चिमी पाकिस्तान के साथ रहेंगे और न ही पूर्वी पाकिस्तान यानी बांग्लादेश के साथ रहेंगे। हम स्वतंत्र राज्य रहेंगे। डॉ. मुखर्जी समझ गए कि पश्चिम बंगाल को पहले अलग राज्य बनाने फिर पाकिस्तान के साथ विलय कर भारत को खंडित करने का षड्यंत्र किया जा रहा है। इसके बाद उन्होंने एक स्थानीय पार्टी के साथ होकर पश्चिम बंगाल को देश का अभिन्न अंग बनाए रखने में अहम योगदान दिया। डॉ. मुखर्जी अगर नहीं होते तो आज का पश्चिम बंगाल भारत में नहीं होता। बंगाल को देश से अलग करने के लिए एक दिन में दस हजार लोगों की हत्याएं कराई गई थीं, लेकिन डॉ. मुखर्जी की सूझबूझ और दूरदृष्टि से पश्चिम बंगाल भारत में है। ■

डॉ. मुखर्जी के विचार प्रेरणास्रोत - डॉ. महेन्द्र सिंह

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने एक भारत, श्रेष्ठ भारत की संकल्पना को साकार करने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए जो संघर्ष किया, वह भारतीय इतिहास में सदैव स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। उनका मानना था कि भारत की शक्ति उसकी सांस्कृतिक एकता, राष्ट्रीय चेतना और लोकतांत्रिक मूल्यों में निहित है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की दिशा में देश तेजी से आगे बढ़ रहा है, जो डॉ. मुखर्जी के सपनों को साकार करने का सशक्त प्रयास है। भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का एक सशक्त जनआंदोलन है। पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता समाज के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने और संगठन की विचारधारा को जन-जन तक ले जाने का दायित्व निभा रहा है। कार्यकर्ताओं की निष्ठा, समर्पण और सेवा भावना ही संगठन की सबसे बड़ी शक्ति है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए उन्होंने अनेक संघर्ष किए और अंततः राष्ट्र की एकता एवं अखंडता के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उनका जीवन हमें यह संदेश देता है कि राष्ट्र सर्वोपरि है और देशहित के लिए समर्पण ही सच्ची राष्ट्रसेवा है।

भारतीय जनता पार्टी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती स्मरण पखवाड़े के तहत विभिन्न आयोजनों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने का कार्य कर रही है। विभिन्न कार्यक्रमों, संगोष्ठियों, कार्यकर्ता सम्मेलनों और जनसंपर्क अभियानों के माध्यम से उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाया जा रहा है, ताकि नई पीढ़ी उनके राष्ट्रवादी चिंतन और योगदान से प्रेरणा प्राप्त कर सके। कार्यकर्ता अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक से अधिक लोगों से संपर्क करें तथा डॉ. मुखर्जी के विचारों, उनके राष्ट्रवादी दृष्टिकोण और भारत की अखंडता के लिए किए गए उनके योगदान की जानकारी समाज तक पहुंचाएं। साथ ही केंद्र और राज्य सरकार की जनहितकारी योजनाओं एवं विकास कार्यों को भी प्रभावी ढंग से जनता के बीच ले जाएं।

विकसित भारत का संकल्प तभी साकार होगा जब प्रत्येक नागरिक राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखते हुए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेगा। कार्यकर्ता डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों से प्रेरणा लेते हुए समाज सेवा, संगठन सशक्तिकरण और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ जुटें तथा विकसित, सशक्त और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दें। ■

कांग्रेस प्रायोजित अराजकता की राजनीति कर रही है - हेमंत खण्डेलवाल

- कांग्रेस लोकतांत्रिक विपक्ष की भूमिका निभाने में असमर्थ।
- लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अविश्वास फैलाना और भारत के खिलाफ दुष्प्रचार करना कांग्रेस की आदत बन चुकी है।
- राष्ट्रहित, संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सम्मान की रक्षा के लिए भाजपा का संघर्ष निरंतर जारी रहेगा।
- मोदी सरकार युवाओं के हितों के लिए प्रतिबद्ध, विपक्ष छात्रों का उपयोग अपनी तुच्छ राजनीति के लिए कर रहा है।
- केन्द्र सरकार हर विषय पर चर्चा के लिए तैयार, विपक्ष संवाद नहीं, अराजकता में विश्वास रखता है।
- विपक्ष आखिर किसके हित में भारत की उपलब्धियों को नकारने और झूठा नैरेटिव गढ़ते हैं।
- नीट-यूजी सहित सभी प्रतियोगी परिक्षाओं की लीक प्रूफ परीक्षा के लिए केन्द्र सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।
- व्यवधान की राजनीति और विभाजनकारी बयान, कांग्रेस की पहचान।

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल के नेतृत्व में पार्टी पदाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आवास के निकट किए गए धरना एवं हंगामे को लेकर विरोध मार्च निकालकर शांतिपूर्ण एवं लोकतांत्रिक प्रदर्शन किया। कांग्रेस लोकतांत्रिक विपक्ष की भूमिका निभाने के बजाय प्रायोजित अराजकता की राजनीति कर रही है। लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अविश्वास फैलाना, विदेशों में भारत के खिलाफ दुष्प्रचार करना कांग्रेस की आदत बन चुकी है। कांग्रेसी सत्ता की लोलुपता में देश के सम्मान और राष्ट्र हित को भी दांव पर लगाने से नहीं चूकते हैं। भाजपा राष्ट्र हित, संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सम्मान की रक्षा के लिए सदैव संघर्ष करती रहेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार युवाओं के हितों के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। विपक्षी दल छात्रों के कंधों का उपयोग कर अपनी तुच्छ राजनीति कर रहे हैं। केन्द्र सरकार हर विषय पर सार्थक चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन विपक्ष संवाद नहीं, अराजकता में विश्वास रखता है।

भारतीय जनता पार्टी का आंदोलन किसी व्यक्ति विशेष के विरुद्ध नहीं, बल्कि कांग्रेस की उस सोच और राजनीति के खिलाफ है, जो लोकतंत्र को कमजोर करने, समाज में वैमनस्य फैलाने और भारत की वैश्विक प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने का निरंतर प्रयास कर रही है। कांग्रेस को देश की जनता के सामने यह स्पष्ट करना चाहिए कि राहुल गांधी बार-बार विदेशी मंचों पर भारत, भारतीय लोकतंत्र, संवैधानिक संस्थाओं और न्याय व्यवस्था पर सवाल क्यों उठाते हैं? आखिर किसके हित में वे भारत की उपलब्धियों को नकारने और देश के विरुद्ध झूठा नैरेटिव गढ़ने का प्रयास करते हैं? जनता उन्हें कई बार नकार चुकी है, लेकिन वे अपनी राजनीतिक विफलताओं का दोष देश की संस्थाओं पर मढ़ने का असफल प्रयास कर रहे हैं।

कांग्रेस लोकतांत्रिक विपक्ष की भूमिका निभाने के बजाय प्रायोजित अराजकता की राजनीति कर रही है। संसद से लेकर सड़क तक व्यवधान उत्पन्न करना, समाज को बांटने वाले बयान देना, संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर हमला करना और विदेशों में भारत को बदनाम करना कांग्रेस की पहचान बन गया है। यह लोकतंत्र की स्वस्थ परंपराओं को मजबूत करने का नहीं, बल्कि लोकतंत्र को बंधक बनाने का प्रयास है। भारतीय जनता पार्टी स्पष्ट करना चाहती है कि लोकतंत्र में विरोध का अधिकार सभी को है, लेकिन देश का अपमान करने, लोकतांत्रिक संस्थाओं को बदनाम करने और समाज में अशांति फैलाने का अधिकार किसी को नहीं है। कांग्रेस को देशहित से ऊपर दल हित और परिवार हित की राजनीति छोड़नी होगी। विरोध-प्रदर्शन-कांग्रेस को स्पष्ट संदेश है कि मध्यप्रदेश की जनता राष्ट्रविरोधी दुष्प्रचार, झूठ की राजनीति और प्रायोजित अराजकता को कभी स्वीकार नहीं करेगी। भारतीय जनता पार्टी लोकतंत्र, संविधान, राष्ट्रहित और भारत के सम्मान की रक्षा के लिए सदैव प्रतिबद्ध रहेगी तथा कांग्रेस की विभाजनकारी राजनीति का लोकतांत्रिक और जनतांत्रिक तरीके से लगातार विरोध करती रहेगी। ▪

जल संरक्षण का अभियान चलाया - डॉ. मोहन यादव

हमारी संस्कृति में पंच महाभूतों को मान्यता मिली है, इसमें सबसे प्रमुख है जल। जल से ही हमारा जीवन है। 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान तथा जल, जंगल एवं पर्यावरण बचाने के पुनीत महाभियान में पूरे समाज की सहभागिता बेहद सराहनीय है। हम सबको मिलकर इस दिशा में आगे आना ही चाहिए। पौधरोपण एवं जल संचयन में सरकार और समाज की सहयोगी सामाजिक संस्था पृथ्वी को प्रोत्साहन स्वरूप 2 लाख रुपये और प्रदेश में चलाए गए नक्सल उन्मूलन अभियान में उल्लेखनीय सेवाएं देने वाले बीएसएफ के दो जवानों को मंच से सम्मानित कर 2-2 लाख रुपये प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा। मां अहिल्या की नगरी इंदौर अतीत के उस गौरवशाली पृष्ठ के रूप में जानी जाती है, जिसने सनातन संस्कृति को पुनर्जीवित किया। देवी अहिल्या माता ने अपने शासनकाल में अपने मूल उत्तरदायित्व के साथ-साथ प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए कई स्थानों पर कुंए और बावड़ियां बनाई। उन्हीं से प्रेरणा लेते हुए मध्यप्रदेश सरकार ने जल संरक्षण की दिशा में नदी, तालाब, कुंए, बावड़ियों की सफाई और इनके पुनर्निर्माण का अभियान चलाया है। इंदौर में बड़े पैमाने पर जल संरक्षण का काम हुआ। इंदौर ने देश को जल संरक्षण की दिशा दिखाई है। इससे देश में मध्यप्रदेश ने उल्लेखनीय स्थान हासिल किया है। वर्तमान में अलनीनो जैसी जलवायु से जुड़ी चुनौती हमारे सामने हैं। ऐसे में पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए पौधरोपण ही सबसे प्रभावी उपाय है। 'एक पेड़- मां के नाम' अभियान इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी पहल है।

इन्दौर जब भी कुछ करता है, रिकार्ड ही बनाता है। जल हो या जंगल, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में इन्दौर में बहुत अच्छा काम हो रहा है। पौधरोपण अभियान में 8 से 10 फिट के पौधे लगाए जा रहे हैं, जो जल्दी ही बड़े होकर फल देंगे। यह इस अभियान तीसरा साल है और हर साल इसमें समाज की सहभागिता बढ़ती ही जा रही है। अगले दिनों में यहां 1 लाख से अधिक वन प्रजातियों के पौधे लगाए जाएंगे। ▪

पौधारोपण एवं जल संचयन ऐतिहासिक पहल

हेमंत खण्डेलवाल

21 लाख पौधारोपण एवं 51 हजार वर्षा जल संचयन यूनिट लगाने का महाअभियान पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक ऐतिहासिक और दूरदर्शी पहल है। एक पेड़ लगाना महत्वपूर्ण कार्य है, लेकिन लाखों वृक्ष लगाने का सामूहिक संकल्प समाज की पर्यावरण के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक होता है। पहले 51 लाख, फिर 12 लाख और अब 21 लाख पौधारोपण का संकल्प इस बात का प्रमाण है कि इंदौर केवल संकल्प नहीं करता, बल्कि उसे सफलतापूर्वक पूरा भी करता है। किसी अभियान को एक वर्ष चलाना बड़ी बात नहीं होती, बल्कि उसे निरंतर जनआंदोलन का स्वरूप देकर आगे बढ़ाना वास्तव में अनुकरणीय है। इंदौर लंबे समय से प्रदेश की आर्थिक राजधानी के रूप में अपनी पहचान बनाए हुए है। प्रदेश की आर्थिक दिशा तय करने में इंदौर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अब यह शहर पर्यावरण संरक्षण और जल संवर्धन के क्षेत्र में भी पूरे प्रदेश के लिए नई दिशा तय कर रहा है। जिस प्रकार इंदौर शहर उद्योग, व्यापार और रोजगार सृजन में अग्रणी है, उसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण और हरित विकास के क्षेत्र में भी नेतृत्व कर रहा है। इंदौर विकास और पर्यावरण के बीच बेहतर संतुलन स्थापित करते हुए आगे भी पूरे देश के लिए प्रेरणा बनेगा। उद्योगों का विकास, रोजगार का विस्तार, हरियाली का संवर्धन और जल संरक्षण इन सभी क्षेत्रों में इंदौर की अग्रणी भूमिका आने वाले वर्षों में और अधिक सशक्त होगी। ▪

आत्मनिर्भर भारत का संकल्प

- **चाहे रक्षा उत्पादन हो, रक्षा निर्यात हो या मित्र देशों के साथ रणनीतिक सहयोग- भारत लगातार नई ऊंचाइयों को छू रहा है।**
- **'कैच द रेन' का संदेश बेहद सरल है-जहां और जब बारिश हो, वहीं वर्षा जल का संरक्षण करें।**
- **आज बचाई गई पानी की हर बूंद आने वाली पीढ़ियों के लिए सबसे बड़ी पूंजी है।**
- **लंदन के लॉर्ड्स मैदान पर भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार टेस्ट मैच जीतकर इतिहास रच दिया, यह एक ऐतिहासिक जीत है।**
- **'विक्रम-1' के सफल प्रक्षेपण ने हर भारतीय का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है।**
- **भारत में ओलंपियाड और हैकाथॉन का कल्चर लगातार बढ़ रहा है, यह देखकर खुशी होती है।**
- **सीतामढ़ी की पहल बताती है कि 'रिड्यूस, रीयूज, रीसाइकिल' अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली का हिस्सा बनता जा रहा है।**
- **आज मणिपुर की लोकटक झील केवल देश के मैप पर ही नहीं, बल्कि विशाल ब्रह्मांड में भी अपनी चमक बिखेर रही है।**
- **आने वाले त्योहारों के मौसम में खादी, हैंडलूम या हस्तशिल्प से बना कम-से-कम एक उत्पाद जरूर खरीदें।**

"कारगिल विजय दिवस" पर सभी बहादुर शहीदों और सैनिकों को नमन।

इस साल एक खास 'शौर्य विजय यात्रा' आयोजित की गई है, जिसका संदेश है - "वन राइड, वन नेशन, वन सैल्यूट"।

जीवन में कुछ तारीखें ऐसी होती हैं जिन्हें याद रखने के लिए कैलेंडर देखने की जरूरत नहीं पड़ती, 26 जुलाई ऐसी ही एक तारीख है-'कारगिल विजय दिवस'। ये दिन हमें गर्व से भर देता है। ये दिन हमें अपने वीर जवानों के अद्भुत साहस की याद दिलाता है। कारगिल की ऊंची-ऊंची चोटियाँ, कठिन मौसम, दुश्मन की चुनौती, हर परिस्थिति हमारे सैनिकों के सामने थी, लेकिन उनका हौंसला हर चुनौती से बड़ा था। उन्होंने माँ भारती की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। 'कारगिल विजय दिवस' पर मैं सभी वीर शहीदों और वीर सैनिकों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

आज का भारत अपने वीरों को सिर्फ याद ही नहीं करता, बल्कि नई पीढ़ी तक उनकी गाथा भी पहुंचाता है। इसी भावना से इस वर्ष एक विशेष 'शौर्य विजय यात्रा' निकाली गई है। 14 जुलाई को दिल्ली के 'National War Memorial' से शुरू हुई यह मोटर साइकिल यात्रा, द्रास के कारगिल वॉर मेमोरियल तक पहुंचेगी। इसका संदेश है - "One Ride, One Nation, One Salute". यह यात्रा हमें याद दिलाती है कि राष्ट्र के लिए दिया गया बलिदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

आज भारत अपने सैनिकों के साहस के साथ-साथ अपनी तकनीकी क्षमता को भी लगातार मजबूत कर रहा है। कुछ दिन पहले भारतीय नौ-सेना में INS महेंद्रगिरि शामिल किया गया। यह आधुनिक जंगी जहाज भारत में ही design किया गया है, भारत में ही बना है। इसमें 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग हुआ है। यह आत्मनिर्भर भारत की बढ़ती शक्ति का प्रतीक है। इसी महीने DRDO ने Pinaka Long Range Guided Rocket का भी सफल परीक्षण किया। इस सफलता के पीछे हमारे वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का सामूहिक परिश्रम है। दो-तीन दिन पूर्व ही DRDO ने कुशा मिसाइल का भी सफल परीक्षण किया है।

आज रक्षा उत्पादन हो, रक्षा निर्यात हो या मित्र देशों के साथ राजनीतिक सहयोग-भारत लगातार नई ऊंचाइयों की ओर बढ़ रहा है। इस महीने की शुरुआत में, मैं, इंडोनेशिया में था, जहाँ, ब्रह्मोस और अस्त्र मिसाइलों के लिए एक बड़ा समझौता हुआ है।

दुनिया का भरोसा भारत के रक्षा उपकरणों और तकनीक पर बढ़ रहा है। आइए, इस 'कारगिल विजय दिवस' पर हम अपने अमर शहीदों को नमन करें, और एक सुरक्षित, सक्षम और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का अपना संकल्प और मजबूत करें।

'मन की बात' के पिछले Episode में मैंने आपसे 'Catch The Rain' अभियान की चर्चा की थी। मैंने आग्रह किया था कि बारिश की हर बूँद को सहेजने के इस अभियान को जन-आंदोलन बनाएं। 'Catch The Rain' का संदेश बहुत सीधा है-जहाँ बारिश गिरे, जब बारिश गिरे, पानी को वहीं सहेजिए, इसलिए 04 जुलाई से देश-भर में एक विशेष अभियान भी चलाया जा रहा है। इसके तहत बारिश के पानी के संचयन, Ground Water Recharge, पुराने जल-स्त्रोतों के पुनर्जीवन और वृक्षारोपण को नई गति दी जा रही है। मुझे बहुत खुशी है कि गाँव हों या शहर, पंचायतें हों या सामाजिक संस्थाएं हर जगह लोगों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की है। कहीं पुराने तालाबों से गाद निकाली जा रही है, कहीं कुओं और बावड़ियों को फिर से जीवन दिया जा रहा है। बंद पड़े Borewell अब Ground Water Recharge का माध्यम बन रहे हैं।

मध्य-प्रदेश के सीधी जिले में करीब डेढ़ हजार तालाब बनाए गए हैं। नरसिंहपुर में अमृत सरोवरों को संवारा गया है। महाराष्ट्र के नासिक में बड़ी मात्रा में पानी सहेजने की क्षमता विकसित हुई है। आंध्र-प्रदेश के नंद्याल में सभी ग्राम पंचायतें इस अभियान से जुड़ी हैं और पुराने तालाबों को फिर से उपयोगी बनाया गया है। हमारे शहर भी पीछे नहीं हैं। छत्तीसगढ़ के कोरबा, ओडिशा के भुवनेश्वर और आंध्र-प्रदेश के विजयनगरम-इस अभियान के उत्साहजनक परिणाम दिखाई दे रहे हैं। आइए, हम भी अपने आस-पास किसी एक तालाब, कुएं या बावड़ी की जिम्मेदारी लें-पानी की हर बूँद बचाएं। आज बचाई गई हर बूँद, आने वाली पीढ़ियों के भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी है।

कुछ ही दिन पहले Glasgow में Commonwealth Games शुरू हुए हैं। हर देशवासी भारतीय दल को निरंतर अपनी शुभकामनाएं दे रहा है। उनकी कामना है कि सभी खिलाड़ी और athlete बेहतरीन प्रदर्शन करें और लोगों का दिल भी जीतें।

हमारे युवाओं ने हाल के दिनों में sports में कई शानदार उपलब्धियां हासिल की हैं। PV Sindhu Badminton में Japan Open का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बन गई हैं। उनकी इस उपलब्धि पर पूरे देश को गर्व है। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने भी लंदन में Lord's Stadium में अपना पहला Test Match जीता है। यह एक ऐतिहासिक जीत है। हमारी टीम ने 270 रनों के बड़े अंतर से यह मुकाबला जीता है। लेकिन बात सिर्फ इतनी सी नहीं है। Lord's के लंबे इतिहास में यह महिलाओं की टीम का पहला Test Match था। 1983 में इसी मैदान पर भारत ने अपना पहला क्रिकेट विश्व कप जीता था। अब हमारी नारी शक्ति ने यहां देश का नाम रोशन किया है।

कुछ छोटे प्रयास ऐसे भी होते हैं, जो बहुत मायने रखते हैं। मुझे केरलम में एर्णाकुलम के साउथ चित्तूर में sports के ऐसे ही एक प्रयास के बारे में पता चला है। वहां के एक स्कूल में संस्कृत club है। यहां के teacher अभिलाष जी बड़े अनूठे तरीके से संस्कृत को लोकप्रिय बना रहे हैं। इस project को 'अक्षरकंदुक' नाम दिया गया है। इसमें संस्कृत के अक्षरों को football में इस्तेमाल होने वाले शब्दों से जोड़कर आसान तरीके से समझाया जाता है। इससे सीखने में आनंद मिलता है, साथ ही खेलों से लोगों का जुड़ाव भी बढ़ता है।

Vikram-1 इसके सफल launch से हर देशवासी गौरव से भरा हुआ है। हम सभी भारतीय space sector के इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। ये private sector द्वारा विकसित भारत का पहला rocket है। हमारे युवा innovators ने वो कर दिखाया, जिसकी कल्पना तक मुश्किल थी। उन्होंने गजब की skill, passion और patience दिखाया। लंबे समय तक हमारा space sector निजी क्षेत्र के लिए बंद रहा था। इस sector में रुचि रखने वाले काफी युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर नहीं मिल पा रहा था। युवा हित को देखते हुए हमने space sector को private sector के लिए खोला। आज इसका परिणाम दुनिया देख रही है।

युवा साथी science में भी भारत का मस्तक ऊंचा कर रहे हैं। Science Olympiads दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण competition में से एक हैं। इनमें बड़ी संख्या में students हिस्सा लेते हैं। इसी महीने Physics, Chemistry, Biology और Mathematics के Olympiad हुए। इन competitions में भारतीय दल का प्रदर्शन शानदार रहा। Physics Olympiad में हमारे सभी पाँच students ने Gold Medal जीते और भारत ने पहली rank हासिल की। पिछले एक दशक में हुए हर Physics Olympiad में हमारे देश के students ने Gold या Silver Medal जरूर जीता है। Chemistry Olympiad में भी हमारे सभी students ने Gold Medal जीता। यह अब तक की best performance रही है। Biology Olympiad में भी हमारे सभी students ने medal जीते, इनमें एक Gold Medal भी शामिल है। वहीं, Mathematics Olympiad में हमारे students ने दो Gold और चार Silver Medals अपने नाम किए। मुझे देश की युवा शक्ति पर बहुत गर्व है। यह देखकर खुशी होती है कि भारत में Olympiads और Hackathons का culture निरंतर बढ़ रहा है। मुझे विश्वास है कि देश के अधिक से अधिक युवा ऐसे forums में अपना interest दिखाएंगे और भारत का परचम भी लहराएंगे।

जब हुनर भी हो और कुछ करने का जज्बा भी हो, तो हर राह, आसान हो जाती है। कश्मीर की पारंपरिक चटाई 'वगू' को लेकर आज जो प्रयास हो रहे हैं उसमें इसी की झलक मिलती है। इसे सरकंडे और धान के पुआल से, straw से, तैयार किया जाता है। इस चटाई को बनाने की परंपरा बरसों पुरानी है। इसके लिए सबसे पहले कश्मीर के दलदली इलाकों की घास और सरकंडे की कटाई की जाती है। धूप में सुखाने के बाद छंटाई होती है और फिर शुरू होता है हाथों से बुनाई का काम। दो कारीगरों को एक चटाई बनाने में करीब-करीब चार दिन लगते हैं। यह चटाई अनूठी भी है और eco-friendly भी है। एक बड़ी खासियत ये है कि आपको गर्मियों में इससे ठंडक मिलेगी और सर्दियों में गर्माहट। पहले यह कश्मीर के हर घर में दिखती थी, लेकिन, पिछले कुछ वर्षों में इसका उपयोग कम होने लगा था। ऐसे में श्रीनगर के गुलाम हुसैन जी और उनकी बेटी तंजीला जी ने एक संकल्प लिया। दोनों 'वगू' craft की परंपरा को एक नया जीवन देने में जुट गए। गुलाम हुसैन जी बहुत ही साधारण परिवार से आते हैं। उन्हें इस काम में कई तरह की चुनौतियां भी आई। लेकिन 'वगू' के संरक्षण का उनका संकल्प अडिग था। देखते ही देखते उनके इस प्रयास से बहुत सारे लोग जुड़ते चले गए। गुलाम हुसैन जी ने इस कौशल को खूब बढ़ाया। अपने मिशन में उन्हें स्थानीय स्तर पर सरकारी सहयोग भी मिला। आज तेजी से लोकप्रिय हो रहा, 'वगू' देश के अन्य हिस्सों में भी पहुंच रहा है। मुझे इस प्रयास से जुड़े सभी लोगों पर बहुत गर्व है। आज हम सभी का

Local products पर जोर है। हम Vocal for Local के मंत्र को लेकर चल रहे हैं। ऐसे में कश्मीर का 'वगू' भी आपके घर का हिस्सा बने, इस पर एक बार जरूर सोचिएगा।

हमारे देश में चाय सिर्फ एक पेय नहीं है-ये अपनापन भी है। सुबह की शुरुआत हो, दोस्तों की मुलाकात हो या परिवार के साथ कुछ पल बिताने हों 'चाय' हर मौके का हिस्सा बन जाती है। वैसे तो आप भी भलीभाँति जानते हैं मेरा चाय से रिश्ता क्या है। लेकिन आज मैं जिस चाय की चर्चा कर रहा हूं, उसने सिर्फ स्वाद ही नहीं दिया, बल्कि अनेक बहनों के जीवन में, आत्मनिर्भरता की नई खुशबू भी घोल दी है। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के लखीवाला गांव में Self Help Group से जुड़ी महिलाओं ने 'विदुर प्रेरणा स्वदेशी हर्बल टी' तैयार की है। इसमें lemongrass, गिलोय, मुलेठी, तुलसी, कच्ची हल्दी, दालचीनी, इलायची और सौंफ जैसी प्राकृतिक सामग्रियां शामिल हैं। अपने अनोखे स्वाद और गुणों की वजह से इस चाय ने बहुत कम समय में लोगों के बीच खास पहचान बना ली। प्रयागराज के महाकुंभ और दिल्ली के International Food Festival में इस हर्बल चाय को खूब सराहना मिली है। विदेशों से आए लोगों ने भी इसमें दिलचस्पी दिखाई है।

सबसे प्रेरक बात इसकी शुरुआत है। यह पूरा प्रयास सिर्फ एक लाख रुपये से शुरू हुआ था। आज यह brand देश के बड़े संस्थानों तक पहुंच चुका है। ये पहल हमें बताती है कि जब स्थानीय ज्ञान, प्रकृति और महिलाओं का आत्मविश्वास साथ आते हैं, तो एक छोटा-सा प्रयास भी बड़े बदलाव की शुरुआत बन जाता है।

आज देश-भर में 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के माध्यम से लोग प्रकृति के प्रति अपना दायित्व निभा रहे हैं। जब समाज इस भावना से जुड़ता है, तो बहुत सुन्दर और प्रेरक उदाहरण सामने आते हैं, अमदाबाद (अहमदाबाद) में जन-भागीदारी की अद्भुत शक्ति दिखाई दी है। भाड़ज क्षेत्र में एक घंटे के भीतर साढ़े 3 लाख से अधिक पौधे रोपे गए, इसमें, 25 हजार से अधिक लोग जुटे 7 स्कू ली बच्चे, NCC Cadets, स्वयंसेवक और आम नागरिक-सभी ने इस अभियान में हिस्सा लिया। आने वाले वर्षों में यही पौधे एक घने शहरी वन का रूप लेंगे। इस प्रयास को Guinness Book of World Record में दर्ज किया गया है,'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के तहत यूपी में भी जन-शक्ति का अद्भुत संकल्प देखने को मिला है। वहां एक ही दिन में 12 जुलाई को 35 करोड़ से अधिक पौधे लगाए गए हैं। UP का सांसद होने के नाते मेरे लिए ये भी विशेष गर्व की बात है।

पेड़ केवल मनुष्यों के लिए नहीं होते, वे अनगिनत जीवों के घर भी होते हैं। गुजरात के गिर के जंगलों में करीब 60 वर्षों बाद Indian Grey Hornbill फिर से बसेरा बना रहा है। ये गिर में बरसों से हो रहे संरक्षण और पुनर्स्थापन के प्रयासों का परिणाम है। Hornbill को जंगलों का किसान कहा जाता है। ये फल खाते हैं और बीजों को दूर-दूर तक पहुंचाते हैं, उन्हीं बीजों से, जंगल में नए पेड़ उगते है इस तरह एक पक्षी जंगल को फिर से हरा-भरा बनाने में मदद करता है। मैं आप सभी से कहूँगा, हम सभी अपने जीवन के किसी विशेष अवसर को, प्रकृति से जरूर जोड़ें। एक पेड़ माँ के नाम लगाएं। आज का लगाया एक छोटा सा पौधा, आने वाली पीढ़ियों के लिए हरियाली, स्वच्छ हवा और सुंदर भविष्य की विरासत बन सकता है।

हम सभी जानते हैं कि आज plastic प्रदूषण पूरी दुनियां के पर्यावरण के लिए बड़ी चुनौती बना हुआ है। Single use plastic का कचरा कई वर्षों तक प्रकृति को नुकसान पहुंचाता रहता है, इसलिए, plastic का सही निस्तारण बहुत जरूरी है, बिहार के सीतामढ़ी में 'Waste to Wealth' का शानदार उदाहरण सामने आया है। यहां कचरे की recycling कर उससे आकर्षक bench बनाई जा रही है। एक bench तैयार होने में करीब 40 किलो single use plastic खप जाती है। यह मजबूत, टिकाऊ और आरामदायक होने के साथ-साथ eco-friendly भी होती है। इसे सरकारी स्कूलों, पार्कों और सार्वजनिक स्थलों पर लगाया जाता है। इसके जरिए लोगों में पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरूकता भी बढ़ रही है। इस प्रयास में स्थानीय इकाई के साथ ही जिला प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी पैदा हो रहे हैं। सीतामढ़ी का ये प्रयास हमें बताता है कि Reduce, Reuse और Recycle आज केवल एक नारा नहीं बल्कि हमारा जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है।

पिछली बार 'मन की बात' में, मैंने 'गणेश उत्सव' की बात की थी। मैंने आग्रह किया था

कि हमें अपने देश की मिट्टी से ही बने गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। जो POP (पी.ओ.पी.) से बने गणेश जी होते हैं या विदेश से आई गणेश जी की प्रतिमा होती है, उसके बजाय हमें देश की मिट्टी से बने गणेश जी को घर में स्थापित करना चाहिए। इस विषय पर अनेक लोगों ने मुझे संदेश भेजा है और अपने विचार रखे हैं। लोगों ने बताया कि उन्होंने मेरे आग्रह को अपनाया है। उन्होंने स्थानीय मिट्टी से तैयार होने वाले गणेश जी को स्थापित करने का संकल्प लिया है। लोगों ने लिखा है कि 'मन की बात' में पहले ही इस पर चर्चा हुई, इससे उन्हें सही वक्त पर सही कदम उठाने में मदद मिली। मैं एक बार फिर अपना आग्रह दोहराता हूं, इस बार गणपति पूजा में देश की मिट्टी से बने गणेश जी को अपने घर पर स्थापित करें, उनकी पूजा करें। आपका ये प्रयास भी एक तरह से प्रकृति की ही पूजा होगा।

अब मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताऊँगा, जिनके बारे में सुनकर आपको बहुत गर्व होगा। एक ऐसे व्यक्ति जो science और innovation के क्षेत्र में बढ़-चढ़कर काम कर रहे हैं, दुनिया में जिनकी पहचान बन रही है, लेकिन इसके बाद भी वो अपनी जड़ों से गहराई से जुड़े हुए हैं, अवसर मिलते ही वो अपनी मिट्टी का सम्मान करना नहीं भूलते-वो व्यक्ति हैं, मणिपुर के Dr. Ronaldo Laishram जी। नाम उनका Ronaldo है लेकिन काम से वो एक Astrophysicist हैं। वे जापान में काम करते हैं और young galaxies के एक विशाल समूह की खोज करने वाली टीम का हिस्सा रहे हैं। आप जानना चाहेंगे कि उन्होंने आखिर किया क्या है? दरअसल, उन्होंने इस पूरे समूह का नाम मणिपुर की एक खूबसूरत

झील से जोड़कर Loktak proto-cluster रखा है। Loktak ताजे पानी की बहुत बड़ी झील है। Loktak लेक में तैरती हुई फूमडी मिलकर एक अनोखा landscape बनाती है। ऐसा लगता है कि विशाल समंदर में छोटे-छोटे द्वीप तैर रहे हों। उसी प्रकार universe में ये young galaxies भी एक विशाल संरचना का निर्माण करती हैं। आज मणिपुर की Loktak केवल देश के Map पर ही नहीं, बल्कि विशाल ब्रह्मांड में भी अपनी चमक बिखेर रही है। यह उपलब्धि हर भारतीय का गौरव बढ़ाने वाली है। इससे हमारे युवा साथियों को सीख मिलती है कि वे अपनी परंपरा से जुड़े रहकर भी नई ऊंचाइयों को छू सकते हैं। ये ऐसी जड़ें हैं, जो सितारों की दुनिया को भी जगमगा सकती हैं।

7 अगस्त को हमारा देश 'National Handloom Day' मनाएगा। इस अवसर पर हम अपने बुनकर भाई-बहनों के कौशल और उनकी सृजनशीलता का उत्सव मनाते हैं। हमारे ये साथी पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघे से बना हर परिधान किसी-न-किसी क्षेत्र, समुदाय और इससे जुड़े असंख्य लोगों की कहानी को सामने लाता है। ये वो लोग हैं, जो गर्व के साथ भारत की सांस्कृतिक विरासत को संजोने में जुटे हैं। मेरा आग्रह है कि हम हस्तकला को प्रोत्साहित कर, अपने बुनकर साथियों का सम्मान करें। आइए, हम vocal for local की भावना को और सशक्त करें।

देश में जिस तरह handloom को बढ़ावा दिया जा रहा है। उससे बड़ी संख्या में लोगों का जीवन बेहतर हो रहा है। पोचमपल्ली से पटना और कुथमपल्ली से कच्छ तक इसके कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। आज ऐसे कई लोग और समूह हैं, जो, handloom की हमारी गौरवशाली परंपरा को नई ऊर्जा और पहचान दे रहे हैं। कोई 'पोचमपल्ली इकत' की सुंदर परंपरा को आगे बढ़ा रहा है, तो कोई महिला बुनकरों को जोड़कर wool products बना रहा है। कुछ लोग केरलम की पारंपरिक 'कसावु कला' को संरक्षित कर रहे हैं। इससे हमारी माताओं-बहनों को रोजगार भी मिल रहा है।

एक और विषय जिसका मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा, वह है 'खादी'। हम सभी जानते हैं कि 'खादी' महात्मा गांधी को बहुत प्रिय थी। बीते कुछ वर्षों में 'खादी' काफी लोकप्रिय हुई है। पिछले 12 वर्षों में इसकी बिक्री 6 गुना बढ़ी है। बिक्री का यह आंकड़ा अब 8,000 करोड़ रुपये के करीब पहुंच चुका है। मेरा आप सभी से आग्रह है कि आने वाले त्योहार में 'खादी' का कोई-न-कोई, handloom का कोई-न-कोई, handicraft का कोई-न-कोई product जरूर खरीदें।

अगर आपसे पूछा जाए कि भारत के कितने तरह के musical instruments हैं, तो आप सोच में पड़ जाएंगे। ऐसा इसलिए, क्योंकि हमारे यहां बहुत से वाद्ययंत्र और उनसे जुड़ी परम्पराएं हैं। इसी तरह का एक instrument है - त्रिपुरा का 'चौंगप्रेंग'। यह वहां की tribal communities में काफी लोकप्रिय है। बांस से बने इस वाद्ययंत्र में तीन तार होते हैं। इससे निकली धुन बहुत मधुर होती है, जो सरोद से मिलती-जुलती है। कुछ वजहों से युवाओं के बीच इसकी लोकप्रियता कम होने लगी थी। ऐसे में सूरज कुमार देबबर्मा जी ने इसे फिर से लोकप्रिय बनाने का संकल्प लिया। आज उनका प्रयास रंग ला रहा है। वे चौंगप्रेंग के साथ ही वहां के अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों पर भी perform करते रहे हैं। Kokborok folk songs, Baul songs, Bangali Folk उन्हें खूब भाता है। अब मैं आपको एक छोटी सी clip सुनाना चाहता हूं। इस संगीत को आप कभी भूल नहीं पाएंगे।

मुझे विश्वास है इसे सुनकर आपके मन को बहुत अच्छा लगा होगा। मुझे देबबर्मा जी पर बहुत गर्व है। पारंपरिक संगीत को लोकप्रिय बनाने का उनका प्रयास बहुत ही सराहनीय है। मेरा आग्रह है कि आप भी अपने आस-पास के पारंपरिक वाद्ययंत्र की जानकारी social media पर जरूर share करें। आपकी यह कोशिश दूसरों को भी पारंपरिक भारतीय संगीत से जरूर जोड़ेगी।

27 जुलाई को, भारत रत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी की पुण्यतिथि है। डॉ. कलाम के व्यक्तित्व में कई प्रेरक रूप थे, लेकिन, उनके हृदय के सबसे करीब एक शिक्षक की भूमिका थी। वे बच्चों और युवाओं को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित करते थे। संयोग से, इसी हफ्ते हम 'गुरु पूर्णिमा' का पावन पर्व मनाएंगे। हमारे माता-पिता हमारे पहले गुरु होते हैं। स्कूल के शिक्षक हमें अक्षर ज्ञान देते हैं। गुरु पूर्णिमा ऐसे सभी गुरुओं के प्रति कृतज्ञता जताने का अवसर है। मैं देश के सभी शिक्षकों और गुरुजनों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता हूं।

कुछ ही सप्ताह बाद हम अपनी स्वतंत्रता का महापर्व भी मनाएंगे। 15 अगस्त हर भारतीय के लिए गर्व का दिन है। ये उन असंख्य वीरों को याद करने का दिन है, जिन्होंने 'भारत माता' की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। उनके त्याग और तपस्या की वजह से आज हमारे हाथ में तिरंगा है। इस तिरंगे में हमारे संविधान के आदर्श हैं।

पिछले कुछ वर्षों में 'हर घर तिरंगा' अभियान ने पूरे देश को एक अद्भुत भावना से जोड़ा है। हर घर, हर गली में तिरंगे का उत्सव दिखाई देता है। इस वर्ष भी हमें 'हर घर तिरंगा' अभियान को पूरे उत्साह के साथ आगे बढ़ाना है। अपने घर पर पूरे सम्मान के साथ तिरंगा फहराना है।

हर वर्ष 15 अगस्त से पहले आप मुझे बहुत से विचार और सुझाव भेजते हैं। इस वर्ष भी आप अपने विचार MyGov पर जरूर साझा कीजिए। मुझे आपके सुझावों का इंतजार है। ■

जल संरक्षण की सराहना - डॉ. मोहन यादव

- **जल संरक्षण बना विकास और समृद्धि का आधार।**

- **12983 जल संरक्षण कार्य, 1489 खेत तालाब और जनभागीदारी आधारित नवाचारों से सीधी ने बनाई राष्ट्रीय पहचान।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में मध्यप्रदेश के सीधी जिले में जल संरक्षण एवं जनभागीदारी से किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों का उल्लेख करते हुए जिले की सराहना की। देश के सर्वोच्च नेतृत्व द्वारा सीधी जिले के प्रयासों को राष्ट्रीय मंच पर स्थान मिलना न केवल जिले बल्कि पूरे मध्यप्रदेश के लिए गर्व का विषय है। यह उपलब्धि जल संरक्षण को जनआंदोलन का स्वरूप देने की दिशा में किए जा रहे सतत् प्रयासों तथा जिला प्रशासन और आमजन की सहभागिता का प्रतिफल है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत सीधी जिले में जल संरक्षण को विकास और आजीविका से जोड़ते हुए व्यापक स्तर पर कार्य किए गए हैं। अभियान के अंतर्गत जिले में 1,489 खेत तालाबों का निर्माण पूर्ण किया गया है। इन खेत तालाबों ने वर्षा जल संचयन, भू-जल पुनर्भरण और सिंचाई क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है, जिससे किसानों को खेती के लिए स्थायी जल उपलब्धता सुनिश्चित होने लगी है।

जिले में अब तक 12,983 जल संरक्षण कार्य पूर्ण किए जा चुके हैं। इन प्रयासों से जिले की जल भंडारण क्षमता 1 करोड़ 35 लाख 73 हजार 874 घनमीटर से बढ़कर 1 करोड़ 80 लाख 56 हजार 486 घनमीटर हो गई है अर्थात 44 लाख 82 हजार 612 घनमीटर अतिरिक्त जल संग्रहण क्षमता विकसित हुई है। इससे लगभग 896 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि सिंचित होने की संभावना बनी है तथा उपलब्ध अतिरिक्त जल से लगभग एक लाख लोगों की दैनिक आवश्यकता की पूर्ति संभव होगी।

जल संरक्षण को स्थायी स्वरूप देने के लिए जिले की सभी पांचों जनपद पंचायतों में नदी पुनर्जीवन अभियान संचालित किया गया। प्रत्येक जनपद में एक-एक नदी का चयन कर चेकडैम, स्टॉपडैम, बोल्डर चेकडैम एवं गैबियन संरचनाओं का निर्माण कराया गया, जिसके परिणामस्वरूप गर्मी के मौसम में भी अनेक नदियों में जल उपलब्ध रहने लगा है। सिहावल विकासखंड के व्यवहार खांड, कुंनझुनकला, बहरी, अमराही एवं पोड़ी में स्थापित लिफ्ट सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से ऊंचाई पर बसे आदिवासी किसानों तक नदी का पानी पहुंचाया जा रहा है। इससे किसान अब केवल खरीफ फसल तक सीमित न रहकर रबी फसलों एवं सब्जी उत्पादन की ओर अग्रसर हुए हैं और उनकी वार्षिक आय में 40 से 50 हजार रुपये तक की वृद्धि दर्ज की गई है।

सीधी जिले ने जल संरक्षण को आजीविका संवर्धन का भी प्रभावी माध्यम बनाया है। वर्तमान में 211 तालाबों में मत्स्य पालन तथा 178 तालाबों में सिंघाड़ा उत्पादन किया जा रहा है। इन गतिविधियों से मछुआ समूहों, स्व-सहायता समूहों एवं व्यक्तिगत मत्स्य पालकों को मिलाकर लगभग 80 लाख रुपये का प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ मिला है। इसके अतिरिक्त जिले में 18,600 फलदार पौधों पर आधारित हरित आजीविका मॉडल विकसित किया गया है, जिससे भविष्य में लगभग 3.59 करोड़ रुपये की वार्षिक आय का अनुमान है। वहीं बेलहा डैम पुनर्जीवन परियोजना से कृषि आय में लगभग 4.75 करोड़ रुपये प्रतिवर्ष की वृद्धि का अनुमान है।

सीधी जिले का जल संरक्षण मॉडल यह सिद्ध करता है कि जब शासन की दूरदर्शी नीतियों को जनभागीदारी, वैज्ञानिक योजना और प्रशासनिक प्रतिबद्धता का साथ मिलता है, तब जल संरक्षण केवल प्राकृ तिक संसाधनों के संरक्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि किसानों की समृद्धि, महिलाओं की आजीविका, ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सतत् विकास का मजबूत आधार बन जाता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा मन की बात में सीधी जिले का उल्लेख इन प्रयासों की राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति है, जिसने जिले के प्रत्येक नागरिक, किसान, स्व-सहायता समूह और जल संरक्षण से जुड़े सभी सहभागियों का उत्साह कई गुना बढ़ा दिया है। ■

नवाचारों से सशक्त भारत - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी ने 'मन की बात' में सीधी और नरसिंहपुर को बताया जल संरक्षण का मॉडल।**
- **भाजपा ही विकास की पहचान।**

प्रधानमंत्री जी के नवाचारों से वैश्विक मंच पर भारत की पहचान सशक्त हो रही है। मन की बात कार्यक्रम में कारगिल विजय दिवस के अवसर पर राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले अमर बलिदानी सैनिकों के अदम्य साहस, शौर्य और सर्वोच्च बलिदान को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वीर जवानों का त्याग प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। प्रधानमंत्री जी ने स्वदेशी रक्षा निर्माण में भारत की निरंतर बढ़ती शक्ति का उल्लेख किया और आईएनएस महेंद्र गिरि, पिनाका लॉन्ग रेंज गाइडेड रॉकेट तथा कुशा मिसाइल प्रणाली जैसी उपलब्धियों का भी जिक्र किया। ये

उपलब्धियां आत्मनिर्भर भारत के सशक्त होते संकल्प और देश की बढ़ती सामरिक क्षमता का प्रमाण हैं। प्रधानमंत्री जी ने वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण के अभियान, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के प्रेरक विचार, भारतीय वाद्य यंत्रों का संरक्षण तथा हैंडलूम और खादी को बढ़ावा देने जैसे विषय मन की बात के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया। ▪

आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ रहा भारत-डॉ. महेंद्र सिंह

- **प्रधानमंत्री जी ने देश को ताकत दी।**
- **भाजपा विकास के कार्यों के लिए पहचानी जाती है।**
- **आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ रहा भारत, अब स्वदेशी गोले पाकिस्तान की धरती पर गिरेंगे।**

देश प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ रहा है। मन की बात में भी उन्होंने स्वदेशी अपनाने की अपील देशवासियों से की है। अब हमारे देश में हर आवश्यक वस्तु का निर्माण हो रहा है। हिन्दुस्तान में शस्त्र बन रहे हैं, आधुनिक हथियार बन रहे हैं, अब तो हमारे यहां बनने वाले स्वदेशी गोले भी पाकिस्तान की धरती पर गिरेंगे। कारगिल दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने

वीर सपूतों को नमन किया, हम सब भी उन वीर सपूतों को नमन करते हैं। आज उन वीर सपूतों के कारण ही हम सब सुरक्षित बैठकर मन की बात कार्यक्रम सुन पा रहे हैं। प्रधानमंत्री जी ने हर क्षेत्र का विकास किया, हर वर्ग को मजबूती दी। ▪

नारी शक्ति की प्रतीक हैं देवी अहिल्या

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है: तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हे यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा।

देवी अहिल्या बाई होल्कर को लोकमाता के स्वरूप में मालवा क्षेत्र की जनता नमन करती थी। चाहे उस समय अर्थात सन् १७०० में लोकतांत्रिक पद्धति नहीं थी, लेकिन राजधर्म के अनुसार शासन संचालन देवी अहिल्या बाई ने किया। उनका जीवन धर्म संस्कृति के लिए था। वे जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन चलाती थी। वे शक्ति की भी प्रतीक थी। राघोबा जो पेशवा के सूबेदार थे। उन्होंने होल्कर राज्य हड़पने की साजिश रची।

वे सेना लेकर मालवा में आये और उन्होंने होल्कर राज्य का शासन सम्हालने का ऐलान करवा दिया। राज्य की जनता देवी अहिल्या बाई को चाहती थी। अहिल्या बाई ने मुकाबले के लिए सैनिक तैयारी प्रारंभ कर दी। उनकी अपनी महिला सेना थी। भोंसले और गायकवाड़ की सेना भी देवी अहिल्या की सहायता के लिए आ गई। क्षिप्रा के उस पार राघोबा की सेना ने डेरा डाल रखा था।

देवी अहिल्या बाई रणनीति के साथ कूटनीति में भी चतुर थी, उन्होंने राघोबा को जो पत्र लिखा, वह इस प्रकार है, तुम मेरा राज्य छीनने की बड़ी भूल कर रहे हो। तुमने मुझे अबला समझा है, परन्तु शायद तुम्हें यह नहीं मालूम की मैं कैसी अबला हूँ? ये तो तुम्हें रणभूमि में ही पता चलेगा। मैं तुमसे रणभूमि में भेंट करने आ रही हूं। तुम्हारी मर्दानगी का मुकाबला अपने वीर जांबाजों से नहीं कराऊंगी, तुम्हारे लिए मेरी महिला सेना ही काफी है। यदि आप हमारी महिला सेना से हार गये तो कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहोगे। यदि मैं हार गई तो कोई मेरी हंसी नहीं उड़ायेगा। सभी आप पर ही थू-थू करेंगे। फिर तुम्हारे सिर पर ऐसा कलंक का टीका लगेगा, जिसे तुम कभी नहीं भुला पाओगे। सोच समझकर ही लड़ाई का निर्णय लेना, राघोबा। इसके बाद राघोबा ने लड़ाई का विचार छोड़कर देवी अहिल्या को बेटी कहना शुरू किया और वे इंदौर में होल्कर राज्य के मेहमान बनकर कुछ दिन रहे।

देवी अहिल्या परंपरा, धर्म को मानने वाली दयालू महिला थी, उन्होंने मंदिर, घाट, धर्मशाला आदि प्रायः सभी तीर्थों में निर्माण कराये। रामेश्वरम, काशी, सोमनाथ आदि तीर्थों में देवी अहिल्या के द्वारा निर्मित घाट, मंदिर, धर्मशाला स्थित है। उन्होंने इन धार्मिक कार्यों के लिए 'खासगी' ट्रस्ट बनाया। रामराज्य, धर्मराज्य और स्वर्णयुग की तुलना देवी अहिल्या के प्रशासन से की जाती है। पहले होल्कर राज्य की राजधानी नर्मदा तट पर स्थित महेश्वर में रही। देवी अहिल्या ने इंदौर में भी प्रशासन चलाया। राजवाड़ा, छत्रियां देवी अहिल्या की स्मृति ताजी करती है। मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा शहर इंदौर को देवी अहिल्या की नगरी के नाम से जाना जाता है। इंदौर हर वर्ष अहिल्या उत्सव मनाता है। ▪

विलक्षण कानूनविद लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक के जीवन पर प्रकाश डालने के प्रयास में यह ध्यान में आता है कि उनके जीवन के विविध पहलुओं में से उनकी कानूनी लड़ाईयाँ एक महत्वपूर्ण सोपान हैं। लोकमान्य तिलक के जीवन में से यदि उनकी कानूनी लड़ाइयाँ हटा दी जाएँ तो सिर्फ उनकी कांग्रेस की गतिविधियां (जो सिर्फ कुल मिलाकर 8-10 साल की टुकड़ों-टुकड़ों में रहीं) एवं कुछ सामाजिक कार्य व पत्रकारिता ही शेष बचेंगे। जिसके कारण उनका जीवन कुछ और कम तेजस्वी लगने लगेगा।

तिलक के जीवन के लगभग 40 से ज्यादा वर्ष कानूनी लड़ाईयों के फेरे में ही रहे हैं। वे वकील के रूप में, आवेदक के रूप में, आरोपी के रूप में या कानून के शिक्षक के रूप में या इनमें से किसी भी रूप में अदालत के बाहर या अन्दर प्रस्तुत हुए हों उनका दबदबा हमेशा नक्षत्र मण्डल के राजा सूर्य की भाँति रहा है। कानूनी मामलों में तिलक के सभी रूपों का अध्ययन आज की पीढ़ी को शैक्षणिक किताबों में तो बिल्कुल पढ़ाया ही नहीं गया है।

कानून का उपयोग हथियार के रूप में

तिलक जी सन् 1880 में एल.एल.बी की परीक्षा उत्तीर्ण हुए थे। तिलक जी ने लगभग नौ वर्ष तक कानून की कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों को पढ़ाया। तिलक जी ने अपने समाचार पत्र केसरी में कई लेख सिर्फ कानून के विषयों एवं उनकी पेचीदगियों पर लिखे थे। तिलक ने कानून को अपने जीवन यापन का आधार भी बनाया था।

वे एक ऐसे अनूठे राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने न केवल 40 वर्ष से ज्यादा समय कानूनी पचड़ों में बिताया वरन् यह मानकर भी चले कि अदालत कक्ष को आजादी प्राप्ति हेतु युद्ध भूमि एवं कानून को इस हेतु हथियार बनाना चाहिए। वे अक्सर कहा करते थे कि 'अंग्रेजों को उन्हीं के एक सशक्त हथियार से परास्त करूँगा।'

तिलक के मुकदमों की विशेषताएँ

तिलक के मुकदमों में राजद्रोह के आरोप के मुकदमे ऐसे प्रकरण हैं जो कानून के इतिहास में न्यायिक प्रक्रिया को अपनी युद्धनीति के भाग के रूप में उपयोग कर राजनैतिक गति प्रदान करवाने का एकमात्र उपलब्ध दस्तावेज है।

तिलक पर तीन बार राजद्रोह के मुकदमे, दो बार लम्बे समय तक चले मानहानि के मुकदमे उल्लेखनीय हैं।

इसके अलावा उन्होंने अपने आप को अपने तीन मित्रों के तीन विभिन्न मुकदमों में बचाव के लिए गहराई तक जोड़ लिया था। एक 'ताई महाराज प्रकरण' तो जिन्दगी भर उनके पीछे लगा रहा। इस प्रकरण में ऐसे कुछ हुआ था कि एक 'बाबा महराज' नाम के एक प्रसिद्ध व्यक्ति तिलक के मित्र थे और काफी सम्पन्न और वैभवशाली लोगों में से थे। उन्होंने अपनी मृत्यु उपरांत उपस्थित हो सकने वाली पारिवारिक परिस्थितियों को पूर्व से ही भांप कर अपनी सम्पत्ति की देखभाल हेतु तिलक महाराज (तिलक उस दौरान इसी नाम से लोकप्रिय थे) को नियुक्त कर दिया था।

वकालत व कानूनी ज्ञान की पराकाष्ठा

दिनांक 13 जुलाई, 1897 को प्रथम राजद्रोह मुकदमे में ज्यूरी ने तिलक पर 18 माह के कारावास की सजा ठोंकी थी। इसी दिन के अगली सुबह श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा उपलब्ध कराए वकीलद्वय श्री गार्थ और श्री पुग प्रीव्ही काउंसिल में अपील की तैयारी हेतु बॉम्बे के एक क्लब में बैठकर योजना बना रहे थे और इसीलिए उन्होंने अपना एक साथी लोकमान्य से मिलने स्थानीय कारागृह में प्रारम्भिक चर्चा के लिए भेजा। यह साथी जब वापस अंग्रेज वकील द्वय के पास आया तो उसके हाथ में लोकमान्य तिलक के द्वारा बनाया गया अपील का ड्राफ्ट था जो उन्होंने जेल में रात भर बैठकर बना डाला था। यह दोनों अंग्रेज बैरिस्टर उक्त ड्राफ्ट देखकर चकित रह गए क्या शानदार ड्राफ्टिंग थी वो, जो बिना किसी कानूनी किताबों, लेखों और कागज पत्रों की सहायता के बना दी गई थी। उन अंग्रेज वकीलों ने बाद में कहा कि उनके सम्पूर्ण वकालती जीवन में किसी भी वकील द्वारा या अन्य किसी जनसामान्य द्वारा भी बनाया गया इतना अचूक और तथ्यपरक ड्राफ्ट उन्होंने कभी नहीं देखा था जो सजा सुनने के बाद मुजरिम द्वारा ही मात्र कुछ ही घण्टों के भीतर तैयार कर दिया गया हो। यह था लोकमान्य तिलक का विलक्षण कानूनी ज्ञान।

फिर भी वकील जनसामान्य के

तिलक ने कभी जीवन यापन के लिए वकालत भले ही नहीं की हो लेकिन वे कानून को सशक्त राजनैतिक हथियार मानते थे-उनकी गणितज्ञ वाली बुद्धि कानून के पेचीदा और अकादमिक ज्ञान के विवेचन में ही उलझी रहती थी। जब वे माण्डले की जेल (जो वर्तमान में बर्मा देश में है) में राजद्रोह के मुकदमे की छह वर्ष की सजा काट रहे थे तब उन्हें ग्राम कळम्ब, जिला यवतमाल, महाराष्ट्र की एक पिछड़ी धनगर (गड़रिया) जाति के गरीब किसान का पत्र मिला जिसमें उस गरीब किसान ने अपनी व्यथा लिखते हुए बताया था कि वह निचली अदालत से मुकदमा हारने पर अपनी जमीन खो रहा है और वह बॉम्बे उच्च न्यायालय में अपील करना चाहता है। यह व्यक्ति वैसे तो लोकमान्य के लिए अपरिचित ही था लेकिन वह इस सन्दर्भ में पूरी दुनिया में सिर्फ लोकमान्य पर ही भरोसा रखने के कारण कानूनी सलाह चाह रहा था। उसके कागज पत्रों का अध्ययन कर तिलक जी ने उसे उचित सलाह लिखकर भेजी थी।

सोचने की बात यह है कि सारा देश जानता है कि लोकमान्य तिलक ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'गीता रहस्य' इसी कारावास में लिखी थी। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने एक गरीब किसान के लिए कानूनी सलाह भी हजारों मील दूर से भारत के दूरदराज में लिखकर भेजी थी। सचमुच में लोकमान्य ही उन सभी जन के लिए कानून स्वरूप ही थे। ऐसे विलक्षण कानूनविद् की पुण्यतिथि पर सारा देश श्रद्धा से नत है। ▪

क्रांतिवीर मदनलाल ढींगरा

लंदन में ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वे लोग ढींगरा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। मदनलाल उच्च शिक्षण हेतु लंदन में रहते थे। उस समय सावरकरजी भी वहीं पर थे, उस समय सावरकर जी को एक भोजन प्रसंग में रंगभेद का अनुभव हुआ।

उन्हें अंग्रेजों द्वारा उनके साथ न बैठ अलग टेबल पर बैठने को कहा गया। ज्वलंत देशाभिमान और अत्यंत स्वाभिमानी सावरकरजी को यह बात सहन नहीं हुई और वह वहां से बाहर चले गए।

मदनलाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी सेनानी थे। वे इंग्लैण्ड में अध्ययन कर रहे थे। जहां उन्होने कर्जन वायली नामक एक ब्रिटिश अधिकारी की गोली मारकर हत्या कर दी थी। यह घटना बीसवीं शताब्दी में भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन की कुछेक प्रथम घटनाओं में से एक है। मदललाल ढींगरा का जन्म सन् 1883 में पंजाब में एक संपन्न हिंदू परिवार में हुआ था। उनके पिता सिविल सर्जन थे और अंग्रेजी रंग में पूरे रंगे हुए थे, परंतु माताजी अत्यन्त धार्मिक एवं भारतीय संस्कारों से परिपूर्ण महिला थीं। उनका परिवार अंग्रेजों का विश्वास पात्र था। जब मदनलाल को भारतीय स्वतंत्रता संबंधी क्रान्ति के आरोप में लाहौर के एक विद्यालय से निकाल दिया गया, तो परिवार ने मदनलाल से नाता तोड़ लिया। मदनलाल को एक क्लर्क रूप में, एक तांगा-चालक के रूप में और एक कारखाने में श्रमिक के रूप में काम करना पड़ा। वहां उन्होंने एक यूनियन (संघ) बनाने का प्रयास किया, परंतु वहां से भी उन्हें निकाल दिया गया। कुछ दिन उन्होंने मुम्बई में भी काम किया। अपने बड़े भाई से विचार विमर्श कर वे सन् 1906 में उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड गये जहां युनिवर्सिटी कालेज लंदन में यांत्रिक प्रौद्योगिकी (Mechanical Engineering) में प्रवेश लिया । इसके लिए उन्हें उनके बड़े भाई एवं इंग्लैंड के कुछ राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओं से आर्थिक सहायता मिली। लंदन में ढींगरा भारत के प्रख्यात राष्ट्रवादी विनायक दामोदर सावरकर एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा के संपर्क में आए। वे लोग ढींगरा की प्रचण्ड देशभक्ति से बहुत प्रभावित हुए। मदनलाल उच्च शिक्षण हेतु लंदन में रहते थे। उस समय सावरकरजी भी वहीं पर थे, उस समय सावरकर जी को एक भोजन प्रसंग में रंगभेद का अनुभव हुआ। उन्हें अंग्रेजों द्वारा उनके साथ न बैठ अलग टेबल पर बैठने को कहा गया। ज्वलंत देशाभिमान और अत्यंत स्वाभिमानी सावरकरजी को यह बात सहन नहीं हुई और वह वहां से बाहर चले गए। उस समय मदनलाल और उनका एक दोस्त वहां उपस्थित था। मदनलाल जी ने सावरकरजी को समझाने का प्रयत्न किया कि इस प्रकार के वर्तन की उन्हें आदत डालनी होगी। मदनलाल और सावरकर, यह इनकी प्रथम भेंट थी। भारत को स्वतंत्रता मिलने के लिए देशभक्तों ने अनेक मार्ग ढूंढ़े। अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए क्रांतिकारी मार्ग से देशभक्तों ने टक्कर देने हेतु राष्ट्ररक्षा एवं ब्रिटिशों से मुक्तता के लिए क्रांतिकारी संगठनों का उदय हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि सावरकर ने ही मदनलाल को अभिनव भारत मंडल का सदस्य बनवाया और हथियार चलाने का प्रशिक्षण दिया। मदनलाल, इण्डिया हाउस के भी सदस्य थे, जो भारतीय विद्यार्थियों के राजनैतिक क्रियाकलापों का केंद्र था। ये लोग उस समय खुदीराम बोस, कन्नाई दत्त, सतिन्दर पाल और कांशी राम जैसे क्रान्तिकारियों को मृत्युदण्ड दिये जाने से बहुत क्रोधित थे । भारतीयों के लिए मातृभूमि को देने के लिए क्या है, तो वह स्वयं का रक्त ही है, ऐसा ढींगराजी का मानना था । मदनलालजी के विचार अत्यंत स्पष्ट थे और वह उतने ही स्पष्टता से व्यक्त किया करते थे, वे विदेशी शस्त्रास्त्रों की सहायता से दास्यता में जकड़े हुए राष्ट्र को बचाने के लिए निःशस्त्र होकर रणभूमि में उतरकर सामना करना कठिन होने के कारण उन्होंने घात लगाकर हमला किया। 01 जुलाई सन् 1909 में लंदन के नेशनल इंडियन असोसिएशन के वार्षिकोत्सव में कर्जन आने वाला है, इस गोपनीय समाचार की जानकारी मदनलाल को हुई।

01 जुलाई सन् 1909 की शाम को इण्डियन नेशनल एसोशिएशन के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए भारी संख्या में भारतीय और अंग्रेज एकत्रित हुए। जब कर्जन वायली (भारत मामलों के सेक्रेटरी आफ स्टेट के राजनीतिक सलाहकार) अपनी पत्नी के साथ सभाग्रह में घुसे, ढींगरा ने उनके चेहरे पर पांच गोलियां दागी, इसमें से चार सही निशाने पर लगीं। ढींगरा ने अपनी पिस्तौल से अपनी हत्या करनी चाही, परंतु उन्हें पकड़ लिया गया। 23 जुलाई को ढींगरा के प्रकरण की सुनवाई पुराने बेली कोर्ट में हुई। उनको मृत्युदण्ड दिया गया और 17 अगस्त सन 1909 को फांसी दे दी गयी। ▪

खुदीराम बोस

''फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दु:ख नहीं है। मेरा एक ही दु:ख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।''

ब्रिटिश शासन को भारत से उखाड़ने के लिए अंग्रेजों पर पहला बम फेंकने वाले क्रान्तिकारी खुदीराम बोस का जन्म 3 दिसम्बर, 1989 को मेदिनीपुर जिले के बहुबेनी ग्राम में हुआ। मेदिनीपुर बंगाल का एक जिला था। इनके पिता का नाम त्रैलोक्यनाथ वसु था तथा माता का नाम था श्रीमती लक्ष्मीप्रिया देवी। पिता नदझोल तहसील के तहसीलदार थे। इकलौते पुत्र होने के कारण खुदीराम बोस माता-पिता के लाड़ले बेटे थे पर 6 वर्ष की अवस्था में ही उन्हें माता-पिता का विछोह सहना पड़ा। उनका पालन पोषण बड़ी बहन अनुरूपा देवी ने माँ की तरह किया। उनके जीजा अमृतलाल जी भी उनको बहुत प्यार करते थे।

देशभक्ति का भाव बालक खुदीराम में बाल्यावस्था से ही जागृत हो गया था। गोरे, लाल मुँह वाले अंग्रेजों का भारत पर शासन करना उन्हें बिल्कुल भी नहीं सुहाता था।

'आनन्दमठ' उपन्यास के रचयिता बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय मेदिनीपुर में ही शासकीय सेवा में थे। इस उपन्यास का गीत 'वन्दे मातरम्' बड़ा लोकप्रिय हुआ। भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों को इस गीत से बड़ी प्रेरणा मिलती थी। आज भी यह राष्ट्रगीत के रूप में प्रत्येक राष्ट्रीय समारोह एवं विद्यालयों में गाया जाता है। यह वन्देमातरम् का गीत ही बालक खुदीराम का प्रेरणा स्त्रोत बना।

1905 में गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन ने भारतीयों का मनोबल गिराने के लिए बंगाल का विभाजन किया। इस विभाजन का पूरे राष्ट्र ने एक स्वर से विरोध किया। आनन्दमठ उपन्यास से प्रेरित होकर खुदीराम बोस ने भी अपने जीवन को देश की सेवा के लिए न्यौछावर करने का संकल्प लिया। अतः वे क्रान्तिकारियों के दल में सम्मिलित हो गए। इसके लिए उन्हें अनेक कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा।

क्रान्तिकारियों के साथ खुदीराम ने पिस्तौल आदि अस्त्र-शस्त्रों का प्रयोग करना सीखा। उन्होंने वन्दे मातरम् गाने तथा आनन्दमठ पढ़ने के लिए अपने साथियों को भी उत्साहित किया।

अंग्रेजों ने वन्दे मातरम् के बढ़ते प्रभाव को देखकर, वन्दे मातरम् कहने को राजद्रोह घोषित कर दिया। खुदीराम ने अंग्रेजों को नीचा दिखाने के लिए मेदिनीपुर की प्रदर्शनी में वन्दे मातरम् के पर्चे बांटे तथा नारे लगाए। यह प्रदर्शनी फरवरी 1906 में आयोजित की गई थी। पुलिस वालों ने उन्हें पकड़ना चाहा पर वे असफल रहे। बाद में उन पर एक मुकदमा चलाया गया पर छोटी उम्र होने के कारण न्यायालय ने उन्हें कोई सजा नहीं दी।

देशभक्त विपिन चन्द्र पाल ने 'वन्दे मातरम्' पत्रिका का प्रकाशन किया। श्री अरविन्द घोष इसके संपादक नियुक्त हुए। 1907 में अंग्रेज सरकार ने वन्देमातरम् पत्रिका पर राजद्रोह का अभियोग लगाया। भारतीय युवकों ने इसका प्रबल विरोध किया। 26 अगस्त 1907 के दिन हजारों युवक कोर्ट के सामने इस अभियोग का विरोध प्रकट कर रहे थे। इस पर क्रुद्ध होकर अंग्रेज सिपाही एक युवक को अकारण पीटने लगे। 15 वर्षीय सुशील कुमार सेन ने जब इसका विरोध किया तो अंग्रेज अधिकारी उसको डाँटने लगा। बस तब क्या था। सुशील कुमार ने अंग्रेज अधिकारी की नाक पर घूँसा मारा और उन्हें न्यायाधीश किंग्जफोर्ड ने 15 कोड़े मारने की सजा दी।

क्रान्तिकारी दल ने किंग्जफोर्ड से बदला लेने का निश्चय किया। 1908 में उसकी हत्या की योजना बनाई गई। खुदीराम ने यह दायित्व अपने ऊपर लिया। दल प्रमुख ने खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी को पिस्तौल और कुछ पैसे देकर मुजफ्फरपुर की ओर रवाना किया। किंग्जफोर्ड उन दिनों वहीं सेशन जज के पद पर नियुक्त था। प्रफुल्ल कुमार चाकी रंगपुर ग्राम का रहने वाला था। वह खुदीराम की ही आयुवर्ग का तथा उसी के समान देशभक्त था। 30 अप्रैल 1908 की रात मुजफ्फरपुर के यूरोपियन क्लब के समीप किंग्जफोर्ड की घोड़ागाड़ी पर खुदीराम ने बम फेंका। पर किंग्जफोर्ड निशाना चूक जाने के कारण बच गया। उसके अतिथि कैनेडी की पत्नी, लड़की और नौकर मारे गए।

बम फेंककर खुदीराम 25 मील तक भागते चले गए पर आखिरकार वेनी रेलवे स्टेशन के पास लखा नामक स्थान पर पकड़े गए। प्रफुल्ल कुमार चाकी ने पुलिस द्वारा घेरे जाने पर स्वयं को पिस्तौल से गोली मारकर राष्ट्रहित में अपनी बलि दे दी। अंग्रेज सिपाही उसका सिर काटकर मुजफ्फरपुर ले गए। खुदीराम को मृत्युदण्ड देने का आदेश दिया गया। जब उनसे बयान देने को कहा गया तो उन्होंने कहा-'राजपूत वीरों की तरह मैं देश की स्वाधीनता के लिए मरना चाहता हूँ। फाँसी के विचार से मुझे जरा भी दुःख नहीं है। मेरा एक ही दुःख है कि किंग्जफोर्ड को उसके अपराध का दण्ड नहीं मिला।'

11 अगस्त 1908 को प्रातः 6 बजे खुदीराम बोस को फाँसी दी गई। मृत्यु के समय उनके हाथ में श्रीमदभगवदगीता थी और चेहरे पर बलिदानी की मोहक मुस्कान। फाँसी के समय इस वीर किशोर की आयु कुल अठारह वर्ष आठ महीने की थी।

मातृभूमि के प्रति खुदीराम का भाव था-

तुमि विद्या, तुमि धर्म, तुमि हृदय, तुमि मर्म
त्वं हि प्राणा: शरीरे, बाहुते तुमि माँ शक्ति
हृदये तुमि माँ भक्ति, तोमारइ प्रतिमा गड़ि,
मंदिरे मंदिरे, वन्देमातरम्। ▪

वीरांगना रानी अवंती बाई

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं।

रानी अवंतीबाई लोधी भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली वीरांगना थीं। 1857 की क्रांति में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई लोधी रेवांचल में मुक्ति आंदोलन की सूत्रधार थीं। ये लोधी समाज की महावीरांगना थीं। 1857 के मुक्ति आंदोलन में इस राज्य की अहम भूमिका थी, जिससे इतिहास जगत अनभिज्ञ है। 1817 से 1851 तक रामगढ़ राज्य के शासक लक्ष्मण सिंह थे। उनके निधन के बाद राजकुमार विक्रमादित्य सिंह ने राजगद्दी संभाली। उनका विवाह बाल्यावस्था में ही मनकेहणी के जमींदार राव जुझार सिंह की कन्या अवंती बाई से हुआ। विक्रमादित्य सिंह बचपन से ही वीतरागी प्रवृत्ति के थे और पूजा-पाठ एवं धार्मिक अनुष्ठानों में लगे रहते। अतः राज्य संचालन का काम उनकी पत्नी रानी अवंतीबाई ही करती रहीं। उनके दो पुत्र हुए, अमान सिंह और शेर सिंह। अंग्रेजों ने तब तक भारत के अनेक भागों में अपने पैर जमा लिए थे।

रामगढ़ के राजा विक्रमाजीत सिंह को विक्षिप्त तथा अमान सिंह और शेर सिंह को नाबालिग घोषित कर रामगढ़ राज्य को हड़पने की दृष्टि से अंग्रेज शासकों ने 'कोर्ट ऑफ वाड्र्स' की कार्यवाही की एवं राज्य के प्रशासन के लिए सरबराहकार नियुक्त कर शेख मोहम्मद तथा मोहम्मद अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा। जिससे रामगढ़ रियासत 'कोर्ट ऑफ वाड्र्स' के कब्जे में चली गयी। अंग्रेज शासकों की इस हड़प नीति का परिणाम भी रानी जानती थी, फिर भी दोनों सरबराहकारों को उन्होंने रामगढ़ से बाहर निकाल दिया। 1855 ई. में राजा विक्रमादित्य सिंह की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। अब नाबालिग पुत्रों की संरक्षिका के रूप में राज्य शक्ति रानी के हाथों आ गयी। रानी ने राज्य के कृषकों को अंग्रेजों के निर्देशों को न मानने का आदेश दिया, इस सुधार कार्य से रानी की लोकप्रियता बढ़ी।

1857 ईस्वी में सागर एवं नर्मदा परिक्षेत्र के निर्माण के साथ अंग्रेजों की शक्ति में वृद्धि हुई। अब अंग्रेजों को रोक पाना किसी एक राजा या तालुकेदार के वश का नहीं रहा। रानी ने राज्य के आस-पास के राजाओं, परगनादारों, जमींदारों और बड़े मालगुजारों का विशाल सम्मेलन रामगढ़ में आयोजित किया, जिसकी अध्यक्षता गढ़ पुरवा के राजा शंकरशाह ने की। गुप्त सम्मेलन में लिए गए निर्णय के अनुसार प्रचार का दायित्व रानी पर था। एक पत्र और दो काली चूड़ियों की एक पुड़िया बनाकर प्रसाद के रूप में वितरित करना। पत्र में लिखा गया, 'अंग्रेजों से संघर्ष के लिए तैयार रहो या चूड़ियां पहनकर घर में बैठो।' पत्र सौहार्द और एकजुटता का प्रतीक था तो चूड़ियां पुरुषार्थ जागृत करने का सशक्त माध्यम बनी। पुड़िया लेने का अर्थ था अंग्रेजों के विरुद्ध क्रांति में अपना समर्थन देना।

देश के कुछ क्षेत्रों में क्रांति का शुभारंभ हो चुका था। 1857 में 52वीं देशी पैदल सेना जबलपुर सैनिक केन्द्र की सबसे बड़ी शक्ति थी। 18 जून को इस सेना के एक सिपाही ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर घातक हमला किया। जुलाई 1857 में मण्डला के परगनादार उमराव सिंह ठाकुर ने कर देने से इनकार कर दिया और इस बात का प्रचार करने लगा कि अंग्रेजों का राज्य समाप्त हो गया। अंग्रेज, विद्रोहियों को डाकू और लुटेरे कहते थे। मण्डला के डिप्टी कमिश्नर वाडिंग्टन ने मेजर इस्काइन से सेना की मांग की। पूरे महाकौशल क्षेत्र में विद्रोहियों की हलचलें बढ़ गईं। गुप्त सभाएं और प्रसाद की पुड़ियों का वितरण चलता रहा। इस बीच राजा शंकरशाह और राजकुमार रघुनाथ शाह को दिए गए मृत्युदण्ड से अंग्रेजों की नृशंसता की व्यापक प्रतिक्रिया हुई। वे इस क्षेत्र के राज्यवंश के प्रतीक थे। इसकी प्रथम प्रतिक्रिया रामगढ़ में हुई। रामगढ़ के सेनापति ने भुआ बिछिया थाना में चढ़ाई कर दी। जिससे थाने के सिपाही थाना छोड़कर भाग गए और विद्रोहियों ने थाने पर अधिकार कर लिया। रानी के सिपाहियों ने घुघरी पर चढ़ाई कर उस पर अपना अधिकार कर लिया और वहां के तालुकेदार धन सिंह की सुरक्षा के लिए उमराव सिंह को जिम्मेदारी सौंपी।

मण्डला नगर को छोड़कर पूरा जिला स्वतंत्र हो चुका था। अवंतीबाई लोधी ने मण्डला विजय के लिए सिपाहियों सहित प्रस्थान किया। रानी की सूचना प्राप्त होने पर शहपुरा और मुकास के जमींदार भी मण्डला की और रवाना हुए। मण्डला पहुंचने के पूर्व खड़देवरा के सिपाही भी रानी के सिपाहियों से मिल गए। खैरी के पास अंग्रेज सिपाहियों के साथ अवंती बाई का युद्ध हुआ। वाडिंग्टन पूरी शक्ति लगाने के बाद भी कुछ न कर सका और मण्डला छोड़ सिवनी की ओर भाग गया। इस प्रकार पूरा मण्डला जिला एवं रामगढ़ राज्य स्वतंत्र हो गया।

अंग्रेजी सेनाएं रामगढ़ विजय के बाद देवहारगढ़ की ओर रवाना हुईं। यहां रानी की सहायता के लिए शहपुरा एवं शाहपुर के जमींदार भी पहुंच चुके थे। देवहारगढ़ को अंग्रेज सैनिकों ने चारों ओर से घेर लिया। क्रांतिकारियों और अंग्रेजी सेना के मध्य निर्णायक युद्ध प्रारंभ हुआ। कई दिनों तक दोनों के मध्य युद्ध चलता रहा। रानी भी घायल हो चुकी थी। सैनिकों की संख्या कम होती जा रही थी। आगे युद्ध करना और स्वयं को सुरक्षित रखना कठिन हो गया। 20 मार्च 1858 रानी ने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए गिरधारी नाई की कटार छीनकर घुनसी नाले के निकट आत्मोत्सर्ग कर दिया। रानी का बलिदान हो गया, फिर भी मुक्ति आंदोलन में ठहराव नहीं आया। यह क्रांति मात्र रामगढ़ की रानी अवंतीबाई की नहीं थी, अपितु संपूर्ण क्षेत्र की थी, क्षेत्र की प्रजा की थी। ▪

कांग्रेस बनाम जनसंघ

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद ध्येयविहीन कांग्रेस और उसके कार्यकर्ताओं के समक्ष यह समस्या थी कि अब कौन सी वस्तु शेष है, जिसके लिए अपनी सेवाएं समर्पित की जाएं? कांग्रेस की इस ध्येयविहीनता को महात्मा गांधी ने समझा था और इसलिए वे कांग्रेस को समाप्त कर देने पर बराबर जोर देते थे, किंतु कांग्रेस के अन्य नेताओं ने कांग्रेस को अपने स्वार्थ का साधन बना लिया और उसे भंग नहीं किया।

उद्देश्य समाप्त होने पर संस्था निर्जीव हो जाती है। कांग्रेस का काम खत्म हो गया, अब उसे समाप्त कर देना चाहिए था। परंतु नेताओं ने इसे भी नहीं माना। फलतः मृत कांग्रेस के शव को पंडित नेहरू लिए घूम रहे हैं और उसे जिलाने का असफल प्रयत्न कर रहे हैं। कांग्रेस का शव अधिक सड़ जाने से गल-गल कर गिरा। फलतः अनेक पार्टियों का जन्म हुआ, जिसमें पहले सोशलिस्टों का नंबर है। ये सब पार्टियाँ केवल विरोध के लिए बनी हैं, जिनका कोई आधार नहीं। हमें तो अपनी समस्याओं को हल करने के लिए एक मौलिक आधार को लेना है। हम अनुरोध करने के लिए हैं, विरोध करने के लिए नहीं। जनसंघ केवल कांग्रेस के विरोध के लिए नहीं है। देश को सुखी तथा वैभवशाली बनाने का कार्य इसके सामने प्रमुख है।

कांग्रेस की ध्येयविहीनता ने देश में निराशा का वातावरण ला दिया। लोग अनुभव करने लगे कि उनका धर्म मिट रहा है, संस्कृति मिट रही है, जीवनोपयोगी वस्तुएं अन्न-वस्त्र अल्प हो रहे हैं। अतः जन-मन में निराशा का प्रादुर्भाव होना स्वाभाविक था। जनसंघ का उदय इस निराशावाद के वातावरण को छिन्न-भिन्न कर देश में आशा और स्फूर्ति का संचार करने के लिए हुआ है।

स्वतंत्रता की लड़ाई मे कांग्रेस केवल पेशवा थी और 35 करोड़ जनता उसके साथ उस लड़ाई में संलग्न थी। नेता होने के नाते उसे स्वतंत्रता प्राप्ति का यश प्राप्त हुआ। कांग्रेस के नेता आज यह कह रहे हैं कि स्वतंत्रता हमने दिलवाई है। उन लोगों से पूछना चाहिए कि योगी अरविंद जैसे लोग तथा जिन्होंने अंडमान में अपना जीवन व्यतीत किया और हंसते हुए स्वतंत्रता के लिए ही अपने जीवन की कुर्बानी की, क्या वे कांग्रेस के झंडे के नीचे आए थे? वासुदेव बलवंत फड़के कांग्रेस से बाहर ही स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहे थे। रासबिहारी बोस, भगतसिंह तथा वीर सावरकर क्या कांग्रेसी थे? सुभाष चंद्र बोस ने भी जो महान कार्य किए थे, वे भी कांग्रेस से अलग होने पर ही। परंतु इस सबका श्रेय कांग्रेस अपने ऊपर ले रही है। सच्ची बात तो यह है कि भारत की 40 करोड़ जनता ने स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और हम सबने इस युद्ध में भाग लिया।

आज सभी प्रकार के आदर्शों से दूर होकर कांग्रेस उस समय के नेतृत्व की आड़ लेकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रही है। उस स्वार्थ सिद्धि के लिए योग्यता-अयोग्यता इत्यादि का कुछ विचार नहीं रखा जा रहा है। अभी हाल में मंडी के राजा को ब्राजील का राजदूत इसलिए बना दिया गया, क्योंकि उन्होंने राजकुमारी अमृत कौर के विरोध से अपना नाम वापस ले लिया है। पता नहीं उनमें उस पद की कहाँ तक योग्यता है।

उसी प्रकार स्वार्थ की सिद्धि के लिए ही कांग्रेस सरकार ने कंट्रोल लगा रखा है। यदि कंट्रोल जनता की भलाई के लिए हो तो ठीक भी है, किंतु यहाँ पर वह इसलिए है कि उसके कारण व्यापारी और पूंजीपति कांग्रेस के अँगूठे के नीचे रहते हैं। वोट लेने के समय लोगों को धमकियाँ दी जाती हैं कि उनके लाइसेंस रद्द कर दिए जाएंगे। उनको याद दिलाया जाता है कि उन्हें कितने परमिट दिए गए हैं। इस प्रकार जनता को दुःख देने के लिए कांग्रेस और पूंजीपति मिल जाते हैं। अभी कुछ दिन पूर्व केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए कांग्रेस सरकार ने 287 मन की चीनी मनमाने दामों में मिल मालिकों को बेचने की आज्ञा इसलिए दे दी थी कि उन्होंने कांग्रेस फंड में कुछ चंदा दे दिया था। कांग्रेस ने देश में तीन भयंकर भूलें की हैं। पहली, बिना किसी आदर्श के कार्य किया है, दूसरी, केवल अपनी पार्टी की स्वार्थ

सिद्धि की है, तीसरी, यदि आदर्श सम्मुख रखा भी तो वह विदेशी। उदाहरण स्वरूप यदि आज हमारे देश में अन्न की कमी है तो उसके लिए हमने विदेशों से ट्रैक्टर मंगाए किंतु यहां चलेंगे कैसे? मकानों की कमी होने पर हमने सीमेंट, लोहा और ईंट जनता को देने के बजाय मकान बनाने की फैक्टरी स्थापित की और करोड़ों रुपए फूंक दिए।

भारतीय जनसंघ का उद्देश्य भारतीय जीवन के लिए अत्यंत पवित्र और स्फूर्तिदायक है। ये सिद्धांत और आदर्श नए नहीं हैं। वे इतने पुराने हैं कि जबसे मानव मानव को पहचानने लगा, प्रकृति का प्रादुर्भाव इस भूमि पर हुआ तथा भारत भूमि को पहचानने के साथ राष्ट्रीयता का उदय हुआ। केवल एक राष्ट्रीयता की भावना को लेकर, जिसको 'एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति' कहा गया है, जनसंघ खड़ा हुआ है। इसीलिए देश के कोने-कोने में जहां जनसंघ गया है, जनता में उसका आदर हुआ है।

भारतीय जनसंघ का जन्म देश के सम्मुख एक स्वदेशीय आदर्शवाद रखने के निमित्त हुआ और उसका आधार कुछ मर्यादाओं पर स्थिर है। प्रथम तो जनसंघ भौगोलिक मर्यादा को मानता है और यह कहता है कि देश का विभाजन गलत है। यह ध्यान रखना चाहिए कि यह कहना भावनाओं को उभारना नहीं है, वरन कुछ तथ्यों को तर्क की कसौटी पर कसना है। आज हमारे देश में अन्न की कमी है और करोड़ों रुपयों का अन्न हमें बाहर से मंगाना पड़ता है। पाकिस्तान में वह बहुतायत से है। दूसरी ओर पाकिस्तान के पास कोयला, लोहा और कपड़ा नहीं है, जिसके लिए उसको परेशानी होती है। पूर्वी बंगाल में जूट सड़ रहा है, पश्चिम में जूट मिलें बंद हैं। पाकिस्तान में रुई बहुतायत है, हम उसे तेज दामों पर मिस्र या अमरीका से खरीद रहे हैं। यदि दोनों देश एक हो जाएँ तो आर्थिक दृष्टि से हम फिर स्वावलंबी बन सकते हैं और हमारी सारी समस्याएँ हल हो सकती हैं। सुरक्षा की दृष्टि से हम अपने बजट का 55 प्रतिशत और पाकिस्तान 60 प्रतिशत केवल सेना पर व्यय कर रहे हैं, जिससे दोनों देशों की आर्थिक अवस्था पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही साथ इस विभाजन के ही कारण हमें ब्रिटिश राष्ट्रमंडल में रहकर अंग्रेजों की गुलामी करनी पड़ रही है, क्योंकि दोनों को यह डर है कि एक के द्वारा उसका साथ छोड़ देने पर अंग्रेज दूसरे की अधिक सहायता करेगा।

सांप्रदायिक समस्या का भी हल इस विभाजन से नहीं हुआ, क्योंकि यदि कल 35 करोड़ में 10 करोड़ मुसलमान भारत में थे तो आज चार करोड़ रह गए हैं, किंतु वह समस्या हल नहीं हुई। दूसरी ओर पाकिस्तान में रह गए हिंदुओं पर अत्याचार और उनका निष्कासन हमारी आर्थिक तथा राजनीतिक दशा को हर समय चिंता युक्त बनाए रखते हैं।

कश्मीर समस्या का भी सबसे सरल हल विभाजन का अंत है। इस प्रकार सब दृष्टियों से अखंडता अनिवार्य है। किंतु लोग कहते हैं कि यह बेमानी है। उत्तरी तथा दक्षिण कोरिया, मिस्र तथा सूडान और आयरलैंड इत्यादि की एकता की बात तथा उसका समर्थन करने वाले लोग भारत तथा पाकिस्तान की एकता को सुनकर केवल इसलिए बौखला जाते हैं कि उससे उनके स्वार्थों का हनन होता है। आठ साल पूर्व पाकिस्तान का बनना बेहूदा बात थी, किंतु वह बन गया। आज अखंडता 'बेहूदा' है, कल उन्हीं लोगों के सम्मुख वह भी हो जाएगा।

अखंड भारत की मांग हमारी नैतिक मांग है, क्योंकि श्री जिन्ना के अदला-बदली के प्रस्ताव को न मानकर अल्पसंख्यकों की रक्षा करने की शर्त हिंदुस्थान और पाकिस्तान दोनों के लिए कांग्रेस ने रखी थी। उस समय महात्माजी ने कहा था कि इस शर्त के पूरे न होने पर इनमें से कोई भी देश की अखंडता की मांग कर सकता है।

हमने अपनी शर्त पूरी कर दी है और अपना अधिकार प्राप्त कर लिया है। चार करोड़ मुसलमानों की रक्षा करने के लिए हिंदुस्थान का प्रत्येक दल तैयार है परंतु पाकिस्तान ने इस शर्त को पूरा नहीं किया। पूर्वी बंगाल के हिंदुओं पर किया गया बर्बर अत्याचार ही प्रमाण के लिए पर्याप्त है। पंडित नेहरू इसके लिए आज क्या कर रहे हैं? सरदार पटेल तो सांप्रदायिक नहीं थे, उन्होंने भी कहा था निर्वासितों को रखने के लिए आधा बंगाल पाकिस्तान से मांगा जाएगा। आज इस प्रश्न को नेहरूजी क्यों नहीं रखते?

किंतु यह अखंडता किसी आक्रमण से नहीं प्राप्त होगी। यह समस्या का ठीक हल नहीं है। वह तभी होगा जब यहां का हिंदू और यहाँ का मुसलमान इन बातों को समझ लेगा कि उसका भला इसी में है और यह विचार दिनों दिन जोर पकड़ते-पकड़ते एक दिन यह संभव हो जाएगा।

विचारों के ही कारण भारत बँटा है, विचारों से ही यह एक होगा। हमारी दूसरी मर्यादा एक राष्ट्र में विश्वास है। हम मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद को नहीं मानते। हमारा कहना यह है कि यदि फारस, चीन और तुर्की का मुसलमान अपने धर्म को मानता हुआ अलग-अलग राष्ट्रीयता मानता है तो भारत का मुसलमान ऐसा क्यों नहीं कर सकता? उन देशों में लोग अपने देश की भाषा और संस्कृति को मानते हैं। यहाँ भी मुसलमानों को इस देश की संस्कृति और राष्ट्रभाषा हिंदी को मानना चाहिए। ▪

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी की जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण व पौधरोपण किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह जी ने भगवान जगन्नाथ रथ यात्रा में शामिल होकर पूजन किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं क्षेत्रीय संगठन महामंत्री श्री अजय जामवाल जी ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत पौधरोपण किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लाड़ली बहना योजना अंतर्गत 1.25 करोड़ बहनों को 1835 करोड़ रुपए की राशि अंतरित की।

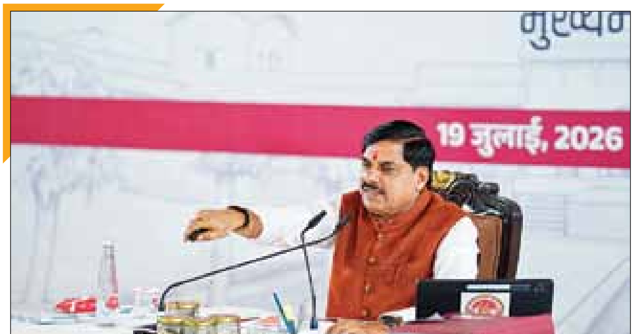

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की राशि सिंगल क्लिक से हितग्राहियों के खाते में वितरित की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अत्याधुनिक अडानी डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग प्लांट का शिलान्यास किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल जी ने पिछड़ा वर्ग मोर्चा की कामकाजी बैठक को संबोधित किया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने मां पीतांबरा शक्ति पीठ में पूजन अर्चन किया।

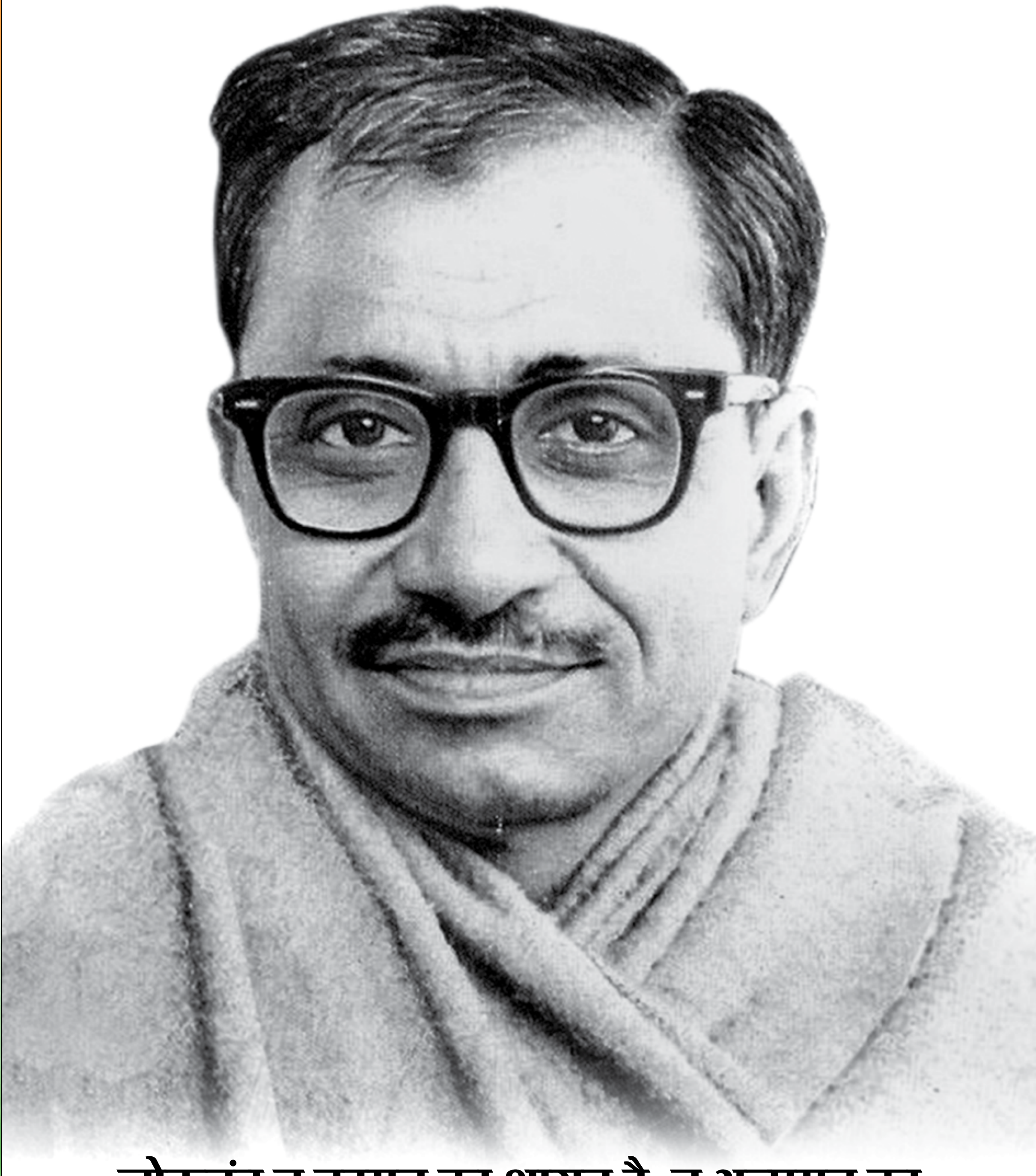

लोकतंत्र न बहुमत का शासन है, न अल्पमत का वह जनता की 'सामान्य इच्छा' का शासन है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय